F5J8X5

भाषा प्रवाह

भाग - ५

पाँचवीं कक्षा के लिए हिन्दी की पाठ्यपुस्तक

जम्मू–कश्मीर विद्यालयी शिक्षा बोर्ड

Jammu and Kashmir Board of School Education

प्रथम संस्करण
दिसम्बर 2023-22.5T (Govt. Supply)

Published by
Jammu and Kashmir Board of School Education, Srinagar/Jammu.

©Copyright Reserved
All rights reserved. No part of this publication may be reproduced, stored in any form by any means, electronic, mechanical, photocopying or otherwise, without first obtaining written permission of the copyright owner.

Disclaimer
Every care has been taken by the compilers and publishers to give correct, complete and updated information. In case there is any omission, printing mistakes, or any other error which might have crept in inadvertently, neither the compiler nor publisher or any of the distributors shall take any legal responsibility.

Printed at : New Print India, 8/4B, Site-IV Industrial Area Sahibabad, Ghaziabad (U.P.)

आमुख

हमारे देश में बच्चों के सर्वांगीण विकास को पोषित करने की एक समृद्ध परंपरा रही है। इसमें परिवार, रिश्तेदार, समुदाय, समाज एवं सीखने के औपचारिक संस्थानों की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। बच्चों के जीवन के आरंभिक वर्षों में संचरित संस्कारों के विकास को समाहित करते इस समग्र दृष्टिकोण का उनके विकास, स्वास्थ्य, व्यवहार और संज्ञानात्मक क्षमताओं के प्रत्येक पक्ष पर आजीवन एक महत्वपूर्ण व सकारात्मक प्रभाव पड़ता है।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 (N.E.P. 2020) ने 5+3+3+4 पाठ्यचर्या एवं शिक्षाशास्त्रीय संरचना की परिकल्पना की है, जो आरंभिक शिक्षा पर समुचित ध्यान देती है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 एक विशिष्ट राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा की संस्तुति करती है जो न केवल उच्च गुणवत्ता वाली शिक्षा प्रदान करने में अपितु विद्यालयी शिक्षा के अगले चरणों में इसकी गतिशीलता सुनिश्चित करने के लिए भी संपूर्ण शिक्षा व्यवस्था का मार्ग प्रशस्त करने में सहायक होगी।

प्रस्तुत पाठ्यपुस्तक **'भाषा–प्रवाह' भाग 5** की संरचना राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2023 के अनुरूप की गई है। इसमें बच्चों के सतत एवं समग्र विकास को ध्यान में रखते हुए ऐसी पाठ्यसामग्री का चयन किया गया है जिसमें अनुभव से सीखना, सांस्कृतिक समावेश, भारतीयता एवं भारतीय ज्ञान परंपरा, पंचकोशीय विकास, मूल्य शिक्षा, वैश्विक चिंतन, एवं स्थानीय संदर्भों का समावेश किया गया है। इस पाठ्यपुस्तक को बच्चों के लिए आकर्षक एवं आनंददायी बनाने का पूरा प्रयास किया गया है। शिक्षण प्रक्रिया में पाठ्यपुस्तक केवल एक माध्यम है, बच्चों में उन अनंत क्षमताओं को विकसित करने का, जिनके बीज उनमें पहले से ही विद्यमान हैं। अतः शिक्षक वर्ग से आग्रह है कि वे पाठ्यपुस्तक का उपयोग करते हुए और स्वतंत्र रूप से भी बच्चों को कक्षा–कक्ष के इर्द–गिर्द फैली अनंत प्रकृति से अवगत कराएँ। उन्हें स्वयं खोज–बीन करके सीखने के लिए प्रोत्साहित करें। उन्हें अपनी बात कहने का अवसर दें। सही–गलत का निर्णय न लेते हुए बच्चों के साथ एक संवाद में शामिल हों।

भाषा हमारे जीवन का अभिन्न अंग है जो संप्रेषण के साथ–साथ सोचने समझने, प्रश्न पूछने आदि में सहायक है। रोचक बात यह भी है कि जितना अधिक भाषा का प्रयोग विभिन्न कार्यों के लिए होता है, उतनी ही तेजी से हमारी भाषा का विकास भी होता है। अतः इस पुस्तक में बातचीत करने, सुनकर कुछ

करने, कहानी और कविताओं का आनंद लेने, नए शब्दों की पहचान के साथ खेलने, कला एवं संगीत से जुड़ी गतिविधियों में भाग लेने के अनेक अवसर अलग–अलग संदर्भों में दिए गए हैं।

जम्मू कश्मीर विद्यालयी शिक्षा बोर्ड का मुख्य उद्देश्य परीक्षाओं का आयोजन करने के साथ–साथ शिक्षा में गुणवत्ता लाना भी है। बोर्ड **'भाषा–प्रवाह' भाग 5** की पाठ्यसामग्री विकसित करने के लिए पाठ्यपुस्तक निर्माण समिति द्वारा किए गए कठोर परिश्रम की सराहना करता है। मैं समिति के सभी सदस्यों को उत्कृष्ट रूप से इस कार्य को संपन्न करने के लिए साधुवाद देता हूँ। इस पाठ्यपुस्तक के निर्माण में बोर्ड के अकादमिक विभाग का सहयोग अविस्मरणीय है। अतः उनके प्रति मैं अपार कृतज्ञता ज्ञापित करता हूँ।

'भाषा–प्रवाह' भाग 5 नन्हें–मुन्ने नौनिहालों के हाथों में सौंपते हुए मुझे अपार प्रसन्नता हो रही है। जम्मू–कश्मीर विद्यालयी शिक्षा बोर्ड अपने प्रकाशनों को सतत स्तरीय एवं परिष्कृत करने के लिए सदा प्रतिबद्ध है। पुस्तक के अगले संस्करण हेतु आपके महत्वपूर्ण सुझाव एवं टिप्पणियाँ आमंत्रित हैं।

प्रो. (डॉ.) परीक्षित सिंह मन्हास
अध्यक्ष
जम्मू कश्मीर विद्यालयी शिक्षा बोर्ड

पुस्तक परिचय

प्यारे बच्चों,

आप सब अब अपनी प्राथमिक शिक्षा के अन्तिम स्तर में पहुँच गए हैं। अगले वर्ष आपका प्रवेश माध्यमिक स्तर में होगा। आशा है कि हिन्दी भाषा का स्वरूप, उसके नियम, उच्चारण आदि आरम्भिक बातों को अब आप अच्छे से जान गए हैं। अभी तक हमने भाषा की जब भी बात की तो उसे एक साधन की तरह देखा। भाषा एक ऐसा साधन है जिससे हम सम्पर्क स्थापित कर सकते हैं। अपने विचार सांझा कर सकते हैं, दूसरों के विचार जान सकते हैं आदि। परंतु अब हमें भाषा के स्वरूप को थोडा गहराई से समझना होगा। किसी भी भाषा को केवल इसीलिए नहीं सीखा जाता कि उस के द्वारा सम्पर्क स्थापित किया जा सके अपितु इसलिए भी सीखा जाता है कि उस भाषा में लिखे गए साहित्य का भी अध्ययन किया जा सके। उस भाषा में लिखी गई सुंदर–सुंदर कविताओं और कहानियों का भी आनन्द लिया जा सके। कितना रोमांचक हो यदि तुम अपने मित्रों के साथ बैठकर आज से दो सौ वर्ष पहले के किसी कवि की रचना को पढ़ो। यह अपने आप में एक सुखद अहसास है और ये सारा आनन्द इसीलिए आ पाया क्योंकि आपने एक भाषा को सीखा। कहने का अभिप्राय यह है कि अब आप हिन्दी भाषा के साहित्य की ओर धीरे धीरे बढ़ रहे हैं।

अनन्त शुभकामनाएँ

पाठ्यपुस्तक निर्माण समिति

सहयोग

डॉ. राज जम्वाल, सहायक प्राध्यापिका, राजकीय महाविद्यालय, आर.एस. पुरा, जम्मू।

श्री उदय प्रकाश सिंह, वरिष्ठ व्याख्याता, राजकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय, खरोट, कठुआ।

श्रीमती कुसुम गुप्ता, वरिष्ठ व्याख्याता, राजकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय जुलाका मुहल्ला, जम्मू।

डॉ. वन्दना शर्मा, व्याख्याता, राजकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय मण्डाल, जम्मू।

डॉ. रजनी पीर, सेवा निवृत्त अध्यापिका।

श्रीमती इन्दु लेखा, अध्यापिका, राजकीय माध्यमिक विद्यालय बुद्धि, कठुआ।

श्रीमती समता डोगरा, अध्यापिका, मॉडल अकादमी, बी.सी. रोड, जम्मू।

समीक्षा समिति

डॉ. अजय कुमार सिंह, प्रभारी निदेशक, तुलनात्मक धर्म एवं सभ्यता अध्ययन केंद्र, केंद्रीय विश्वविद्यालय, जम्मू।

डॉ. सीमा सूदन, सह प्राध्यापक, राजकीय महाविद्यालय खौड़, जम्मू।

डॉ. प्रवीण कुमारी, सहायक प्राध्यापक, राजकीय महिला महाविद्यालय परेड, जम्मू।

श्रीमती सीमा कुमारी, सहायक प्राध्यापक, राजकीय महाविद्यालय अखनूर, जम्मू।

श्री देवेन्द्र सिंह, वरिष्ठ व्याख्याता, राजकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय तलूर, साम्बा।

डॉ. सुनील कुमार, व्याख्याता (संविदा), राजकीय महिला महाविद्यालय गांधीनगर, जम्मू।

सदस्य समन्वयक

डॉ यासिर हमीद सिरवाल, उपनिदेशक अकादमिक, जम्मू–कश्मीर विद्यालयी शिक्षा बोर्ड, जम्मू संभाग।

श्री चन्द्र कुमार शर्मा, अकादमिक अधिकारी, जम्मू कश्मीर विद्यालयी शिक्षा बोर्ड, जम्मू संभाग।

सुश्री सईद काशिफ हाशमी, अकादमिक अधिकारी, जम्मू–कश्मीर विद्यालयी शिक्षा बोर्ड, जम्मू संभाग।

आभार

मानव मन के भावों की अभिव्यक्ति ही भाषा कहलाती है। सृष्टि के आदिकाल से ही किसी न किसी रूप में भाषा का अस्तित्व रहा है। कभी सांकेतिक भाषा के रूप में तो कभी पत्थरों एवं शिलालेखों पर अंकित आकृतियों के रूप में। मानव सभ्यता के विकास के साथ–साथ भाषा भी विकसित एवं परिवर्तित होती गई। विश्व की लगभग 3,000 भाषाओं में हिंदी, 'भारोपीय' भाषा परिवार की एक प्रमुख भाषा है। हिंदी भाषा पढ़ने एवं लिखने में अत्यंत सरल एवं सरस है तथा संस्कृत से उद्‌गम होने के कारण इसकी लिपि अन्य भाषाओं की अपेक्षा स्पष्ट एवं वैज्ञानिक है। यही कारण है कि आज हिंदी विश्व में तीसरी सबसे अधिक बोली जाने वाली भाषा बन चुकी है।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के आलोक में जम्मू कश्मीर विद्यालयी शिक्षा बोर्ड द्वारा अनेक शिक्षकों, विषय–विशेषज्ञों, शिक्षा शास्त्रियों एवं भाषाविदों की विभिन्न कार्यशालाएँ आयोजित करके हिंदी भाषा की प्रस्तुत पाठ्यपुस्तक **'भाषा–प्रवाह' भाग 5** को विकसित किया है। इसे राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2023 (NCF-SE-2023) में वर्णित लक्ष्यों के अनुरूप तैयार करने का प्रयास किया गया है। प्रस्तुत पाठ्यपुस्तक, दक्षता आधारित सामग्री को सरल, रोचक और आकर्षक रूप में प्रस्तुत करने का एक प्रयास है। इसमें भाषा के विकास के साथ–साथ सतत् सीखने की कला, समस्या समाधान, तार्किक और रचनात्मक चिंतन के विकास पर भी बल दिया गया है। बच्चों में भारतीयता, सांस्कृतिक मूल्य, राष्ट्र प्रेम, चरित्र–निर्माण, नैतिकता, करुणा, पर्यावरण के प्रति संवेदनशीलता, भारतीय ज्ञान परंपरा एवं वैश्विक चिंतन को विकसित करने की दृष्टि से पाठ्यसामग्री का चयन किया गया है। प्रस्तुत पुस्तक में भाषा की प्रमुख विधाओं जैसे कविता, कहानी, निबंध, लेख, एकांकी आदि का समावेश किया गया है, जिससे बच्चे आनंददायी शिक्षण के साथ–साथ भाषा के मौलिक स्वरूप से भी परिचित हो सकें।

'भाषा–प्रवाह' भाग 5 के निर्माण के लिए गठित पाठ्यपुस्तक निर्माण समिति का मैं आभार प्रकट करता हूँ, जिनके कठोर परिश्रम के फलस्वरूप यह पुस्तक इस रूप में आ सकी। इस पुस्तक में रचनाओं को सम्मिलित करने की स्वीकृति देने के लिए सभी रचनाकारों एवं प्रकाशकों के प्रति मैं कृतज्ञता ज्ञापित करता हूँ।

मैं जम्मू कश्मीर विद्यालयी शिक्षा बोर्ड के अध्यक्ष प्रो. (डॉ.) परीक्षित सिंह मन्हास जी का अंतर्मन से आभार व्यक्त करता हूँ, जिनकी दूरदर्शिता,योग्यता, विनम्रता एवं प्रेरणा के फलस्वरूप यह पुस्तक इस रूप को प्राप्त कर सकी। बोर्ड की सचिव सुश्री मनीषा सरीन जी का भी आभार व्यक्त करता हूँ, जिन्होंने पुस्तक निर्माण में समय–समय पर समिति का मार्गदर्शन किया। पुस्तक निर्माण के इस महान् कार्य को सुसंपन्न करने के लिए बोर्ड के अकादमिक विभाग के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित करता हूँ। पाठ्यपुस्तक निर्माण संबंधी कार्यों में तकनीकी सहयोग के लिए जम्मू कश्मीर विद्यालयी शिक्षा बोर्ड के सभी सदस्यों का हार्दिक धन्यवाद करता हूँ। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के अनुरूप पाठ्यपुस्तक निर्माण का यह हमारा प्रथम प्रयास था। अतः स्वाभाविक है कि इस में अनेक संशोधन अपेक्षित होंगे। पुस्तक के अगले संस्करण के लिए आपके अमूल्य सुझाव एवं टिप्पणियाँ सादर आमंत्रित हैं।

प्रो. (डॉ.) सुधीर सिंह

निदेशक अकादमिक

जम्मू कश्मीर विद्यालयी शिक्षा बोर्ड

भारत का संविधान

उद्देशिका

हम, भारत के लोग, भारत को एक [1][**संपूर्ण प्रभुत्व-संपन्न समाजवादी पंथनिरपेक्ष लोकतंत्रात्मक गणराज्य**] बनाने के लिए तथा उसके समस्त नागरिकों को :

सामाजिक, आर्थिक और राजनैतिक **न्याय**,
विचार, अभिव्यक्ति, विश्वास, धर्म
और उपासना की **स्वतंत्रता**,
प्रतिष्ठा और अवसर की **समता**
प्राप्त कराने के लिए,
तथा उन **सब में**
व्यक्ति की गरिमा और [2][**राष्ट्र की एकता और अखंडता**] सुनिश्चित करने वाली **बंधुता**
बढ़ाने के लिए
दृढ़संकल्प होकर **अपनी इस संविधान सभा में** आज तारीख 26 नवंबर, 1949 ई. (मिति मार्गशीर्ष शुक्ल सप्तमी, संवत् दो हज़ार छह विक्रमी) को **एतद्द्वारा इस संविधान को अंगीकृत, अधिनियमित और आत्मार्पित करते हैं।**

---

1. संविधान (बयालीसवां संशोधन) अधिनियम, 1976 की धारा 2 द्वारा (3.1.1977 से) "प्रभुत्व-संपन्न लोकतंत्रात्मक गणराज्य" के स्थान पर प्रतिस्थापित।
2. संविधान (बयालीसवां संशोधन) अधिनियम, 1976 की धारा 2 द्वारा (3.1.1977) "राष्ट्र की एकता" के स्थान पर प्रतिस्थापित।

R7D9L1

पाठ सूची

1.	पुष्प की अभिलाषा	1-6
2.	फ़सलों के त्योहार	7-16
3.	ईदगाह	17-31
4.	सबसे पहले (एकांकी)	32-39
5.	शीतल देवी	40-46
6.	'माँ कह एक कहानी'	47-52
7.	नन्हा फ़नकार	53-66
8.	कदंब का पेड़	67-72
9.	ब्रिगेडियर राजेन्द्र सिंह	73-80
10.	कबीर जी के दोहे	81-86
11.	पानी रे पानी	87-96
12.	योग और व्यायाम का महत्व	97-101
13.	चुनौती हिमालय की यात्रा	102-113
14.	जैसे को तैसा	114-121
15.	मिसाइल मैन	122-126
16.	लोहड़ी	127-135
17.	लोसर : लद्दाख का नववर्ष	136-142

M3V6A1

1 पुष्प की अभिलाषा

सुरबाला	गूँथ(ना)	बिंध(ना)	सम्राट	शीश
मातृभूमि	बनमाली	इठलाऊँ	भाग्य	पथ

चाह नहीं, मैं सुरबाला के
गहनों में गूँथा जाऊँ।
चाह नहीं प्रेमी–माला में
बिंध प्यारी को ललचाऊँ।
चाह नहीं, सम्राटों के शव
पर, हे हरि, डाला जाऊँ।
चाह नहीं देवों के सिर पर
चढ़ूँ, भाग्य पर इठलाऊँ।
मुझे तोड़ लेना, वनमाली।
उस पथ में देना तुम फेंक ।
मातृभूमि पर शीश चढ़ाने
जिस पथ जाएँ वीर अनेक।

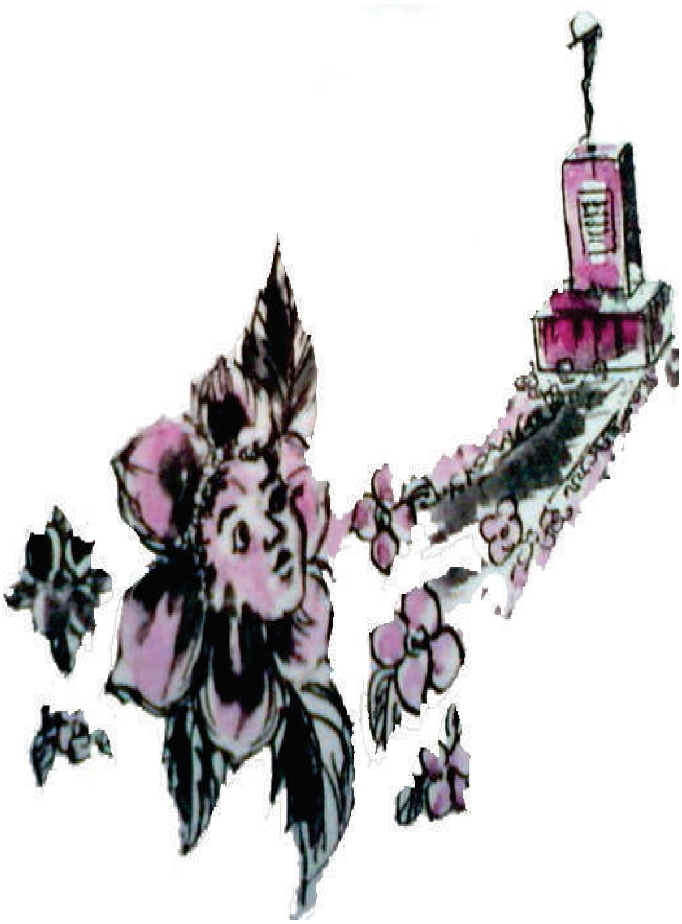

कवि माखनलाल चतुर्वेदी

अभ्यास कार्य

(1) मौखिक प्रश्नोत्तर -

(क) इस कविता का शीर्षक क्या है?

(ख) 'पुष्प' शब्द का अर्थ क्या है?

(ग) 'अभिलाषा' शब्द का अर्थ क्या है?

(घ) शब्दार्थ :-

गहना-ज़ेवर

सम्राट- बड़ा राजा

पथ- रास्ता

शव- मुर्दा शरीर

शीर्ष- सिर

अनेक- एक से अधिक

सुरबाला- स्वर्ग की सुन्दरी, अप्सरा।

(2) लघु लिखित प्रश्नोत्तर -

(क) इस कविता में पुष्प किसके गहनों में नहीं गूँथने की बात कर रहा है?

(ख) इस कविता में पुष्प किसके सिर पर न चढ़ने की बात कर रहा है?

(ग) इस कविता में पुष्प कहाँ चढ़ने की बात कर रहा है?

(3) दीर्घ लिखित प्रश्नोत्तर -

(क) 'पुष्प की अभिलाषा' का अर्थ लिखें।

(ख) पुष्प को किन बातों की चाह नहीं है ?

(ग) पुष्प ने वनमाली से क्या अभिलाषा प्रकट की?

(4) सत्य कथन के आगे (✓) और गलत कथन के आगे (×) का चिह्न लगाएँ -

(क) पुष्प की अभिलाषा है कि वह सुरबाला के गहनों में गूँथा जाए ( )

(ख) पुष्प की अभिलाषा है कि उसे सम्राटों के शवों पर चढ़ाया जाए ( )

(ग) पुष्प की अभिलाषा नहीं है कि वह देवों के सिर पर चढ़े ( )

(घ) पुष्प की अभिलाषा है कि वह वीरों के चरणों को स्पर्श करे ( )

(5) पाठ की उन पंक्तियों को लिखें जिनमें यह भाव आए हैं:-

मैं यह नहीं चाहता कि मुझे कोई सुन्दर स्त्री अपने गहनों में गूँथ ले।

....

....

....

....

....

(6) भाव स्पष्ट करें :-

मुझे तोड़ लेना वनमाली।
उस पथ में देना तुम फेंक।
मातृभूमि पर शीश चढ़ाने
जिस पथ पर जाएँ वीर अनेक।

....

....

....

....

(सुझाव- शिक्षक इस पद्यांश में से कुछ प्रश्न बना कर बच्चों को पूछे और उत्तर लिखने का प्रयास करवाए)

(7) पूरा करें:-

(क) चाह नहीं प्रेमी -माला में ....

(ख) चाह नहीं देवों के सिर पर ....

(ग) मातृभूमि पर शीश चढ़ाने ....

(8) इस कविता 'पुष्प की अभिलाषा' से हमें क्या शिक्षा मिलती है?

(9) अपने अध्यापक से बातचीत करते हुए उन्हें बताएँ कि आप किस तरह देश की सेवा करना चाहते हैं ?

(10) प्रस्तुत पाठ राष्ट्र-प्रेम को उजागर करता है। अध्यापक की सहायता से राष्ट्र-प्रेम से संबंधित कोई कविता लें तथा कक्षा में उसका सस्वर वाचन करें।

(11) पुष्प का चित्र बनाएँ और रंग भरें:-

(12) भारत देश के तिरंगे झंडे का चित्र बनाएँ और उसमें रंग भरें:-

(13) (क) भाषा की परिभाषा और प्रकार लिखिए।

(ख) वर्ण की परिभाषा और इसके भेद लिखिए।

(14) अनेक शब्दों के लिए एक शब्द

1. जानने की इच्छा.. जिज्ञासा
2. मधुर बोलने वाला... मधुरभाषी
3. जो वन में घूमता हो...वनचर
4. जो ऊपर कहा गया है...उपर्युक्त

5. मास में एक बार आने वाला..मासिक
6. हमेशा सत्य बोलने वाला..सत्यवादी
7. जो भगवान में विश्वास रखता हो..............................आस्तिक
8. दया करने वाला.. दयालु

2 फ़सलों के त्योहार

सारा दिन बोरसी के आगे बैठकर हाथ तापते हुए गुज़र जाता है। कहाँ तो खिचड़ी के समय धूप में गरमाहट की शुरुआत होनी चाहिए और यहाँ हम सूरज के इंतज़ार में आस लगाए बैठे हुए हैं। पूरे दस दिन हो गए सूरज लापता है। आज सुबह तो रज़ाई से निकलने की हिम्मत नहीं हो रही थी।

बाहर देखने से तो समय का अंदाज़ा बिल्कुल नहीं हो रहा लेकिन घर में हो रही चहल–पहल अब पता चल रही है। रह–रहकर कानों में कभी चाँपाकल के चलने और पानी के गिरने की आवाज़ तो कभी किसी के हाँक लगाने की आवाज़ आ रही थी, "जा भाग के देख केरा के पत्ता आइल की ना?"

"आज ई लोग के उठे के नईखे का? बोल जल्दी तैयार होखस।"

अब तो उठने में ही भलाई है।

नहा–धोकर हम सभी एक कमरे में इकट्ठा हुए। दादा और चाचा ने क्या सफ़ेद चकाचक माँड़ लगी धोती और कुर्ता पहना हुआ है! "खिचड़ी में अइसन ठाड़ हम पहिले कब्बो ना देख नी सारा देह कनकना दे ता!" पापा ने कहा। शायद आज धोती में उन्हें ठंड कुछ ज़्यादा लग रही है।

सामने मचिया पर खादी की सफ़ेद साड़ी पहने हुए दादी बैठी थीं। आज दादी ने अपने बाल धोए हैं–झक सफ़ेद सेमल की रुई जैसे हल्के–फुलके बाल। गौर से देखने पर भी एक काला बाल नज़र नहीं आता। बिल्कुल धुली–धुली सी लग रही हैं दादी। उनके सामने केले के कुछ पत्ते कतार में रखे हैं जिस पर तिल, मिट्ठा (गुड़), चावल आदि के छोटे–छोटे ढेर पड़े हुए हैं। हमें बारी–बारी से उन सभी चीज़ों को छूने और प्रणाम करने के लिए कहा गया। जब सबने ऐसा कर लिया तो उन सभी चीज़ों को एक जगह इकट्ठा करके दान दे दिया गया।

आज तो अप्पी दिदिया बुरी फँसी। उन्हें न तो चूड़ा—दही ही पसंद है और न ही खिचड़ी, पर आज तो. फ़रमाइशी नाश्ता नहीं चलेगा। उन्हें दोनों ही चीज़ें खानी पड़ेंगी... आज खिचड़ी जो है! खिचड़ी खाने के बाद सभी ने 'गया' से आए तिल, गुड़ और चीनी के तिलवुफट को बड़े चाव से खाया। खाते—खाते मैं सोच रही थी कि कितनी अलग है न यह खिचड़ी जो अभी हम मना रहे हैं। स्कूल में हम जो खिचड़ी मनाते थे उसकी अलग ही मस्ती हुआ करती थी। छुट्टी का दिन, नाव में बैठकर गंगा नदी की सैर और फिर टापू पर बालू में दौड़ते हुए पतंग उड़ाना या उड़ाने की कोशिश करना। कितना मज़ा आता था। इधर हम पतंग उड़ाते थे और वहीं थोड़ी दूर पर गुरुजी, विमला दिद्दा, आनंद जी, झिलमिट भैया सब मिलकर ईंट से बने चूल्हे पर बड़े—बड़े कड़ाहों में खिचड़ी बनाते थे। हम भी बीच—बीच में अपनी पतंगों को सुस्ताने का मौका देते हुए मटर और प्याज़ छीलने बैठ जाते। वैसी खिचड़ी फिर दुबारा खाने को नहीं मिली। वाकई, ढंग कैसा भी हो, पर है ये खुशियों का त्योहार!

जनवरी माह के समय में भारत के लगभग सभी प्रांतों में फ़सलों से जुड़ा कोई—न—कोई त्योहार मनाया जाता है। कोई फसलों के तैयार हो जाने पर खुशी बाँटता है तो कुछ लोग इस उम्मीद में खुश होते हैं कि अब पाला कम होगा, सूरज की गर्मी बढ़ने से खेतों में खड़ी फसल

तेज़ी से बढ़ेगी। सभी प्रांतों और इलाकों का अपना रंग और अपना ढंग नज़र आता है। इस दिन सब लोग अच्छी पैदावार की उम्मीद और फ़सलों के घर में आने की खुशी का इज़हार करते हैं। उत्तर प्रदेश, बिहार, मध्य प्रदेश में मकर—संक्रांति या तिल संक्रांत, असम में बीहू, केरल में ओणम,

तमिलनाडु में पोंगल, पंजाब में लोहड़ी, झारखंड में सरहुल, गुजरात में पतंग का पर्व सभी खेती और फ़सलों से जुड़े त्योहार हैं। इन्हें जनवरी से मध्य अप्रैल तक अलग—अलग

समय मनाया जाता है।

झारखंड में सरहुल बड़े जोशो–खरोश के साथ मनाया जाता है। चार दिनों तक इसका जश्न चलता रहता है।

अलग–अलग जनजातियाँ इसे अलग–अलग समय में मनाती हैं। संथाल लोग फरवरी–मार्च में, तो ओरांव लोग इसे मार्च–अप्रैल में मनाते हैं। आदिवासी आमतौर पर प्रकृति की पूजा करते हैं। सरहुल के दिन विशेष रूप से 'साल' के पेड़ की पूजा की जाती है। यही समय है जब साल के पेड़ों में फूल आने लगते हैं और मौसम बहुत ही खुशनुमा हो जाता है। स्त्री–पुरुष दोनों ही ढोल–मंजीरे लेकर रात भर नाचते–गाते हैं। चारों

ओर फैली हुई छोटी–छोटी घाटियाँ, लंबे–लंबे साल के वृक्षों का जंगल और वहीं आस–पास बसे छोटे–छोटे गाँव। लिपे–पुते, करीने से बुहारे और सजाए गए अपने घरों के सामने लोग एक पंक्ति में कमर में बाँहें डालकर नृत्य करते हैं। अगले दिन वे नृत्य करते हुए घर–घर जाते

हैं और फूलों के पौधे लगाते हैं। घर–घर से चंदा माँगने की भी प्रथा है। पर चंदे में मालूम है क्या माँगते हैं? मुर्गा, चावल और मिश्री। फिर चलता है खाने–पीने और खेलों का दौर। तीसरे दिन जाकर पूजा होती है जिसके बाद लोग अपने कानों में सरई का फूल पहनते हैं।

इसी दिन से वसंत ऋतु की शुरुआत मानी जाती है। धान की भी पूजा होती है। पूजा किया हुआ आशीर्वादी धान अगली फ़सल में बोया जाता है।

तमिलनाडु में मकर–संक्रांति या फ़सलों से जुड़ा त्योहार 'पोंगल' के रूप में मनाया जाता है। इस दिन खरीफ की फ़सलें चावल, अरहर, मसूर आदि कटकर घरों में पहुँचती हैं और लोग नए धान कूटकर चावल निकालते हैं। हर घर में मिट्टी का नया मटका लाया जाता

है जिसमें नए चावल, दूध और गुड़ डालकर उसे पकाने के लिए धूप में रख देते हैं। हल्दी शुभ मानी जाती है इसलिए साबुत हल्दी को मटके के मुँह के चारों ओर बाँध देते हैं। यह मटका दिन में साढ़े दस–बारह बजे तक धूप में रखा जाता है। जैसे ही दूध में उफान आता है और दूध–चावल मटके से बाहर गिरने लगता है तो "पोंगला–पोंगल, पोंगला–पोंगल" (खिचड़ी में उफान आ गया) के स्वर सुनाई देते हैं।

दूसरी ओर, गुजरात में पतंगों के बिना तो मकर–संक्रांति का जश्न अधूरा ही माना जाएगा। इस दिन आसमान की ओर यदि नज़र उठाएँ तो शायद हर आकार और रंग–रूप की पतंगें आकाश में लहराती हुई मिलें। प्रत्येक गुजराती चाहे वह किसी भी धर्म, जाति या आयु का हो, पतंग उड़ाता है। हज़ारों–लाखों पतंगों से सूर्य भी ढक–सा जाता है।

कुमाऊँ में मकर संक्रांति को 'घुघुतिया' भी कहते हैं। इस दिन आटे और गुड़ को गूँथकर पकवान बनाए जाते हैं। इन पकवानों को तरह–तरह के आकार दिए जाते हैं जैसे–डमरू, तलवार, दाड़िम का फूल आदि। पकवान को तलने के बाद एक माला में पिरोया जाता है। माला के बीच में संतरा और गन्ने की गंडेरी पिरोई जाती है। यह काम बच्चे बहुत रुचि और उत्साह के साथ करते हैं। सुबह बच्चों को माला दी जाती है। बहुत ठंड के कारण पक्षी पहाड़ों से चले जाते हैं। उन्हें बुलाने के लिए बच्चे इस माला से पकवान तोड़–तोड़कर पक्षियों को खिलाते हैं और गाते हैं–

कौआ आओ
घुघूत आओ
ले कौआ बड़ौ
म कै दे जा सोने का घड़ौ
खा लै पूरी
म कै दे जा सोने की छुरी

इसके साथ ही जिस चीज़ की कामना हो, वह माँगते हैं। है न कितने अलग–अलग अंदाज़ मकर–संक्रांति को मनाने के। कहीं दूध, चावल और गुड़ की खीर बनती है तो कोई पाँच प्रकार के नए अनाज की खिचड़ी बनाता है। कहीं–कहीं लोगों का सैलाब नदी में स्नान के लिए उमड़ पड़ता है। लोग ठंड से ठिठुरते रहेंगे पर बर्फीले पानी में कम–से–कम एक डुबकी तो ज़रूर लगाएँगे। हाल यह होता है कि इन जगहों पर तिल रखने की भी जगह नहीं होती। तिल से याद आया मकर संक्रांति के दिन पानी में तिल डालकर स्नान करना, तिल दान करना, आग में तिल डालना, तिल के पकवान बनाना विशेष महत्व रखता है। तुम्हारे घर या इलाके में इस त्योहार को कैसे मनाया जाता है? इसे खिचड़ी, पोंगल, मकर–संक्रांति या कुछ और कहा जाता है? या तुम फ़सलों से जुड़े कोई और त्योहार मनाती हो? यदि तुम आपस में बात करो तो तुम्हें यह जानकर हैरानी होगी कि कई बार एक ही इलाके में रहने वाले लोग भी इस त्योहार को अलग–अलग ढंग से मनाते हैं।

मौसम का अंदाज़

1. "खिचड़ी में अइसन जाड़ा हम पहिले कब्बो ना देखनीं।"

   यहाँ तुम 'खिचड़ी' से क्या मतलब निकाल रहे हो ?

2. क्या कभी ऐसा हो सकता है कि सूरज बिल्कुल ही न निकले?

   अगर ऐसा हो तो ....

   ....

   ....

   ....

   ....

   अपने साथियों के साथ बातचीत करके लिखो।

3. बाहर देखने से समय का अंदाज़ा क्यों नहीं हो पा रहा था?

   जिनके पास घड़ी नहीं होती वे समय का अनुमान किस तरह से लगाते हैं?

तुम्हारी जुबान

(क) "आज ई लोग के उठे के नईखे का?"

(ख) "जा भाग के देख केरा के पत्ता आइल की ना?"

इन वाक्यों को अपने घर की भाषा में लिखो।

भारत तेरे रंग अनेक

1. विविधता हमारे देश की पहचान है। फ़सलों का त्योहार हमारे देश के विविध रंग–रूपों का एक उदाहरण है। नीचे विविधता के कुछ और उदाहरण दिए गए हैं। पाँच–पाँच बच्चों का समूह एक–एक उदाहरण ले और उस पर जानकारी इकट्ठी करे (जानकारी चित्र, फोटोग्राफ, कहानी, कविता, सूचनापरक सामग्री के रूप में हो सकती है।) हर समूह इस जानकारी को कक्षा में प्रस्तुत करें।

- भाषा
- कपड़े
- नया वर्ष
- भोजन
- लोक कला
- लोक संगीत

2. तुम्हें कौन–सा त्योहार सबसे अच्छा लगता है और क्यों? इस दिन तुम्हारी दिनचर्या क्या रहती है?

अन्न के बारे में

(क) फ़सल के त्योहार पर 'तिल' का बहुत महत्व होता है। तिल का किन–किन रूपों में इस्तेमाल किया जाता है? पता करो।

(ख) तुम जानती हो कि तिल से तेल बनता है और किन चीज़ों से तेल बनता है और कैसे? हो सके तो तेल की दुकान में जाकर पूछो।

किसान और चीज़ों का सफ़र

किसान और खेती हममें से बहुत से लोगों की जानी–पहचानी दुनिया का हिस्सा नहीं है। विशेष रूप से शहर के ज़्यादातर लोगों को यह अहसास नहीं है कि हमारी ज़िंदगी किस हद तक इनसे जुड़ी हुई है। देश के कई हिस्सों में आज किसानों को ज़िंदा रहने

के लिए बहुत मेहनत और संघर्ष करना पड़ रहा है। अगर यह जानने की कोशिश करें कि हम दिनभर जो चीज़ें खाते हैं वे कहाँ से आती हैं– तो किसानों की हमारी ज़िंदगी में भूमिका को हम समझ पाएँगे। आलू की पकौड़ी, बर्फी और आइसक्रीम– इन तीन चीज़ों के बारे में नीचे दिए गए बिंदुओं को ध्यान में रखते हुए जानकारी इकट्ठी करो और 'मेरी कहानी' के रूप में उसे लिखो।

- किन चीज़ों से बनती है?
- इन चीज़ों का जन्म कहाँ होता है?
- हम तक पहुचँने का उनका सफ़र क्या है?
- किन–किन हाथों से होकर हम तक पहुँचती है?
- इस पूरे सफ़र में किन लोगों की कितनी मेहनत लगती है?
- इन लोगों में से किसको कितना मुनाफ़ा मिलता है?

अगले वर्ष कक्षा छह में सामाजिक एवं राजनैतिक जीवन के बारे में पढ़ोगे तो ऊपर लिखे सफ़र में शामिल लोगों की दिनचर्या पता करने का मौका भी मिलेगा।

खास पकवान

1. 'गया' शहर तिलकुट के लिए भी प्रसिद्ध है। हमारे देश में छोटी–बड़ी ऐसी कई जगहें हैं जो अपने खास पकवान के लिए मशहूर हैं। अपने परिवार के लोगों से पता करके उनके बारे में बताओ।
2. पिछले दो वर्षों में तुमने 'काम वाले शब्दों' के बारे में जाना।

   इन शब्दों को क्रिया भी कहते हैं क्योंकि क्रिया का संबंध कोई काम 'करने' से है। नीचे खिचड़ी बनाने की विधि दी गई है। इसमें बीच–बीच में कुछ क्रियाएँ छूट गई हैं। उचित क्रियाओं का प्रयोग करते हुए इसे पूरा करो।

   छौंकना पीसना पकाना धोना परोसना भूनना

शब्दार्थ-

इंतज़ार-प्रतीक्षा

अइसन-ऐसी

चाँपाकल- हैंडपंप

कतार-पंक्ति

खिचुरी-खिचड़ी

उफान-उबाल, तीव्रता

त्योहार-उत्सव

कामना-इच्छा

पाला-ठंड, सर्दी

आवाज़-ध्वनि

श्रुतलेख

गरमाहट, चाँपाकल, फरमाइशी, तिलवुफट, मकर-संक्रांति, जोशो-खरोश, जनजातियाँ, आदिवासी, ढोल-मंजीरे, खिचड़ी, पकवान, त्योहार

बहु विकल्पीय प्रश्न -

1. दादा और चाचा ने क्या पहना हुआ था-

(क) पैंट-कमीज

ख) पाजामा-कुर्ता

ग) धोती-कुर्ता

घ) पैंट-कुर्ता

2. केले के पत्तों पर क्या रखा हुआ था-

क) दाल चावल

ख) गुड़-रेवड़ी

ग) तिल-मूँगफली, चावल

घ) तिल, गुड़, चावल

3. झारखंड में चार दिनों तक कौन सा त्योहार मानाया जाता है-

क) पोंगल

ख) सरहुल

ग) लोहड़ी

घ) ओणम

4. मकर संक्रांति के दिन पानी में क्या डालकर नहाया जाता है।

क) तिल	ख) चावल

ग) दूध	घ) इत्र

2. प्रश्न उत्तर

1. मौखिक प्रश्न

1. खिचड़ी खाने के लिए कौन सा विशेष दिन निर्धारित किया गया है?
2. तमिलनाडु में मकर संक्रांति को किस नाम से मनाया जाता है?
3. किस राज्य में मकर संक्रांति वाले दिन पतंगे उड़ायी जाती हैं?
4. फसलों से जुड़े त्योहारों में क्या-क्या पकवान बनते हैं?

लिखित प्रश्न

1. भारत के सभी प्रांतों में फसलों से जुड़े त्योहार किस-किस नाम से मनाये जाते हैं?
2. भारत की जनजातियां मकर संक्रांति का त्योहार किस प्रकार मनाती हैं?
3. तमिलनाडु में पोंगल त्योहार किस प्रकार मानाया जाता है?
4. मकर संक्रांति वाले दिन तिलों का क्या महत्व रहता है?

3. रिक्त स्थान

1. अप्पी दिदिया को पसंद नहीं था.......................

(दाल, चावल, चूड़ा-दही, सब्जी-रोटी)

2. .... माह में भारत के सभी प्रांतों में फसलों के त्योहार मनाये जाते हैं।

(जनवरी, मार्च, अप्रैल)

3. केरल में मकर संक्रांति .... के नाम से मनायी जाती है।

(लोहड़ी, सरहुल, ओणम)

4. पंजाब प्रांत में फसलों से जुड़ा त्यौहार .... नाम से मनाया जाता है।

(बीहू, तिल संक्रांति, लोहड़ी)

4. सही/गलत, उत्तर बताइए-

1. दादी ने रेशम की गुलाबी साड़ी पहनी थी।
2. ईंट से बने बड़े चूल्हे पर खिचड़ी बनायी जाती थी।
3. असम में मकर संक्रांति को पोंगल के नाम से जाना जाता है।
4. कुमाऊँ में मकर संक्रांति को 'घुघुतिया' भी कहते हैं।

रचनात्मक कार्य

गया शहर तिलकुट के लिए भी प्रसिद्ध है। हमारे देश में छोटी-बड़ी ऐसी कई जगहे हैं जो अपने खास पकवानों के लिए मशहूर हैं। उनके बारें में जानकारी एकत्रित करिए-

3

ईदगाह

D4U8G8

रमज़ान के पूरे तीस रोज़ो के बाद ईद आई है। गाँव में कितनी हलचल है। ईदगाह जाने की तैयारियाँ हो रही हैं। किसी के कुर्ते में बटन नहीं है, पड़ोस के घर से सुई–धागा लेने दौड़ा जा रहा है। किसी के जूते कड़े हो गए हैं, उनमें तेल डालने के लिए तेली के घर भागा जाता है। जल्दी–जल्दी बैलों को सानी–पानी दे दें। ईदगाह से लौटते–लौटते दोपहर हो जाएगी। लड़के सबसे ज़्यादा प्रसन्न हैं। किसी ने एक रोज़ा रखा है, वह भी दोपहर तक, किसी ने वह भी नहीं, लेकिन ईदगाह जाने की खुशी उनके हिस्से की चीज़ है। रोज़े बड़े–बूढ़ों के लिए होंगे। इनके लिए तो ईद है। रोज़ ईद का नाम रटते थे, आज वह आ गई। अब जल्दी पड़ी है कि लोग ईदगाह क्यों नहीं चलते। बार–बार जेब से अपना खज़ाना निकाल कर गिनते हैं और खुश होकर फिर रख लेते हैं। महमूद गिनता है, एक–दो, दस–बारह! उसके पास बारह पैसे हैं। मोहसिन के पास एक, दो, तीन, आठ, नौ, पंद्रह पैसे हैं। इन्हीं अनगिनत पैसों में अनगिनत चीज़ें लाएँगे– खिलौने, मिठाइयाँ, बिगुल, गेंद और जाने

क्या–क्या! और सबसे ज़्यादा प्रसन्न है हामिद। हामिद अपनी बूढ़ी दादी अमीना की गोद में सोता है। हामिद के पाँव में जूते नहीं हैं, सिर पर एक पुरानी–धुरानी टोपी है, जिसका गोटा काला पड़ गया है।

गाँव से मेला चला। और बच्चों के साथ हामिद भी जा रहा था। कभी सब–के–सब दौड़ कर आगे निकल जाते। फिर किसी पेड़ के नीचे खड़े होकर साथवालों का इंतज़ार करते। यह लोग क्यों इतना धीरे–धीरे चल रहे हैं? हामिद के पैरों में तो जैसे पर लग गए हैं।

शहर आ गया। बड़ी–बड़ी इमारतें आने लगीं, यह अदालत है, यह कॉलेज है, यह क्लब–घर है। इतने बड़े कॉलेज में कितने लड़के पढ़ते होंगे? सब लड़के नहीं हैं जी! बड़े–बड़े आदमी हैं, सच! उनकी बड़ी–बड़ी मूँछे हैं। इतने बड़े हो गए, अभी तक पढ़ने जाते हैं। न जाने कब तक पढ़ेंगे और क्या करेंगे इतना पढ़कर। हामिद के मदरसे में दो–तीन बड़े–बड़े लड़के हैं, बिल्कुल तीन कौड़ी के ! रोज़ मार खाते हैं, काम से जी चुरानेवाले। इस जगह भी उसी तरह के लोग होंगे और क्या।

सहसा ईदगाह नज़र आया। नमाज़ खत्म हो गई है। लोग आपस में गले मिल रहे हैं। तब मिठाई और खिलौने की दुकान पर धावा होता है। ग्रामीणों का यह दल इस विषय में बालकों से कम उत्साही नहीं है। यह देखो, हिंडोला है। एक पैसा देकर चढ़ जाओ। कभी आसमान पर जाते हुए मालूम होंगे, कभी ज़मीन पर गिरते हुए। यह चर्खी है, लकड़ी के हाथी, घोड़े, ऊँट छड़ों से लटके हुए हैं। एक पैसा देकर बैठ जाओ और पच्चीस चक्करों का मज़ा लो। महमूद, मोहसिन, नूरे और सम्मी इन घोड़ों और ऊँटों पर बैठते हैं। हामिद दूर खड़ा है। तीन ही पैसे तो उसके पास हैं। अपने कोष का एक तिहाई ज़रा–सा चक्कर खाने के लिए नहीं दे सकता।

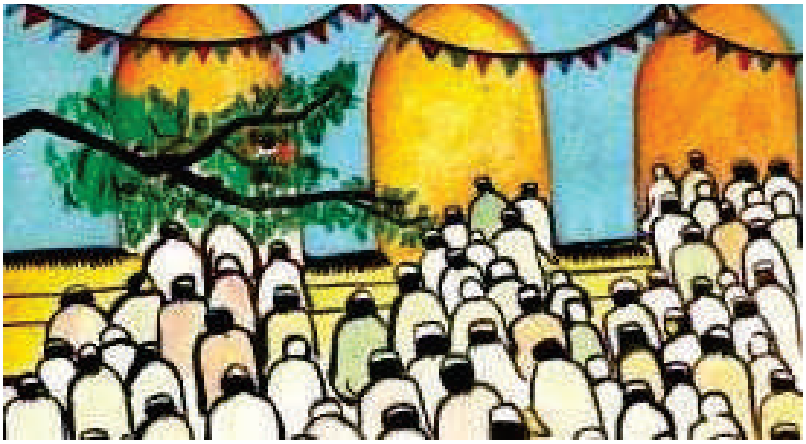

सब चर्खियों से उतरते हैं। अब खिलौने लेंगे। इधर दुकानों की कतार लगी हुई है। तरह–तरह के खिलौने हैं सिपाही और गुजरिया, राजा और वकील, भिश्ती और धोबिन और साधू वाह! कितने सुंदर खिलौने हैं। अब बोलना ही चाहते हैं। महमूद सिपाही लेता है, खाकी वर्दी और लाल पगड़ीवाला, कंधे पर बंदूक रखे हुए। मालूम होता है, अभी कवायद किए चला आ रहा है। मोहसिन को भिश्ती पसंद आया। कमर झुकी है, ऊपर मशक रखे हुए है। मशक का मुँह एक हाथ से पकड़े हुए है। बस, मशक से पानी उड़ेलना ही चाहता है। नूरे को वकील से प्रेम है। कैसी विद्वता है उसके मुख पर! काला चोगा, नीचे सफ़ेद अचकन, अचकन के सामने की जेब में घड़ी, सुनहरी ज़ंजीर, एक हाथ में कानून का पोथा लिए हुए। मालूम होता है, अभी किसी अदालत से जिरह या बहस किए चले आ रहे हैं। यह सब दो–दो पैसे के खिलौने हैं। हामिद के पास कुल तीन पैसे हैं, इतने महँगे खिलौने वह कैसे ले? खिलौना कहीं हाथ से छूट पड़े तो चूर–चूर हो जाए। ज़रा पानी पड़े तो सारा रंग धुल जाए। ऐसे खिलौने लेकर वह क्या करेगा? लेकिन ललचाई हुई आँखों से खिलौनों को देख रहा है और चाहता है कि ज़रा देर के लिए उन्हें हाथ में ले सकता।

खिलौने के बाद मिठाइयाँ आती हैं। किसी ने रेवड़ियाँ ली हैं, किसी ने गुलाबजामुन, किसी ने सोहन हलवा, सभी मज़े से खा रहे हैं।

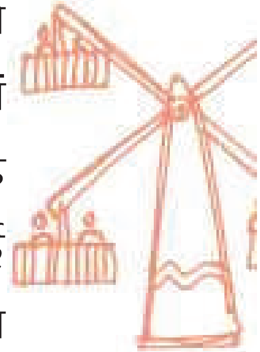

मिठाइयों के बाद कुछ दुकानें लोहे की चीज़ों की हैं। कुछ गिलट और कुछ नकली गहनों की। लड़कों के लिए यहाँ कोई आकर्षण नहीं था। वे सब आगे बढ़ जाते हैं। हामिद लोहे की दुकान पर रुक जाता है। कई चिमटे रखे हुए थे। उसे ख्याल आया, दादी के पास चिमटा नहीं है। तवे से रोटियाँ उतारती हैं, तो हाथ जल जाता है। अगर वह चिमटा ले जाकर दादी को दे दे, तो वह कितनी प्रसन्न होंगी। फिर उनकी उँगलियाँ कभी न जलेंगी। घर में एक काम की चीज़ हो जाएगी। खिलौने से क्या फायदा?

हामिद के साथी आगे बढ़ गए हैं। सबील पर सब–के –सब शर्बत पी रहे हैं। देखो, सब कितने लालची हैं। इतनी मिठाइयाँ लीं, मुझे किसी ने एक भी न दी। उस पर कहते हैं, मेरे साथ खेलो। मेरा यह काम करो। अब अगर किसी ने कोई काम करने को कहा, तो पूछूँगा। खाएँ मिठाइयाँ, आप मुँह सड़ेगा, फोड़े–फुंसियाँ निकलेंगी, आप की ज़बान चटोरी हो जाएगी। सबके सब हँसेंगे कि हामिद ने चिमटा लिया है। हँसें! मेरी बला से! उसने दुकानदार से पूछा– यह चिमटा कितने का है?

दुकानदार ने उसकी ओर देखा और कोई आदमी साथ न देखकर कहा– यह तुम्हारे काम का नहीं है जी!

''बिकाऊ है कि नहीं ?''

''बिकाऊ क्यों नहीं है? और यहाँ क्यों लाद लाए हैं?''

''तो बताते क्यों नहीं, कै पैसे का है?''

''छह पैसे लगेंगे।''

हामिद का दिल बैठ गया।

''ठीक–ठीक बताओ।''

''ठीक–ठीक पाँच पैसे लगेंगे, लेना हो लो, नहीं चलते बनो।''

हामिद ने कलेजा मजबूत करके कहा–तीन पैसे लोगे?

यह कहता हुआ वह आगे बढ़ गया कि दुकानदार की घुड़कियाँ न सुने। लेकिन दुकानदार ने घुड़कियाँ नहीं दी। बुलाकर चिमटा दे दिया। हामिद ने उसे इस तरह कंधे पर रखा, मानो बंदूक है और शान से अकड़ता हुआ संगियों के पास आया। ज़रा सुनें, सब–के–सब क्या–क्या आलोचनाएँ करते हैं।

मोहसिन ने हँसकर कहा–यह चिमटा क्यों लाया पगले, इससे क्या करेगा?

हामिद ने चिमटे को ज़मीन पर पटककर कहा – ज़रा अपना भिश्ती ज़मीन पर गिरा दो। सारी पसलियाँ चूर–चूर हो जाएँ बच्चू की।

महमूद बोला – तो यह चिमटा कोई खिलौना है?

हामिद –खिलौना क्यों नहीं है। अभी कंधे पर रखा, बंदूक हो गई। हाथ में लिया, फ़कीरों का चिमटा हो गया। चाहूँ तो इससे मंजीरे का काम ले सकता हूँ। एक चिमटा जमा दूँ, तो तुम लोगों के सारे खिलौनों की जान निकल जाए। तुम्हारे

खिलौने कितना ही ज़ोर लगाएँ, मेरे चिमटे का बाल भी बाँका नहीं कर सकते। मेरा बहादुर शेर है–चिमटा।

सम्मी ने खंजरी ली थी। प्रभावित होकर बोला–मेरी खँजरी से बदलोगे, दो आने की है।

हामिद ने खँजरी की ओर उपेक्षा से देखा–मेरा चिमटा चाहे तो तुम्हारी खँजरी का पेट फाड़ डाले। बस, एक चमड़े की झिल्ली लगा दी, ढब–ढब बोलने लगी। ज़रा–सा पानी लग जाए तो खत्म हो जाए। मेरा बहादुर चिमटा आग में, पानी में, आँधी में, तूफ़ान में बराबर डटा खड़ा रहेगा।

चिमटे ने सभी को मोहित कर लिया, लेकिन अब पैसे किसके पास धरे हैं। फिर मेले से दूर निकल आए हैं, नौ कब के बज गए, धूप तेज़ हो रही है। घर पहुँचने की जल्दी हो रही है। बाप से ज़िद भी करें, तो चिमटा नहीं मिल सकता है। हामिद है बड़ा चालाक। इसीलिए बदमाश ने अपने पैसे बचा रखे थे।

अब बालकों के दो दल हो गए हैं। एक ओर मिट्टी है, दूसरी ओर लोहा। अगर कोई शेर आ जाए, मियाँ भिश्ती के छक्के छूट जाए, मियाँ सिपाही मिट्टी की बंदूक छोड़कर भागे, वकील साहब की नानी मर जाए, चोगे में मुँह छिपाकर ज़मीन पर लेट जाए। मगर यह चिमटा, यह बहादुर, यह रुस्तम–ए–हिंद लपककर शेर की गर्दन पर सवार हो जाएगा। और उसकी आँखें निकाल लेगा।

मोहसिन ने एड़ी–चोटी का ज़ोर लगाकर कहा–अच्छा, पानी तो नहीं भर सकता।

हामिद ने चिमटे को सीधा खड़ा करके कहा–भिश्ती को एक डाँट

बताएगा, तो दौड़ा हुआ पानी लाकर द्वार पर छिड़कने लगेगा।

मोहसिन परास्त हो गया; पर महमूद ने कुमुक पहुँचाई–अगर बच्चू पकड़े जाएँ, तो अदालत में बँधे–बँधे फिरेंगे। तब वकील साहब के ही पैरों पड़ेंगे।

हामिद इस प्रबल तर्क का जवाब न दे सका। उसने पूछा–हमें पकड़ने कौन आएगा? नूरे ने अकड़ कर कहा–यह सिपाही बंदूकवाला।

हामिद ने मुँह चिढ़ाकर कहा–यह बेचारे हम बहादुर रुस्तम-ए-हिंद को पकड़ेंगे! अच्छा लाओ, अभी ज़रा कुश्ती हो जाए। इसकी सूरत देखकर दूर से भागेंगे। पकड़ेंगे क्या बेचारे!

मोहसिन को एक नई चोट सूझ गई–तुम्हारे चिमटे का मुँह रोज़ आग में जलेगा।

उसने समझा था कि हामिद लाजवाब हो जाएगा; लेकिन यह बात न हुई। हामिद ने तुरंत जवाब दिया—आग में बहादुर ही कूदते हैं जनाब। आग में कूदना वह काम है, जो रुस्तमे हिंद ही कर सकता है।

महमूद ने एक ज़ोर लगाया — वकील साहब कुर्सी—मेज पर बैठेंगे, तुम्हारा चिमटा तो बावरचीखाने में ज़मीन पर पड़ा रहेगा।

इस तर्क ने सम्मी और नूरे को भी सजीव कर दिया! कितने ठिकाने की बात कही है पट्ठे ने। चिमटा बावरचीखाने में पड़े रहने के सिवा और क्या कर सकता है?

हामिद को कोई फड़कता हुआ जवाब न सूझा, तो उसने धाँधली शुरू की—मेरा चिमटा बावरचीखाने में नहीं रहेगा। वकील साहब कुर्सी पर बैठेंगे, तो जाकर उन्हें जमीन पर पटक देगा और उनका कानून उनके पेट में डाल देगा।

कानून को पेट में डालने वाली बात छा गई। ऐसी छा गई कि तीनों शूरमा मुँह ताकते रह गए। हामिद ने मैदान मार लिया। उसका चिमटा रुस्तमे हिंद है। अब इसमें मोहसिन, महमूद, नूरे, सम्मी किसी को भी आपत्ति नहीं हो सकती। औरों ने तीन—तीन, चार—चार आने पैसे खर्च किए, पर कोई काम की चीज़ न ले सके। हामिद ने तीन पैसे में रंग जमा लिया। सच ही तो है, खिलौनों का क्या भरोसा? टूट फूट जाएँगे। हामिद का चिमटा तो बना रहेगा बरसो!

संधि की शर्तें तय होने लगीं। मोहसिन ने कहा — ज़रा अपना चिमटा दो, हम भी देखें, तुम हमारा भिश्ती लेकर देखो।

महमूद और नूरे ने भी अपने—अपने खिलौने पेश किए।

हामिद को इन शर्तों के मानने में कोई आपत्ति न थी। चिमटा

बारी—बारी से सबके हाथ में गया, और उनके खिलौने बारी—बारी से हामिद के हाथ में आए। कितने खूबसूरत खिलौने हैं!

हामिद ने हारनेवालों के आँसू पोंछे — मैं तुम्हें चिढ़ा रहा था, सच! यह चिमटा भला इन खिलौनों की क्या बराबरी करेगा? मालूम होता है, अब बोले, तब बोले।

मोहसिन — लेकिन इन खिलौनों के लिए कोई हमें दुआ तो न देगा।

महमूद — दुआ को लिए फिरते हो। उलटे मार न पड़े। अम्माँ ज़रूर कहेंगी कि मेले में यही मिट्टी के खिलौने मिले?

हामिद को स्वीकार करना पड़ा कि खिलौने को देखकर किसी की माँ इतनी खुश न होगी, जितनी दादी चिमटे को देखकर होंगी। फिर अब तो चिमटा रुस्तमे—हिंद है और सभी खिलौनों का बादशाह!

रास्ते में महमूद को भूख लगी। उसके बाप ने केले खाने को दिए। महमूद ने केवल हामिद को साझी बनाया।उसके अन्य मित्र मुँह ताकते रह गए।यह उस चिमटे का प्रसाद था।

ग्यारह बजे सारे गाँव में हलचल मच गई। मेलेवाले आ गए। मोहसिन की छोटी बहन ने दौड़ कर भिश्ती उसके हाथ से छीन लिया और मारे खुशी के जो उछली, तो मियाँ भिश्ती नीचे आ रहे और परलोक सिधारे। इस पर भाई—बहन में मार—पीट हुई। दोनों खूब रोए। उनकी अम्मा यह शोर सुनकर बिगड़ी और दोनों को ऊपर से दो—दो चाँटे और लगाए।

मियाँ नूरे के वकील का अंत इससे ज़्यादा गौरवमय हुआ। वकील ज़मीन पर या ताक पर तो नहीं बैठ सकता। दीवार में दो खूटियाँ गाड़ी गईं। उन पर लकड़ी का एक पटरा रखा गया। पटरे पर कागज़ का कालीन बिछाया गया। वकील साहब

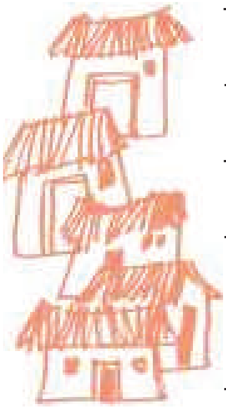

राजा भोज की भाँति सिंहासन पर विराजे। नूरे ने उन्हें पंखा झलना शुरू किया। मालूम नहीं, पंखे की हवा से या पंखे की चोट से वकील साहब का चोला माटी में मिल गया। फिर बड़े ज़ोर–शोर से मातम हुआ और वकील साहब की अस्थि घूरे पर डाल दी गई।

अब रहा महमूद का सिपाही। उसे चटपट गाँव का पहरा देने का चार्ज मिल गया। लेकिन पुलिस का सिपाही पालकी पर चलेगा। एक टोकरी आई, उसमें कुछ लाल रंग के फटे–पुराने चिथड़े बिछाए गए, जिसमें सिपाही साहब आराम से लेटे। नूरे ने यह टोकरी उठाई और अपने द्वार का चक्कर लगाने लगे। उनके दोनों छोटे भाई सिपाही की तरह 'छोनेवाले, जागते लहो' पुकारते चलते हैं। महमूद को ठोकर लग जाती है। टोकरी उसके हाथ से छूटकर गिर पड़ती है और मियाँ सिपाही अपनी बंदूक लिए ज़मीन पर आ जाते हैं और उनकी एक टाँग में विकार आ जाता है। महमूद को आज ज्ञात हुआ कि वह अच्छा डाक्टर है। उसको ऐसा मरहम मिल गया है, जिससे वह टूटी टाँग को आनन–फानन में जोड़ सकता है। टाँग जोड़ दी जाती है; लेकिन सिपाही को ज्यों ही खड़ा किया जाता है, टाँग जवाब दे देती है। शल्य–क्रिया असफल हुई, तब उसकी दूसरी टाँग भी तोड़ दी जाती है। अब कम–से–कम एक जगह आराम से बैठ तो सकता है।

अब मियाँ हामिद का हाल सुनिए। अमीना उसकी आवाज़ सुनते ही दौड़ी और उसे गोद में उठाकर प्यार करने लगी। सहसा उसके हाथ में चिमटा देखकर वह चौंकी।

''यह चिमटा कहाँ था?''

''मैंने मोल लिया है।''

''कितने पैसे में?''

''तीन पैसे दिए।''

अमीना ने छाती पीट ली। यह कैसा बेसमझ लड़का है कि दोपहर हुआ, कुछ खाया न पिया। लाया क्या, यह चिमटा!

''सारे मेले में तुझे और कोई चीज़ न मिली, जो यह लोहे का चिमटा उठा लाया ?''

हामिद ने कहा – तुम्हारी उँगलियाँ तवे से जल जाती थीं, इसलिए मैंने इसे ले लिया।

बुढ़िया का क्रोध तुरंत स्नेह में बदल गया। बच्चे में कितना त्याग, कितना सद्‌भाव और कितना विवेक है! दूसरों को खिलौने लेते और मिठाई खाते देखकर इसका मन कितना ललचाया होगा? वहाँ भी इसे अपनी बुढ़िया दादी की याद बनी रही। अमीना का मन गद्‌गद हो गया।

वह रोने लगी। दामन फैलाकर हामिद को दुआएँ देती जाती थी और आँसू की बड़ी–बड़ी बूँदें गिराती जाती थी।

प्रेमचंद

अभ्यास

शब्दार्थ :–

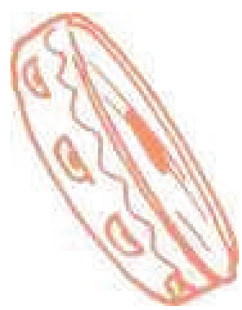

अनगिनत	–	जिसकी गिनती न की जा सके
इंतज़ार	–	प्रतीक्षा
पर	–	पंख
धावा	–	आक्रमण, हमला, हल्ला
कोष	–	खज़ाना

शान	—	गर्व	खूबसूरत	—	सुन्दर
फायदा	—	लाभ	दुआ	—	प्रार्थना, विनती
संगियों	—	साथियों	अस्थि	—	हड्डी
उपेक्षा	—	लापरवाही	ज्ञात	—	मालूम, पता
मोहित	—	आकर्षित	आनन–फानन	—	बहुत जल्दी
बहादुर	—	वीर	स्नेह	—	प्यार
बावर्चीखाना	—	रसोईघर	मन गदगद होना	—	बहुत प्रसन्न होना
संधि	—	समझौता	चकनाचूर होना	—	टूट जाना

मौखिक प्रश्नः

1. ईद कब आती है ?
2. महमूद और मोहसिन के पास कितने पैसे थे ?
3. हामिद क्यों प्रसन्न था ?
4. साथियों के खिलौने को देखकर हामिद ने किस प्रकार अपने आपको समझाया ?

लिखित प्रश्न :

प्रश्न – 1

1. ईद के दिन बच्चे क्यों खुश थे ?
2. अमीना क्यों उदास थी ?
3. चिमटे का दाम सुनकर हामिद का दिल क्यों बैठ गया ?
4. हामिद ने अपने तीन पैसे चिमटे पर खर्च करना क्यों ठीक समझा ?
5. अमीना का क्रोध स्नेह में क्यों बदल गया ?

प्रश्न – 2

कहानी के क्रम के अनुसार, अंक लिखकर बताओ पहले क्या हुआ, फिर क्या हुआ ?

1. सब बच्चों ने अपनी पसंद की चीजें लीं। ☐
2. हामिद दोस्तों के साथ मेला देखने गया। ☐
3. रमज़ान के बाद ईद आई। ☐
4. हामिद ने अपने पैसों से दादी के लिए चिमटा खरीदा। ☐

5. बूढ़ी दादी अमीना परेशान थी ।
6. ईदगाह पर मेला लगा ।
7. बूढ़ी दादी चिमटा देखकर हामिद को दुआएँ देने लगे ।

प्रश्न – 3

सही उतर पर (✓) लगाओ :–

(क) हामिद किसके साथ रहता था ?

1. अम्मीजान के साथ
2. अब्बाजान के साथ
3. दादी के साथ
4. दादाजी के साथ

(ख) हामिद कहाँ जाना चाहता था ?

1. पाठशाला
2. घर
3. बगीचा
4. ईदगाह

(ग) हामिद के मेला देखने जाने से अमीना चिंतित क्यों थी ?

1. उसके पास पैसे नहीं थे।
2. भीड़ में हामिद के खो जाने का डर था।
3. घर में खाने को कुछ न था।
4. वह बीमार था।

भाषा से :

प्रश्न – 1

उदाहरण देखो और खाली स्थान भरो :

मिठाई ... मिठाईयों के बाद कुछ दुकानें लोहे की चीज़ों की हैं।

उँगली ....

टोली ....

रेवड़ी ....

दुआ ....

माला ....

सभा ....

बालिका ....

चीज़ ....

आवाज़ ....

बंदूक ....

औरत ....

घोड़ा ....

रूपया ....

पैसा ....

बगीचा ....

प्रश्न – 2

मुहावरों से वाक्य पूरे करें :

(दिल बैठना, पेट में चूहे कूदना, मुहँ में पानी भर आना)

(क) मिठाई देखते ही बच्चों के ....!

(ख) बिना कुछ खाए पाठशाला जाते ही मेरे ....!

(ग) खिलौना गिरते ही महमूद का ....!

प्रश्न – 3

इन शब्दों के विलोम शब्द लिखिए

प्रसन्न –	....	खुशबू –	....
आशा –	....	भला –	....
प्रकाश –	....	समझदार –	....

प्रश्न – 4

संज्ञा : जो शब्द हमें किसी व्यक्ति, स्थान अथवा वस्तु का भाव–बोध कराए, उसे संज्ञा कहते हैं, जैसे : राम, दिल्ली, पुस्तक, रामायण, मेज़, कलम, आदि!

संज्ञा के प्रमुख तीन भेद हैं:

1. व्यक्तिवाचक संज्ञा	2. जातिवाचक संज्ञा	3. भाववाचक संज्ञा
↓	↓	↓
जो किसी विशेष व्यक्ति, वस्तु या स्थान का नाम हो जैसे : अमीना, नूरे !	जो किसी पूरी जाति का बोध कराए, जैसे : गाँव, शहर, लड़के !	जिससे हमें किसी भाव या गुण का बोध हो !

दिए गए शब्दो को उचित शीर्षक के नीचे उदाहरण के अनुसार लिखिए :

मिठाई, अमीना, हलवाई, इमारत, आश्चर्य, ईद, चाँद, हामिद, महमूद, खिलौने, दोषी, क्रोध, लालच, प्रसन्नता, मोहसिन, बच्चे

व्यक्तिवाचक संज्ञा	जातिवाचक संज्ञा	भाववाचक संज्ञा
....	....	....
....	....	....
....	....	....
....	....	....

4 सबसे पहले (एकांकी)

L7I1Y5

पात्र–	प्रतिभा मैम	(शिक्षिका)
	राकेश	(विद्यार्थी)
	प्रिया	(विद्यार्थी)
	असलम	(विद्यार्थी)
	गुरमीत	(विद्यार्थी)
	टैरेंस	(विद्यार्थी)
	सुकन्या	(विद्यार्थी)
	सूरज	(विद्यार्थी)
	कबीर	(विद्यार्थी)

(पर्दा उठते ही कक्षा पाँचवीं का दृश्य। एक शिक्षिका सामने बैठे विद्यार्थियों से चर्चा आरंभ करती है–)

प्रतिभा मैम– बच्चो ! क्या आप जानते हैं, मानव को जीवित रहने के लिए सबसे पहले किस वस्तु की आवश्यकता होती है?

राकेश – रोटी की।

प्रतिभा मैम:– ठीक है, मगर उससे भी पहले किसी और चीज़ की ज़रुरत पड़ती है।

प्रिया:- पानी की।

प्रतिभा मैम:- यह भी ठीक है, मगर उससे भी महत्वपूर्ण कुछ और है।

(बच्चों की आपस में धीरे-धीरे फुसफुसाहट की आवाज़ आती है)

प्रतिभा मैम:- सब बच्चे ज़रा अपनी साँस रोकिए।

(बच्चे ऐसा ही करते हैं, कुछ बच्चे अपनी नाक को हाथ से पकड़ लेते हैं।) कुछ पल के बाद शिक्षिका कहती हैं-)

प्रतिभा मैम :- अब समझ में आया।

(बच्चे समवेत् स्वर में-)

बच्चे:- हवा।

(बीच में एक दो स्वर उभरते हैं-

नाऽऽऽक

हाऽऽऽथ

और सब हँस पड़ते हैं।)

प्रतिभा मैम:- जी हाँ, हवा सबसे आवश्यक वस्तु है, जिससे हम साँस लेते हैं, जिसके बिना कुछ ही पलों में हमारा दम घुटने लगता है।

असलम:- मैम! हमने विज्ञान की कक्षा में पढ़ा है कि हम ऑक्सीजन लेते हैं और कार्बन डाएऑक्साइड छोड़ते हैं।

प्रतिभा मैम:- बिल्कुल, तो अब आप समझ गए कि सबसे पहले हमें हवा चाहिए और हवा भी ऐसी जो साफ हो यानि जिसमें बीमारी के कीटाणु न हों।

अच्छा यह बताओ आपको कभी घर में या बाहर सांस लेने में तकलीफ होती है, या आँखों में जलन होती है?

(तीन बच्चे हाथ उठाते हैं, शिक्षिका बारी-बारी से पूछती हैं, बच्चे उत्तर देते हैं)

गुरमीत:- मैम! कभी-कभी जब रसोई में धुआँ हो तो आँखों में आँसू आ जाते हैं।

टैरेंस:- मैम! जब झाड़ू लगाने से धूल उठती है तो मुझे सांस लेने में तकलीफ होती है और छींके भी आती हैं।

कबीर:- सिगरेट के धुएँ से, जैनरेटर के धुएँ से और ट्रैफिक जैम में फंसने पर मेरा दम घुटने लगता है, और खाँसी आती है।

प्रतिभा मैम:- बिल्कुल ठीक; आप तीनों ने अलग-अलग परिस्थितियाँ बयान की हैं जिनमें हमें सांस लेने में तकलीफ होती है। इन सभी बताए गए हालातों में कार्बन मोनोक्साइड, कार्बन डाएऑक्साइड, हाएड्रोजन साएनाइड, नाएट्रोजन ऑक्साइड जैसी अन्य ढेरों ज़हरीली गैंसे निकलती हैं जो हमारी सेहत को नुक्सान पहुँचाती हैं। धूल मिट्टी और धुएँ वाली जगह काम करने वालों जैसे कारखानों, खदानों, भवन निर्माण, सड़क निर्माण के मज़दूरों को सांस से संबंधित बीमारियों का सबसे अधिक खतरा होता है।

सुकन्या:- मैम! रोज़ सफाई करने पर भी घरों में धूल कहाँ से आ जाती है?

प्रतिभा मैम:- धूल के अति सूक्ष्म कण सदा वातावरण में मौजूद रहते हैं बाहर से जब हम घर में आते हैं तो हमारे जूतों के साथ धूल मिट्टी अंदर आती है और झाडू लगाने पर यह सब तरफ फैलकर वापस बैठ जाती है। अत: हमें पाँव झाडकर अंदर प्रवेश करना चाहिए और झाडू लगाने से पहले पानी का

छिड़काव कर लेना चाहिए। वैक्यूम क्लीनर भी एक अच्छा विकल्प है जो धूल को सीधा अपने अंदर खींच लेता है। पर यह महँगा उपकरण है, हर तरफ नहीं जा सकता और बिजली से चलता है।

सूरजः– मैम जब विद्यालय में कचरे को जलाया जाता है तो मुझे साँस लेने में तकलीफ होती है।

प्रतिभा मैमः– जी बेटा आपने बिल्कुल सही समस्या को उठाया है। कचरे को जलाकर समाप्त करना कानूनन जुर्म है। इसके लिए बड़े-बड़े गड्ढे होने चाहिए जिसमें कचरे को डालकर खाद का निर्माण किया जा सकता है जिसे खेती के काम में लाया जा सकता है। कचरे को जलाना और भी खतरनाक हो जाता है यदि उसमें प्लास्टिक की वस्तुएँ हों। क्योंकि प्लास्टिक जलने पर जानलेवा गैसें निकलती हैं। सूरज बेटा मैं आपकी बात को प्रिंसीपल मैम तक अवश्य पहुँचाऊँगी और आगे से इस त्रुटि को सुधारा जाएगा।

तो बच्चो अब तक हम जिस समस्या पर चर्चा कर रहे थे क्या आप बता सकते हैं, इसे क्या कहते हैं?

(बच्चे समवेत् स्वर में)

बच्चेः– प्रदूषऽऽऽण ।

प्रतिभा मैमः– जी हाँ, प्रदूषण । और प्रदूषण के कई प्रकार हैंः– हम जिस पर बात कर रहे हैं वह वायु प्रदूषण है। वायु प्रदूषण से सांस की बीमारियाँ जैसे दमा, टी.बी. फेफड़ों का कैंसर, चमड़ी के रोग तथा दिमाग़ से संबंधित घातक रोग हो सकते हैं।

वायु प्रदूषण के मुख्य स्रोत हैं कारखानों, वाहनों, ईंटों की भट्ठियों से निकलने वाला धुआँ। इसके अलावा नगरों-महानगरों में भवन निर्माण, ध्वंस के कार्यों

से भी वातावरण में धूल फैलती है। जंगल और गाँव तेज़ी से सिकुड़ रहें हैं और उनकी जगह खड़े हो रहे हैं कंकरीट के जंगल यानि शहर। गाँवों में रसोई गैस की जगह उपलों की लकड़ी और कोयले को जलाया जाता है जो प्रदूषण फैलाते हैं। जंगलों को तेज़ी से वैध और अवैध रूप से काटा जा रहा है। जनसंख्या जिस तेजी से बढ़ी है उसमें ज़मीन और लकड़ी की आवश्यकता की पूर्ति जंगलों को काटकर की जा रही है, जो भविष्य के लिए एक बड़ा खतरा है।

टैरेंसः- तो मैम इसमें क्या हम कुछ कर सकते हैं ?

प्रतिभा मैमः- बहुत अच्छा सवाल पूछा है टैरेंस। हम छोटी-छोटी बचत करके अपना योगदान दे सकते हैं बिजली बनाने में ईंधन का प्रयोग होता है। कागज़ के लिए पेड़ो की छाल प्रयोग में आती है। हम बिजली का आनावश्यक प्रयोग न करें। कागज़ ज़ाया न करें। एक स्थान पर जाने के लिए अलग-अलग गाड़ियों का प्रयोग न करें। सिग्नल पर इंजन बंद करें। यथा संभव पैदल चलने और साइकिल को प्राथमिकता दें। बड़े पैमाने पर पेड़ लगाएँ जो ऑक्सीजन के बड़े स्रोत हैं। लगे हुए पेड़ों की रक्षा करें, उनको खाद-पानी दें और बाकी सबको भी इस बारे में जागरुक करें।

तो पृथ्वी पर जीवन को बचाने के लिए हमें सबसे पहले वायु को स्वच्छ करना होगा। क्या करना होगा?

(सभी बच्चे समवेत् स्वर में)

बच्चेः- वायु को स्वच्छ रखना होगा।

अभ्यास कार्य

कठिन शब्दों के अर्थ-

फुसफुसाहट - अत्यंत धीमे स्वर में बात करना, खुसर-फुसर।

समवेत् - एक स्वर में, सबका एक साथ बोलना

परिस्थितियां - हालात

त्रुटि - गलती

स्रोत - किसी वस्तु के मिलने का ज़रिया, उद्गम स्थान

श्रुतलेख-

परिस्थितियाँ, प्लास्टिक, समवेत, अवैध, प्राथमिकता, जागरुक, ध्वंस, स्वच्छ

प्रश्नोत्तरी-

1. जीवन के लिए सबसे आवश्यक वस्तु क्या है?
2. वायु प्रदूषण के क्या-क्या कारण हैं?
3. साँस लेते हुए हम कौन सी हवा अंदर लेते हैं?
4. कचरे को किस प्रकार समाप्त करना चाहिए?
5. वैक्यूम क्लीनर के लाभ और कमियाँ क्या हैं?
6. वायु प्रदूषण की रोकथाम के लिए हम क्या योगदान दे सकते हैं?

सही और गलत बताएँ-

1. कचरे को जलाकर समाप्त करना चाहिए। [ ]
2. प्रदूषित वायु से साँस के रोग होते हैं। [ ]

3. शहरों को 'कंकरीट के जंगल' भी कहा जाता है। [ ]

4. कार्बन मोनोक्साइड एक ज़हरीली गैस है। [ ]

5. पेड़ ऑक्सीज़न का एक मुख्य स्रोत है। [ ]

पर्यायवाची अर्थात् समान अर्थ वाले शब्द बताएँ-

1. वायु - हवा
2. पानी - ....
3. रोग - ....
4. नगर - ....
5. परिस्थितियाँ - ....

'फुसफुसाना' एक ध्वनिपरक शब्द है जो फुस-फुस ध्वनि से बना है। ऐसे कुछ और शब्द बताएँ।

आपने पाठ में अंग्रज़ी के 'ऽ' आकार से मिलता जुलता एक चिन्ह शब्दों में लगा देखा होगा जैसे 'प्रदूषऽऽऽण' यह 'प्लुत' स्वर का चिन्ह है। शिक्षक से ह्स्व, दीर्घ और प्लुत स्वरों को समझें।

रचनात्मक कार्य / योग्यता विस्तार

एकांकी एक अंक का नाटक होता है, जिसमें लगभग एक ही दृश्य में वह समाप्त हो जाता है। शिक्षक की सहायता से नीचे दी गई विधाओं और उनकी परिभाषाओं को समझिए और कुछ अन्य विधाओं को जानिए-

नाटक - मंच पर अभिनय द्वारा किसी विषय का प्रस्तुतीकरण जो कई अंकों और दृश्यों का होता है।

कविता - एक पद्यात्मक रचना जिसमें कम शब्दों में अपनी बात को छंद या छंदमुक्त ढंग से रखा जाए।

जीवनी - अपने या किसी के जीवन के कुछ पहलुओं को याद कर लिखा गया लेख।

रिपोर्ताज - किसी खबर या घटना का ब्यौरा समाचार पत्र, पत्रिका अथवा प्रसारण द्वारा प्रस्तुत।

कहानी - जीवन के किसी एक पहलू पर कल्पनात्मक गद्य रचना जिसे एक बैठक में पढ़ा जा सके।

निबंध - सीमित आकार में सामग्री एकत्र कर निजी विचारों की अभिव्यक्ति।

डायरी - अपने अनुभवों को प्रतिदिन या कुछ दिनों के अंतराल पर लगातार किसी पुस्तिका या डायरी में लिखते रहना

आत्मकथा - अपने संपूर्ण जीवन की कथा को स्वयं लिखना।

यात्रा वृत्तान्त - यात्रा में हुए अनुभवों का लेखा-जोखा।

उपन्यास - किसी पात्र के लगभग संपूर्ण जीवन की कथा की कल्पना के आधार पर लिखी बृहत रचना जिसमें पात्रों और पृष्ठों की संख्या असीमित होती है।

पाठ में आए सभी पात्रों का स्थन लेते हुए विद्यार्थी शिक्षक की सहायता से कक्षा में एकांकी 'सबसे पहले' का वाचन या मंचन करें।

X9C2M1

5 शीतल देवी

बच्चो आपने फ्रांस के लुई ब्रेल का नाम तो सुना होगा, जिन्होंने आँखें न होने के बावजूद ब्रेल लिपि का आविष्कार किया, जिसे हाथों के स्पर्श से पढ़ा जा सकता है। आपने अपने क्षेत्र जम्मू और कश्मीर के संदीप सिंह का नाम भी सुना होगा जिन्होंने अपनी दोनों बाजू हादसे में गँवा दीं पर पैराएथलीट बनकर प्रदेश और देश को गौरवान्वित किया। आइए ऐसी अनगिनत साहसी जीवनियों में से एक जीवन की यात्रा पर चलते हैं। (पृष्ठभूमि)

साहस की पराकाष्ठा व्यक्ति को सफलता की ऊंचाइयों तक पहुँचा देती है। उसके लिए कोई भी कार्य असाध्य नहीं होता। उसका साहस असाध्य कार्य को भी साध्य कर देता है। ऐसी एक साहस का उदाहरण शीतल देती हैं। इनका जन्म 10 जनवरी 2007 में जम्मू कश्मीर के किश्तवाड़ ज़िले के दूरदराज़ गांव लोई धर में एक गरीब परिवार में हुआ था। शीतल के पिता मान सिंह एक किसान हैं और माँ शक्ति देवी घर में बकरियाँ सँभालती हैं। छोटी बहन शिवानी स्कूल में पढ़ती है। गरीब परिवार की इस बेटी का जीवन जन्म से ही संघर्षपूर्ण रहा। 16 साल की शीतल के जन्म से ही हाथ नहीं थे। शीतल फ़ोकोमेलिया नाम की बीमारी से जन्मजात पीड़ित है। इस बीमारी में अंग पूरी तरह से विकसित नहीं हो पाते हैं। हालांकि बाज़ू का न होना शीतल के लिए अभिशाप नहीं बन पाया। शीतल को पढ़ने का बड़ा शौक था। वह अफसर बनना चाहती थी। उन्होंने परिवार और दोस्तों के सहयोग से अपनी पढ़ाई में अच्छा प्रदर्शन किया। सेना ने शीतल को बचपन से ही गोद लिया था। सेना के एक अधिकारी ने कटरा स्थित माता वैष्णों देवी श्राइन बोर्ड तीरंदाजी अकादमी के कोच कुलदीप वेदवान को शीतल के बारे में बताया। बस यहीं से शीतल के जीवन

की दिशा बदल गई। शीतल के लिए विशेष धनुष तैयार करवाया गया, जिसे हाथ से नहीं बल्कि पैर से चलाया जाता। उन्होंने तीरंदाज़ी करना शुरु की। शीतल स्कूल से ट्रेनिंग पर जाती। शीतल बिना दोनों बाजू के सिर्फ छाती के सहारे दांतों और पैर से तीरंदाज़ी का अभ्यास करतीं। ट्रेनिंग के शुरुआती दिनों में वह धनुष तक नहीं उठा पाती थी लेकिन उसने दाएँ पैर से धनुष उठाने का अभ्यास किया। दो साल की कड़ी ट्रेनिंग के बदौलत ही शीतल ने जीत हासिल की। शीतल को, दुनिया के पहले बिना हाथों के तीरंदाज़ अमेरिका के मैट स्टुट्जमैन के विडियो भी दिखाए गए। वह शीतल से मिलने भी आए थे और उन्हों ने शीतल का धनुष भी देखा और उन्होंने इसमें कुछ परिवर्तन की सलाह भी दी। अभिलाषा चौधरी और कुलदीप वेदवान इनके कोच हैं। 2021 में बतौर तीरंदाज़ करियर की शुरुआत करने वाली शीतल ने पहली बार किश्तवाड़ में भारतीय सेना की एक प्रतियोगिता में हिस्सा लिया। 2022 में पहली बार जूनियर नेशनल ओलंपिक में हिस्सा लिया, शीतल ने खेलो इंडिया में एक रजत पदक जीता। महिला खेलो इंडिया गेम्स में कांस्य पदक, चेक गणराज्य में एक टूर्नामेंट में दो रजत पदक और एक कांस्य पदक जीता। 2023 में चीन में आयोजित एशियन पैरा गेम्स में शीतल दो स्वर्ण और एक रजत पदक जीतने वाली पहली भारतीय महिला बनी। उनकी इन उपलब्धियों को देखते हुए 1 जनवरी 2024 को उन्हें राष्ट्रपति द्वारा 'अर्जुन पुरस्कार' से सम्मानित किया गया।

इस प्रकार एक दूरदराज़ क्षेत्र में जन्मी शीतल देवी ने अदम्य साहस से कई बाधाओं से जूझते हुए अपने लक्ष्य को प्राप्त करने का उदाहरण भी युवा पीढ़ी को दिया है। हमें भारत की इस बेटी के ऊपर बहुत गर्व है जिसने पूरे संसार में अपने देश का नाम रोशन किया है।

अभ्यास

प्रश्न 1. शब्दार्थ

(क)

शब्द – अर्थ

पीड़ित – जो पीड़ा से ग्रस्त हो ।

विकसित – खिला हुआ, प्रगति को प्राप्त

अभिशाप – बड़ा शाप, बद्दुआ, मुसीबत

स्वर्ण – सोना

प्रतियोगिता – जद्दोजहद, होड़, प्रतिद्वंद्विता

संघर्ष – टकराव (जैसे दो दलों में संघर्ष)

रजत – चाँदी

अभिलाषा– मन की चाह, कामना

(ख)

श्रुतलेखः– संघर्षपूर्ण, विकसित, अधिकारों, ट्रेनिंग, तीरंदाज, ओलंपिक्स, आयोजित, प्रतियोगिता, अभिलाषा, दूरदराज, अकादमी ।

प्रश्न 2. पाठ को समझें :-

बहुविकल्पीय प्रश्नः –

(क)

(क) शीतल का जन्म कब हुआ ?

(क) 2007 (ख) 2008 (ग) 2009 (घ) 2010

(ख) शीतल किस बीमारी से पीड़ित हैं?

(क) चेचक (ख) पोलियो (ग) फ़ोकोमेलिया (घ) ज्वर

(ग) शीतल ने पहली बार नेशनल ओलंपिक्स में कब हिस्सा लिया ?

(क) 2020 (ख) 2021 (ग) 2022 (घ) 2024

(घ) शीतल के पिता क्या हैं?

(क) किसान (ख) डॉक्टर (ग) अध्यापक (घ) सैनिक

(ङ) शीतल धनुष कैसे चलाती हैं?

(क) हाथ से (ख) पैर से (ग) जीभ से (घ) नाक से

(ख) प्रश्न उत्तर :-

मौखिक प्रश्नः-

(क) शीतल का जन्म कहाँ हुआ था?

(ख) शीतल के पिता क्या काम करते हैं?

(ग) शीतल किस बीमारी से पीड़ित हैं?

(घ) शीतल ने कितने स्वर्ण पदक जीते?

(ङ) शीतल को अर्जुन पुरस्कार कब मिला ?

(ग) लिखित प्रश्न :-

(क) शीतल का जन्म किस परिवार में हुआ था?

(ख) अमेरिका के तीरंदाज का क्या नाम था?

(ग) शीतल ने पहली बार ओलंपिक्स में कब हिस्सा लिया?

(घ) शीतल ने एशियन पैरा गेम्स में कितने मैडल जीते?

(घ) रिक्त स्थान भरिए :-

(क)..............................और...........................शीतल के कोच हैं।

(ख) शीतल के जन्म से दो ....नहीं हैं।

(ग) शीतल ने .... स्वर्ण जीते हैं।

(घ) शीतल को..................................पुरस्कार राष्ट्रपति ने प्रदान किया।

प्रश्न 3. भाषा को समझें: -

(क) विलोम शब्द

(क) अभिशाप - वरदान

(ख) गरीब - अमीर

(ग) अभ्यास - अनाभ्यास

(घ) जन्म - मरण

(ड) गाँव - शहर

(ख) पयार्यवाची शब्द :-

(क) जन्म –उत्पत्ति, उद्‌भव, उदय ।

(ख) अर्जुन– पार्थ, गांडीवधर, कुन्तिसुत

(ग) अभिलाषा – कामना, मनोरथ, इच्छा ।

(घ) धनुष – धनु, शरासन, पिनाक ।

(ड) जीवन – ज़िंदगी, प्राण

(ग) अनेक शब्दों के लिए एक शब्द :-

(क) जो तीर चलाता हो – तीरंदाज ।

(ख) जो सेना में हो–सैनिक

(ग) जो भारत में रहता हो – भारतीय।

(घ) जीने की इच्छा – जिजीविषा।

(ड) सबसे पहले गिना जाने वाला – अग्रगण्य ।

(घ) निम्नलिखित वाक्यों में संज्ञा, सर्वनाम चुनिए :-

(क) शीतल का जन्म किश्तवाड़ में हुआ।

(ख) उसके पिता किसान हैं।

(ग) उसकी माँ बकरियाँ संभालती हैं।

(घ) वह पैर से तीर चलाती है।

प्रश्न 4. रचनात्मक कार्य:– बच्चे अपने शिक्षक की सहायता से किसी अन्य दिव्यांग जन के बारे में पाँच वाक्य लिखें।

प्रश्न 5. निम्न गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर, नीचे दिए गए प्रश्नों के उत्तर लिखें:–

शीतल के पिता किसान हैं। उसकी माँ घर में बकरियाँ संभालती हैं। शीतल की उम्र सोलह साल है। शीतल फ़ोकोमेलिया बीमारी से पीड़ित है। शीतल बिना दोनों बाज़ू सिर्फ छाती के सहारे दांतों और पैर से तीरंदाजी का अभ्यास करती हैं। अभिलाषा चौधरी और कुलदीप वेदवान उसके कोच हैं। एशियन पैरा गेम्स में दो स्वर्ण और एक रजत पदक जीता।

प्रश्न:–शीतल के पिता क्या काम करते हैं?

उत्तर:–...

प्रश्न:–शीतल कितने वर्ष की है?

उत्तर:–...

प्रश्न:–शीतल किसके सहारे तीरंदाज़ी का अभ्यास करती है?

उत्तर:–...

प्रश्न:–शीतल के कोच कौन हैं?

उत्तर:–...

प्रश्न:–शीतल ने पैरा गोम्स में कितने पदक जीते?

उत्तर:–...

J6T1H8

6 'माँ, कह एक कहानी'

"बेटा, समझ लिया क्या तूने
मुझको अपनी नानी ?"
"कहती है मुझसे यह बेटी,
तू मेरी नानी की बेटी!
कह माँ, कह, लेटी ही लेटी
राजा था या रानी ?
माँ, कह एक कहानी !"

"तू है हठी मानधन मेरे,
सुन उपवन में बड़े सबेरे,
तात भ्रमण करते थे तेरे,
जहाँ सुरभि मनमानी।"
"जहाँ, सुरभि मनमानी।
हाँ, माँ यही कहानी !"

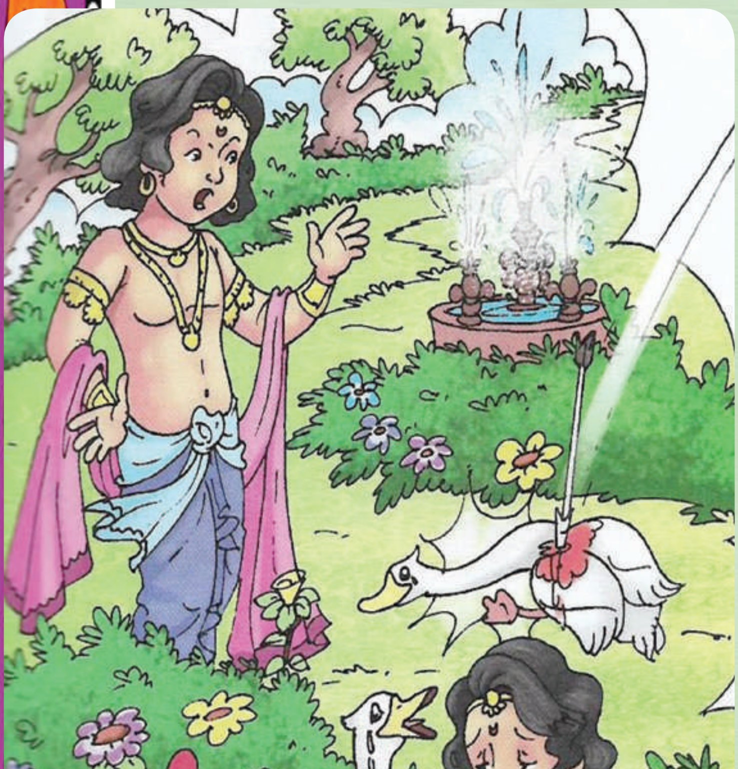

वर्ण-वर्ण के फूल खिले थे,
झलमल कर हिम- बिन्दु झिले थे,
हलके झोंके हिले-मिले थे,
"लहराता था पानी।
हाँ-हाँ, यही कहानी।"

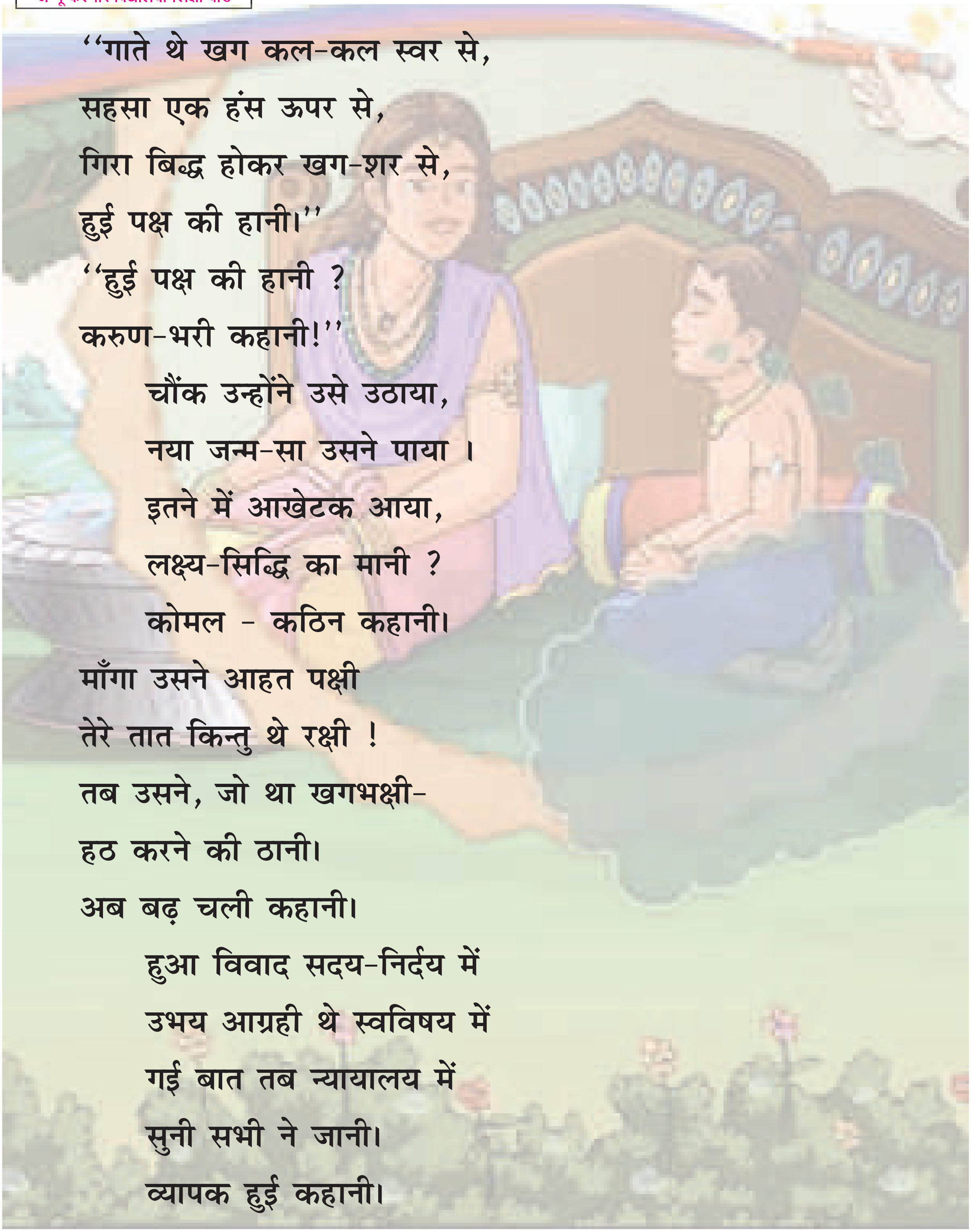

''गाते थे खग कल-कल स्वर से,
सहसा एक हंस ऊपर से,
गिरा बिद्ध होकर खग-शर से,
हुई पक्ष की हानी।''
''हुई पक्ष की हानी ?
करुण-भरी कहानी!''

चौंक उन्होंने उसे उठाया,
नया जन्म-सा उसने पाया ।
इतने में आखेटक आया,
लक्ष्य-सिद्धि का मानी ?
कोमल - कठिन कहानी।

माँगा उसने आहत पक्षी
तेरे तात किन्तु थे रक्षी !
तब उसने, जो था खगभक्षी-
हठ करने की ठानी।
अब बढ़ चली कहानी।

हुआ विवाद सदय-निर्दय में
उभय आग्रही थे स्वविषय में
गई बात तब न्यायालय में
सुनी सभी ने जानी।
व्यापक हुई कहानी।

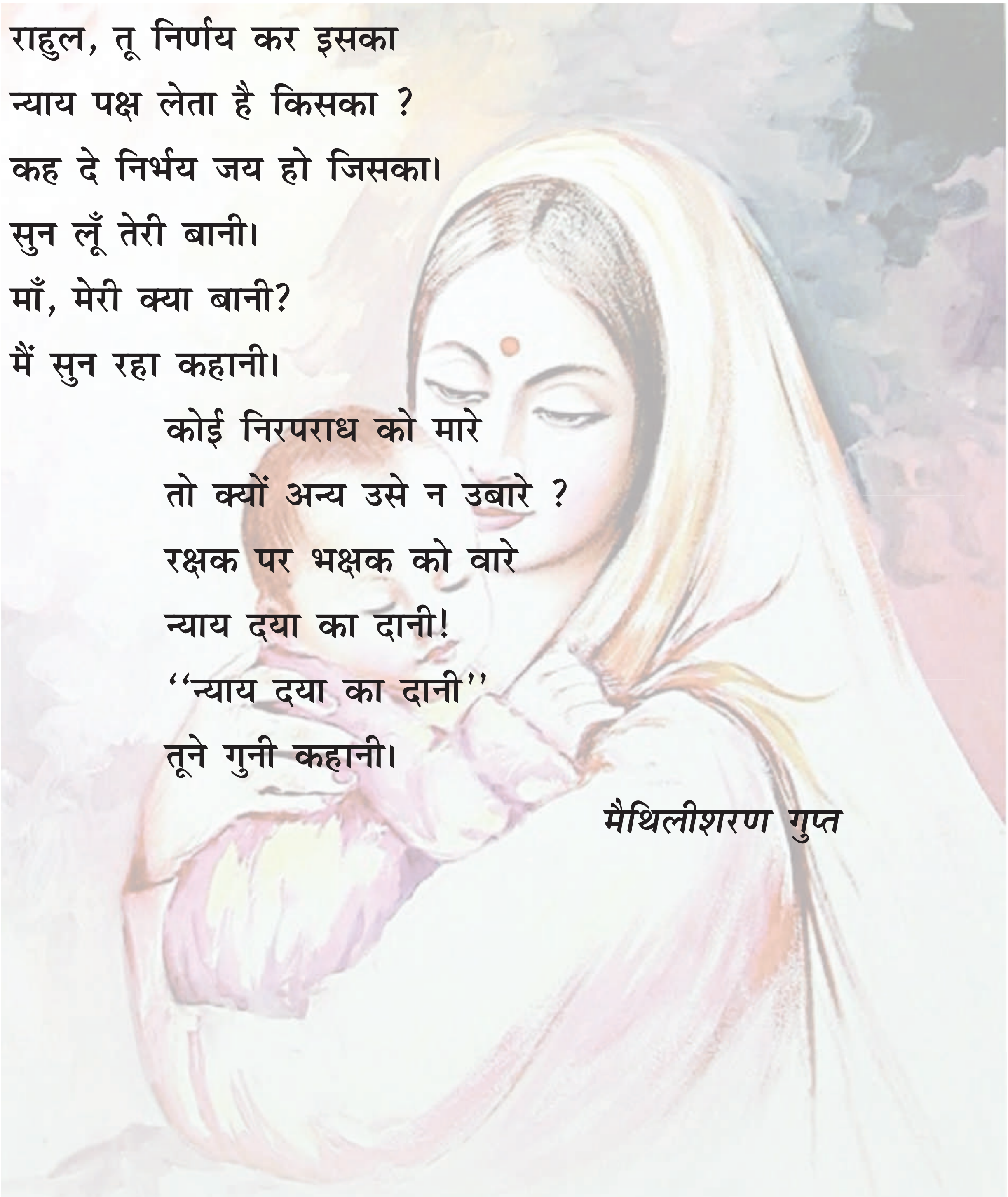

राहुल, तू निर्णय कर इसका
न्याय पक्ष लेता है किसका ?
कह दे निर्भय जय हो जिसका।
सुन लूँ तेरी बानी।
माँ, मेरी क्या बानी?
मैं सुन रहा कहानी।

कोई निरपराध को मारे
तो क्यों अन्य उसे न उबारे ?
रक्षक पर भक्षक को वारे
न्याय दया का दानी!
''न्याय दया का दानी''
तूने गुनी कहानी।

मैथिलीशरण गुप्त

अभ्यास

प्र. 1 शब्दार्थ :-

तात – पिता

भ्रमण – सैर

सुरभि – सुगंध

वर्ण – रंग

हिम – बर्फ़

खग – पक्षी

बिद्ध – तीर से बिंधकर/घायल होकर

लक्ष्य – उद्देश्य

कोमल – नाज़ुक

कठिन – मुश्किल

हठ – ज़िद

विवाद – झगड़ा

उभय – दोनों

न्यायालय – अदालत

निर्णय – फैसला

निर्भय – बिना डरे

प्र. 2 मौखिक प्रश्न

क) क्या आपने गौतम बुद्ध के बारे में सुना है?

ख) गौतम बुद्ध का असली नाम क्या था?

ग) इन्होंने विश्व को कौन सा मुख्य संदेश दिया है?

प्र. 3 कविता के आधार पर निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखें

1) प्रस्तुत कविता तथा कवि का नाम क्या है?

....

2) कौन किसे कहानी सुनाने का हठ कर रहा है।?

....

3) 'बेटा समझ लिया क्या तूने मुझको अपनी नानी' माँ ने बेटे को ऐसा क्यों कहा?

....

4) सिद्धार्थ को उपवन में किस प्रकार का दृश्य देखने को मिला?

....

प्र. 4 लघु प्रश्नोत्तर :-

1) राहुल कौन था?

2) राहुल क्या सुनाने की ज़िद कर रहा था?

3) राहुल की माँ ने कौन सी कहानी सुनाई?

4) सिद्धार्थ ने घायल हंस का क्या किया?

5) हंस पर अधिकार के लिए रक्षक व भक्षक कहाँ गए?

प्र. 5 सही/गलत बताएं :-

1) सिद्धार्थ के चचेरे भाई ने हंस को घायल कर दिया।

2) सिद्धार्थ घायल पक्षी को देखकर खुश हुआ।

3) रक्षक-भक्षक का विवाद महाराजा के पास पहुँचा।

4) न्याय पक्ष में रक्षक की विजय हुई।

प्र. 6 पक्षी-प्रेम या न्याय संबंधी किसी घटना या कहानी का कक्षा में वर्णन करके उसे लिखें।

प्र. 7 श्रुतलेख :-

तात, भ्रमण

खग, लक्ष्य, बिद्ध

कठिन, उभय, न्यायालय

निर्णय, निर्भय

प्र. 8 पठित गद्यांश के आधार पर स्वयं समझकर एक प्रश्नावली बनाइए :-

'बेटा, समझ लिया क्या तूने मुझको अपनी नानी'?
कहती है मुझसे यह बेटी,
तू मेरी नानी की बेटी।
कह माँ, कह, लेटी ही लेटी
राजा था या रानी?

7 नन्हा फ़नकार

M5Y8N7

वह लड़का एक चौकोर लाल पत्थर के पास बैठ गया। उसने जल्दी–जल्दी कोई प्रार्थना बुदबुदाई और छेनी–हथौड़ा उठाकर अपने काम में जुट गया।

कुछ दिन पहले ही उसने इस पत्थर पर घंटियों की कतारें और कड़ियाँ उकेरना शुरू किया था। लड़के ने एक अधबनी अधूरी घंटी पर छेनी की नोक टिकाई और सावधानीपूर्वक हथौड़े से घंटी पर नक्काशी करने में जुट गया।

हथौड़े के वार से पत्थर पर जो कटाव उभरता उससे पत्थर की किरचें छितरा जातीं और वह आँखें सिकोड़ लेता। साथ–साथ धीमी आवाज़ में वह कुछ गुनगुनाने भी लगता। उसके चारों ओर दूसरे संगतराश भी अपने–अपने काम में डूबे हुए थे।

केशव दस साल का था और अभी अपना काम सीख ही रहा था। पिता के एक बार करके दिखा देने पर वह सीधी लकीरों वाले और घुमावदार डिज़ाइन उकेर सकता था। अब तक उसने नक्काशी का जो भी काम किया था उनमें से इन घंटियों को

बनाना ही सबसे ज़्यादा मुश्किल था। केशव जानता था कि एक दिन तो ऐसा ज़रूर आएगा जब वह बहुत बारीक जालियाँ, म्हीन–नफ़ीस बेल–बूटे, कमल के फूल, लहराते हुए साँप और इठलाकर चलते हुए घोड़े–ये सब पत्थर पर उकेर पाएगा... ठीक उसी तरह जैसे उसके पिता बनाते हैं।

कई साल पहले, जब वह पैदा भी नहीं हुआ था, उसके माता–पिता गुजरात से आगरा आकर बस गए थे। बादशाह अकबर उस वक्त आगरे का किला बनवा रहे थे और केशव के पिता को यहीं काम मिल गया। केशव का जन्म भी आगरे में ही हुआ था। उसे गुजरात के पुश्तैनी गाँव जाने का तो कभी मौका ही नहीं मिला। आगरे की गलियाँ और अब सीकरी– बस यही उसका घर थीं।

चारों ओर हो रही छेनी–हथौड़ों की ठक–ठक, खड़–खड़ के बीच केशव को किसी के कदमों की आहट भी न सुनाई पड़ी। इसलिए अचानक कानों में एक आवाज़ पड़ने पर वह चौंक गया माशा अल्लाह! ये घंटियाँ कितनी सुंदर हैं। तुमने खुद बनाई हैं?"

पीछे मुड़कर केशव ने आँखें उठाईं तो उसे एक आदमी दिखा।

"बेशक, मैंने ही ये घंटियाँ बनाई हैं। क्या मैं आपको पत्थरों पर नक्काशी करता नज़र नहीं आ रहा? देखते नहीं, मैं ही पत्थर को तराश रहा हूँ।" केशव ने बड़ी तल्खी

से जवाब दिया।

"दिखता तो है। पर तुम इतने छोटे लगते हो न..." वह आदमी हँसते हुए बोला।

"मैं दस साल का हूँ!"

"दस! अच्छा," वह आदमी पास पड़े पत्थर पर बैठते हुए बोला, "तब तो काफ़ी बड़े हो। मैंने भी तेरह साल की उम्र में एक लड़ाई में हिस्सा लिया था।"

अब केशव उस आदमी को अच्छी तरह देख पा रहा था। उसकी उम्र रही होगी तीस से उपर, कद मँझोला था। वह सफ़ेद अँगरखा और पाजामा पहने हुए था। उसके लंबे बाल गहरे लाल रंग की पगड़ी में अच्छी तरह से ढके हुए थे।

"लगता है कोई बहुत बड़ा आदमी है," केशव ने उस आदमी के गले में पड़ी बड़े–बड़े मोतियों की माला और उँगलियों की अँगूठियों को देखते हुए सोचा। तीखी नाक, बड़ी–बड़ी आँखें, होंठो को ढकते हुए नीचे की तरफ़ आती घनी मूँछें। केशव उस आदमी के व्यक्तित्व का मुआयना कर ही रहा था कि तभी उस आदमी ने एक नक्काशी की तरफ़ इशारा करते हुए कहा, इस लड़ी में अभी काफ़ी काम बाकी है।" इससे पहले कि केशव कोई जवाब देता, उसने किसी के तेज़ी से दौड़कर आने की आवाज़ सुनी। यह और कोई नहीं, महल का पहरेदार था। "हजूर! माफ़ करें। मुझे आपके आने का पता ही नहीं चला। हाँफते हुए उसने कहा। फिर वह मुड़कर भौंचक से खड़े केशव को घूरते हुए बोला, "बेवकूफ, खड़ा हो! हुजूरे आला के सामने बैठने की जुर्रत कैसे की तूने, झुककर सलाम कर इन्हें।"

अब केशव का माथा ठनका। उसे कुछ–कुछ समझ आ रहा था। बदहवासी में छेनी हाथ से छूटकर नीचे गिरी और वह जल्दी से उठकर खड़ा हो गया। अरे कहीं ये बादशाह अकबर तो नहीं! यह ख़याल आते ही उसने झुककर सलाम किया और

खरगोश की–सी कातर नजरों से अकबर को देखने लगा।

अकबर को पहरेदार की यह दखलंदाजी भली न लगी।

उन्होंने खीझकर पहरेदार को वहाँ से जाने का इशारा करते हुए कहा, "ठीक है सिपाही कुछ देर के लिए हमें अकेला छोड़ दो।"

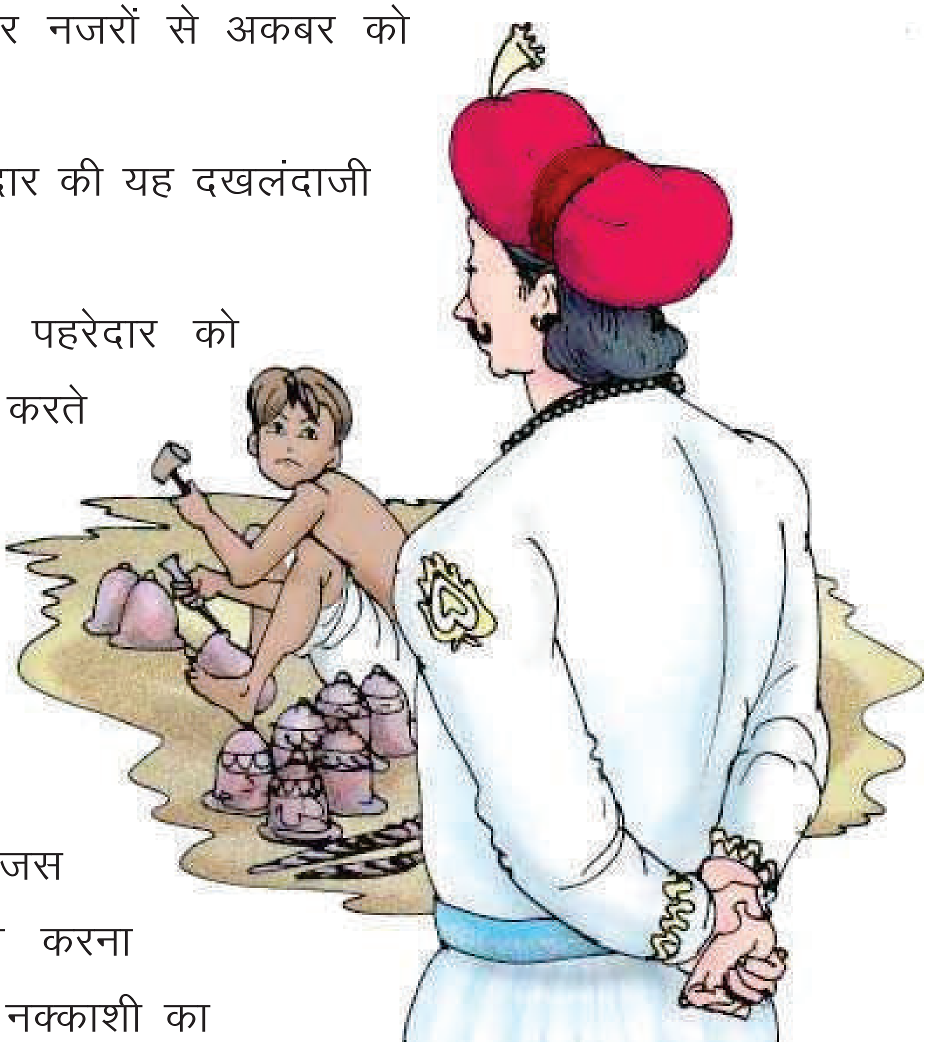

पहरेदार तो चला गया मगर केशव असमंजस में था कि उसे क्या करना चाहिए। वापिस अपना नक्काशी का काम शुरू करे या बादशाह के हुक्म के इंतज़ार में खड़ा रहे। दिल तो उसका अभी भी धक–धक कर रहा था। हाँ, पर अब वह डरा हुआ नहीं था क्योंकि अकबर प्यार से उसे देखते हुए मुस्करा रहे थे।

"तुम्हारा नाम क्या है?" अकबर ने नरम आवाज़ में पूछा।

"केशव," उसने नपा–तुला जवाब दिया।

"केशव, क्या तुम मुझे नक्काशी करना सिखाओगे?"

उलझन में पड़े केशव ने तुरंत सिर हिला दिया।

"तब तो तुम्हें मेरे लिए हथौड़े और छेनी का भी इंतज़ाम करना होगा।"

केशव फुर्ती से अपने पिता के पास भागा गया और उनका छेनी–हथौड़ा उठाकर उलटे पाँव लौट आया।

दोस्ताना अंदाज़ में अकबर केशव के पास ज़मीन पर बैठ गए और पास में पड़े पत्थर को खींचते हुए बोले, "ठीक है, अब बताओ कि मुझे क्या करना है।"

केशव ने संदेह भरी नज़रों से अकबर की ओर देखा "हुज़ूर, क्या आप यह सब करेंगे?"

"क्यों नहीं? मुझे तो विश्वास है कि मैं सीख ही लूँगा।"

"नहीं... नहीं... मेरा मतलब ये नहीं था," केशव सकपका गया। "दरअसल मैं कहना चाहता था कि आप इतने बड़े बादशाह हैं। ये ठीक नहीं लगता।"

उसने कुछ अनमने भाव से कहा।

अकबर हँसकर बोले, "अच्छा, लेकिन पिछले हफ्ते तो मैंने मिट्टी से भरी डलिया ढोने में किसी की मदद की थी। क्या यह काम उससे भी ज्यादा मुश्किल है?"

केशव अभी भी असमंजस की स्थिति में था। वह अकबर के पास बैठ गया और उन्हें छेनी पकड़ने का सही तरीका सिखाने लगा। फिर जैसे कि केशव के पिता ने उसे सिखाया था, उसने कोयले के टुकड़े से पत्थर पर लकीरें खींचकर एक आसान–सा नमूना बनाया और गंभीरता से कहा देखिए, सिर्फ़ इन्हीं लकीरों को बहुत ध्यान से तराशना है, अकबर ने पत्थर पर छेनी रखी और ज़ोर से हथौड़े से वार किया, जिससे कटाव ज़्यादा गहरा हो गया।

"अरे... अरे... नहीं, नहीं", केशव ने तुरंत गलती पकड़ी। हथौड़े को आहिस्ता से मारना है, ... ऐसे! उसने करके दिखाया, "और हाँ, अपनी आँखें थोड़ी मींचकर रखें

वरना किरचें उड़कर आँखों में चली जाएँगी।" अकबर मुस्कराए,

"जी हुज़ूर।"

जवाब में केशव भी मुस्करा उठा। वह लगभग भूल ही गया था कि उसकी बगल में बैठा यह व्यक्ति हिंदुस्तान का बादशाह है। एक अनाड़ी–से वयस्क पर अपने काम की धाक जमाने में उसे मज़ा आ रहा था। वह बड़े ध्यान से देख रहा था कि अकबर किस तरह लकीरों को उकेर रहे हैं। बादशाह से ज़रा–सी भी चूक हो जाने पर फ़ौरन उसकी त्यौरियाँ चढ़ जातीं।

काम करते–करते अकबर पूछ बैठते, "केशव, सही नहीं है क्या?" और केशव सिर हिलाकर अपनी असहमति जता देता।

अकबर इत्मीनान से बैठ गए और केशव को काम करता हुआ देखने लगे। अपने काम में खोए हुए उन दोनों को इस बात का एहसास नहीं हुआ कि आसपास मौजूद दूसरे संगतराश उन्हें बड़े कौतुहल से देख रहे हैं।

अकबर ने गौर किया कि केशव पत्थर पर बने नमूने को ही

नहीं तराश रहा था बल्कि अपनी तरफ से भी उनमें कुछ जोड़ रहा था जिससे वे डिज़ाइन ज्यादा खूबसूरत लग रहे थे।

लड़के के काम करने के अंदाज़ को देखकर अकबर ने धीमे से कहा, "केशव, देखना, एक दिन तुम बड़े फनकार बनोगे। हो सकता है कि एक दिन तुम मेरे कारखाने में काम करो।"

"कारखाना? कैसा कारखाना?"

"बस एक बार ये महल तैयार हो जाए और लोग आगरा से आकर यहाँ रहने लगें, तब मैं कारखाने बनवाऊँगा। इन कारखानों में मेरी सल्तनत के सबसे बढ़िया फनकार और शिल्पकार काम करेंगे। चित्र बनाने वाले कलाकार, गलीचों के बुनकर, संगतराश, पत्थर और लकड़ी पर नक्काशी करने वाले शिल्पकार सभी वहाँ काम करेंगे।

केशव का चेहरा चमक उठा। वह मुस्कराते हुए बोला, "मैं वहाँ ज़रूर काम करना चाहूँगा।"

अकबर उठ खड़े हुए। जाते हुए बड़े प्यार से केशव का कंधा थपथपाया और कहा, "अच्छा बेटा, अपना काम जारी रखो।"

हुज़ूर! क्या आप दुबारा आएँगे? "केशव ने बड़ी उत्सुकता से पूछा।

"मैं ज़रूर आऊँगा केशव!"

फिर तो पूरे दिन संगतराशों के बीच केशव की धूम मची रही। वह बार–बार बादशाह से हुई अपनी मुलाकात सबको सुनाता रहा।

रात हो चली थी। केशव बहुत थका हुआ था, पर आँखों में नींद

कहाँ? वह धीरे–से अपने पिता के बिस्तर में घुस गया। पिता ने मुस्कराकर कहा, "तुम तो अभी से इतने प्रसिद्ध हो गए हो।"

"बादशाह सलामत ने कहा है कि एक दिन मैं बहुत बड़ा कलाकार बनूँगा।" अपने सिर को पिता की बाँहों के सहारे टिकाकर केशव धीरे–से बोला, "हमारे बादशाह बहुत ही नेक इंसान हैं।" "बिल्कुल सही।" पिता ने कहा। कुछ सोचकर केशव ने पूछा, "बाबा, एक बात बताओ, बादशाह के पास आगरा में एक से बढ़कर एक खूबसूरत महल हैं। फिर वे सीकरी में यह शहर क्यों बनवा रहे हैं?"

पिता ने कुछ याद करते हुए बताना शुरू किया, '' हाँ बेटा, बादशाह का आगरा बहुत सुंदर शहर है। पर सीकरी में नया शहर बनवाने का भी एक खास कारण है। मैंने सुना है कि जब बादशाह अकबर की कोई संतान नहीं थी। इस वजह से वे हर वक्त परेशान रहते थे। वे बहुत से साधु–संतों और फ़कीरों के पास गए। भटकते–भटकते बादशाह ख्वाजा सलीम चिश्ती के पास सीकरी आए। उन्होंने ही बादशाह को बताया कि उनके एक नहीं तीन–तीन संतानें होंगी।"

"शाहज़ादा सलीम, मुराद और दनियाल" केशव ने चहकते हुए कहा।

"बिल्कुल सही। तब बादशाह ने ख्वाजा सलीम चिश्ती के सम्मान में सीकरी में नगर बसाने का फ़ैसला किया था।"

केशव ने कहा, "अच्छा! अब समझा। इसीलिए बादशाह अकबर

ने अपने बेटे का नाम सलीम रखा है।"

"हाँ, और इसी कारण हम यहाँ एक नए शहर के लिए पत्थरों को तराश रहे हैं।"

"हुँ ऽऽऽ" केशव उनींदी आवाज़ में बोला।

पिताजी ने देखा कि उनका लाडला बेटा सो गया है।

केशव की घंटियाँ

1. "माशा अल्लाह! ये घंटियाँ कितनी सुंदर हैं! तुमने खुद बनाई हैं?"

   बादशाह अकबर ने यह बात किसलिए कही होगी–

   (क) केशव के काम की तारीफ़ में

   (ख) यह जानने के लिए कि घंटियाँ कितनी सुंदर हैं

   (ग) केशव से बातचीत शुरू करने के लिए

   (घ) घंटियाँ किसने बनाई, यह जानने के लिए

   (ङ) क्योंकि उन्हें यकीन नहीं था कि 10 साल का बच्चा केशव इतनी सुंदर घंटियाँ बना सकता है।

   (च) कोई और कारण जो तुम्हें ठीक लगता हो।

2. केशव पत्थर पर घंटियाँ तथा कड़ियाँ तराश रहा था। उसके द्वारा तराशी जा रही घंटियों और कड़ियों का चित्र अपनी कॉपी में बनाओ। तुम्हें क्या कोई खास इमारत याद आ रही है जिसमें नक्काशी की गई हो। संभव हो तो उसकी तस्वीर चिपकाओ।

आना–जाना

केशव के पिता गुजरात से आगरा आकर बस गए थे। हो सकता है तुम या तुम्हारे कुछ साथियों के माता–पिता भी कहीं और से यहाँ आकर बस गए हों। बातचीत करके पता लगाओ कि ऐसा करने के क्या कारण होते हैं?

कहानी से

3. अकबर को पहरेदार की दखलंदाज़ी अच्छी क्यों नहीं लगी?
4. "लगता है कोई बहुत बड़ा आदमी है", यहाँ पर 'बड़े आदमी' से केशव का क्या मतलब है?
5. "खरगोश की–सी कातर आँखें"
   पशु–पक्षियों से तुलना करते हुए और भी बहुत–सी बातें कही जाती हैं जैसे–'हिरन जैसी चाल'। ऐसे ही कुछ उदाहरण तुम भी बताओ।
6. अकबर ने जब नक्काशी सीखना चाहा, तो केशव ने उन्हें संदेहभरी नज़रों से क्यों देखा?
7. केशव दस साल का है। क्या उसकी उम्र के बच्चों का इस तरह के काम से जुड़ना ठीक है? अपने उत्तर के कारण ज़रूर बताओ।
8. "केशव बार–बार सबको सुनाता।"
   केशव सबसे क्या कहता होगा? कल्पना करके केशव के शब्दों में लिखो।

शब्दों की निराली दुनिया

1. (क) नक्काशी जैसे किसी एक काम को चुनो (बढ़ईगिरि, मिस्त्री

इत्यादि) जिसमें औज़ारों का इस्तेमाल होता है। उन ख़ास औज़ारों के नाम और काम पता करके लिखो।

(ख) छैनी, हथौड़ा, तराशना, किरचें–ये सब पत्थर के काम से जुड़े हुए शब्द हैं। लकड़ी के दुकानदार और बढ़ई से बात करके लकड़ी के काम से जुड़े शब्द इकट्ठे करो और कक्षा में उन पर सामूहिक रूप से बातचीत करो। कुछ शब्द हम यहाँ दे रहे हैं। आरी, रंदा, बुरादा, प्लाई, सूत

(ग) हो सकता है कि तुम्हारे इलाके में इन चीज़ों और कामों के लिए कुछ अलग किस्म के शब्द इस्तेमाल होते हों। उन पर भी बातचीत करो।

2. 'कटाव' शब्द 'कट' क्रिया से पैदा हुआ है। नीचे लिखी संज्ञाएँ किन क्रियाओं से बनी हैं? इन संज्ञाओं का अर्थ समझो और वाक्य में प्रयोग करो। चुनाव, पड़ाव, बहाव, लगाव

3. "लड़के ने जल्दी–जल्दी कोई प्रार्थना बुदबुदाई।" रेखांकित शब्द और नीचे लिखे शब्दों में क्या अंतर है? वाक्य बनाकर अंतर स्पष्ट करो।

फुसफुसाना बड़बड़ाना भुनभुनाना

4. ''बेवकूफ़, खड़ा हो। हुजूरे आला के सामने बैठने की जुर्रत कैसे की तूने! झुककर इन्हें सलाम कर।''

महल के पहरेदार ने केशव से यह इसीलिए कहा, क्योंकि–

(क) बादशाह के सामने बैठे रहना उनका अपमान करने जैसा है।

(ख) पहरेदार यह कहकर अपनी वफ़ादारी दिखाना चाहता था।

(ग) पहरेदार को बादशाह के आने का पता नहीं चला, इसीलिए वह घबरा गया था।

(घ) बादशाह का केशव से बात करना पहरेदार को अच्छा नहीं लगा।

शब्द-अर्थ :-

कतारें - पंक्तियाँ

उकेरना - खोदना, उभारना

फुर्ती-तेज़ी

तीव्र-तेज़ गति

व्यस्क-बालिग

महीन-पतला, बारीक

चूक-भूल

नफीस-सुन्दर

इत्मीनान-आराम से

तल्खी-कड़वाहट

कौतुहल-आश्चर्य

कातर-बेबस

श्रुतलेख :-

चौकोर, छेनी-हथौड़ा, घंटियों, कड़ियाँ, नक्काशी, संगततराश, घुमावदार, पुश्तैनी, मँझोला, अंगरखा, हुजूरे आला, दखलंदाजी, असमंजस, गंभीरता, हिन्दुस्तान, इत्मीनान, फ़नकार, शिल्पकार।

बहुविकल्पीय प्रश्न :-

1. केशव हथौड़े से किस पर नक्काशी कर रहा था?

क) लाल पत्थर पर   ख) मूर्ति पर

ग) घंटी पर   घ) कपड़े पर

2. केशव के माता–पिता कहाँ से आकर आगरा में बस गए थे?

क) दिल्ली ख) गुजरात

ग) केरल घ) पंजाब

3. इस लड़ी में अभी काफी काम बाकी है' यह बात केशव को किसने कही ?

क) अकबर ने ख) केशव के पिता ने

ग) पहरेदार ने घ) किसी ने भी नहीं

4. बादशाह अकबर सीकरी में किसके पास आये थे?

क) ख्वाजा सलीम चिश्ती ख) साधु संतों के पास

ग) फ़कीरों के पास घ) किसी के पास भी नहीं

प्रश्न–उत्तर :-

मौखिक प्रश्न

प्र.1 केशव कहाँ पर बैठा हुआ था?

प्र.2 केशव अधबनी अधूरी घंटी पर छेनी से क्या कर रहा था?

प्र.3 केशव का जन्म कहाँ पर हुआ था?

प्र.4 बादशाह अकबर जब जाने लगे तो केशव ने उन्हें क्या कहा था?

लिखित प्रश्न :-

प्र.1 केशव क्या काम करता था?

प्र.2 अकबर को पहरेदार की दखलंदाजी क्यों अच्छी नहीं लगी?

प्र.3 अकबर सीकरी में नया शहर क्यों बनवा रहे थे?

प्र.4 अकबर ने जब नक्काशी सीखना चाही तो केशव ने क्यों उन्हें संदेह भरी नज़रों से देखा?

सही गलत चुनिए :-

1. केशव बहुत बारीक जालियाँ, महीन-नफीस बेल-बूटे, कमल के फूल और लहराते हुए सांपों की नक्काशी करना चाहता था।
2. केशव के पास आया आदमी पहरेदार था।
3. केशव अपना हुनर अकबर को नहीं सिखाना चाहता था।
4. केशव के माता-पिता आगरा में ही रहते आये थे।

रचनात्मक कार्य :-

"खरगोश की-सी कातर आँखें"

पशु-पक्षियों से तुलना करते हुए और भी बहुत सी बातें कही जाती हैं जैसे 'हिरन जैसी चाल' ऐसे ही कुछ उदाहरण आप भी बताइए।

ZZK3D3

8 कदंब का पेड़

यह कदंब का पेड़ अगर माँ होता यमुना तीरे।
मैं भी उस पर बैठ कन्हैया बनता धीरे-धीरे।।
ले देतीं यदि मुझे बांसुरी तुम दो पैसे वाली।
किसी तरह नीची हो जाती यह कदंब की डाली ।।
तुम्हें नहीं कुछ कहता पर मैं चुपके-चुपके आता।
उस नीची डाली से अम्माँ ऊँचे पर चढ़ जाता।।
वहीं बैठ फिर बड़े मजे से मैं बांसुरी बजाता।
अम्माँ-अम्माँ कह वंशी के स्वर में तुम्हें बुलाता।।

सुन मेरी बंसी को माँ तुम कितनी खुश हो जातीं।
मुझे देखने काम छोड़कर तुम बाहर तक आतीं।।
तुम को आती देख बाँसुरी रख में चुप हो जाता।
एक बार माँ कह पत्तों में धीरे से छिप जाता।।

तुम हो चकित देखती चारों ओर न मुझ को पातीं ।
व्याकुल- सी हो तब कदंब के नीचे तक आ जातीं ।
पत्तों का मरमर स्वर सुन जब ऊपर आँख उठातीं।
मुझे देख ऊपर डाली पर कितनी घबरा जातीं ।

गुस्सा होकर मुझे डाँटती कहती नीचे आजा,।
पर जब मैं न उतरता हँसकर कहती मुन्ना राजा ।
नीचे उतरो मेरे भैया तुम्हें मिठाई दूँगी ।
नए खिलौने ,माखन, मिश्री, दूध, मलाई दूँगी।

कवयित्री 'सुभद्राकुमारी चौहान'

अभ्यास

1. पढ़ें और लिखें :-

कदंब	कन्हैया	बाँसुरी	व्याकुल	हँसकर	हृदय
आँचल	विनती	खिलौने	दूध	मिश्री	मलाई

2. शब्दार्थ :-

तीरे – किनारे

स्वर – आवाज़

टहनी – शाखा, डाली

माखन – मक्खन

अम्माँ – माँ / माता

गुस्सा – क्रोध

3. लघु प्रश्न :-

(1) कदंब का पेड़ किस नदी के किनारे है?

(2) बच्चा कदंब के पेड़ पर बैठकर क्या बनना चाहता है?

(3) बच्चा कहाँ बैठ कर बाँसुरी बजाना चाहता है और वहाँ से किस को बुलाना चाहता है ?

(4) बच्चा कहाँ छिपना चाहता है?

(5) माँ हँसकर बच्चे को क्या कह कर पुकारती है ?

4. दीर्घ प्रश्न :-

(1) बच्चा कहाँ और किस पर बैठकर कन्हैया बनने की बात कर रहा है?

(2) बच्चा किस को बुला रहा है और क्यों ?

(3) पेड़ से नीचे उतारने के लिए माँ बच्चे को क्या-क्या देने की बात करती करती है ?

5. किसने, किसको, क्यों कहा :-

(1) यह कदंब का पेड़ अगर माँ होता यमुना तीरे ।

(2) सुन मेरी बंसी को माँ तुम कितनी खुश हो जाती।

(3) गुस्सा होकर मुझे डाँटती, कहती नीचे आजा।

6. रिक्त स्थान भरें :-

1) मैं भी उस पर बैठ..बनता धीरे-धीरे।

2) वहीं बैठ फिर बड़े मज़े से मैं....................................बजाता।

3) व्याकुल- सी हो तब ....के नीचे तक आ जाती।

4) पर जब मैं न उतरता हँसकर कहती......................................।

7. सही (✓) और गलत (×) का निशान लगाएँ :-

1) ले देती यदि मुझे बाँसुरी तुम दस पैसे वाली। ( )

2) अम्माँ-अम्माँ कह वंशी के स्वर में तुम्हें नहीं बुलाता ( )

3) मुझे देखने काम छोड़कर तुम बाहर तक आती ( )

4) मुझे देख ऊपर डाली पर कितनी खुश हो जाती ( )

8. खेल-खेल में

पढ़िए, शब्दों की अन्त्याक्षरी समझिए।

अमर → रकम → मकान → नमक → कमर → रात → तोता

9. रचनात्मक कार्य

बच्चे कदंब के पेड़ का चित्र यहाँ चिपकाएँ–

श्रीकृष्ण जी का चित्र बनाएँ जिसमें वह बाँसुरी बजा रहे हो। (बच्चे प्रयास करें)

10. व्याकरण कार्य

(क) लिंग बदलें -

पुल्लिंग – स्त्रीलिंग

पिता –

बेटा –

भाई –

अध्यापक –

नायक –

(ख) वचन बदलें –

एकवचन – बहुवचन

बाँसुरी –

डाली –

पत्ता –

आँख –

खिलौना –

मिठाई –

(ग) पर्यायवाची शब्द –

पेड़ –

माँ –

तीर –

आँख –

गुस्सा –

दूध –

G4S3S5

9 ब्रिगेडियर राजेंद्र सिंह

ब्रिगेडियर राजेंद्र सिंह जम्वाल, एमवीसी (14 जून 1899-26/27 अक्टूबर 1947), जिन्हें कश्मीर के उद्धारकर्ता के रूप में भी याद किया जाता है, जम्मू और कश्मीर राज्य बलों में एक अधिकारी थे। उन्होंने कुछ समय के लिए राज्य बलों के चीफ़ ऑफ़ स्टाफ़ के रूप में कार्य किया और प्रथम कश्मीर युद्ध के दौरान लड़ते हुए उनकी मृत्यु हो गई। राजेंद्र सिंह और उनके लगभग 200 लोगों की छोटी टुकड़ी ने उड़ी के पास पाकिस्तानी आदिवासी हमलावरों की एक बड़ी सेना को आगे बढ़ने में कई दिनों तक सफलतापूर्वक देरी की, जिसके दौरान कश्मीर के महाराजा ने भारत में विलय कर लिया और भारतीय सेना कश्मीर की रक्षा के लिए हवाई मार्ग से रवाना हुई।

30 दिसंबर 1949 को उन्हें मरणोपरांत महावीर चक्र से सम्मानित किया गया, जो स्वतंत्र भारत का दूसरा सबसे बड़ा सैन्य सम्मान है। वह यह सम्मान पाने वाले पहले भारतीय थे। राजेंद्र सिंह का जन्म 14 जून 1899 को बागूना गांव (अब राजिंदरपुरा, सांबा ज़िला) में एक सैन्य डोगरा परिवार में हुआ था। उनके पूर्वज जनरल बाज सिंह की महाराजा गुलाब सिंह के अधीन सेवा करते हुए मृत्यु हो गई थी। उनके दादा हमीर सिंह और पिता सूबेदार लाखा सिंह दोनों युद्ध के अनुभवी थे। राजेंद्र सिंह का पालन-पोषण उनके चाचा लेफ्टिनेंट कर्नल गोविंद सिंह ने किया था, क्योंकि वह छोटे बच्चे थे। सिंह 1921 में जम्मू

के प्रिंस ऑफ़ वेल्स कॉलेज (अब जीजीएम साइंस कॉलेज) से पास हुए। राजेंद्र सिंह को 14 जून 1921 को जम्मू और कश्मीर राज्य बल में सेकंड लेफ्टिनेंट के रूप में नियुक्त किया गया था। 25 सितंबर 1947 को, उन्होंने मेजर जनरल एचएल स्कॉट से जम्मू और कश्मीर राज्य बलों के सेनाध्यक्ष के रूप में कार्यभार संभाला।

सितंबर 1947 में, पाकिस्तान ने श्रीनगर पर कब्ज़ा करने के उद्देश्य से कश्मीर में हमले की तैयारी शुरू कर दी। 21/22 अक्टूबर की रात को, बड़ी संख्या में पाकिस्तानी नियमित और आदिवासी अनियमित लोग मुजफ्फ़राबाद के पास एकत्र हुए। वे कस्बे में स्थित महाराजा हरि सिंह की सेना की चौथी जम्मू-कश्मीर बटालियन के मुस्लिम सैनिकों को भड़काने में सफल रहे। मुस्लिम सैनिकों ने विद्रोह कर दिया, वज़ीर-ए-वज़ारत दुनी चंद मेहता और प्रभारी कर्नल नारायण सिंह संब्याल और बेस पर मौजूद अन्य सभी डोगरा सैनिकों को मार डाला। इससे श्रीनगर का 180 किलोमीटर का रास्ता असुरक्षित हो गया, हालांकि श्रीनगर की ओर आगे बढ़ने के बजाय, पाकिस्तान के हमलावरों ने मुजफ्फ़राबाद पर धावा बोल दिया। धावे की खबर अगले दिन ही महाराजा तक पहुँची। 22 अक्टूबर 1947 को, महाराजा हरि सिंह ने अपने सेनाध्यक्ष, ब्रिगेडियर राजेंद्र सिंह को भारतीय सैनिकों के आने तक राज्य की रक्षा करने का आदेश दिया कि उन्हें ऐसा करते हुए मृत्यु तक लड़ना चाहिए, 'अंतिम आदमी तक राज्य को बचाएं और आखिरी गोली'। जब हरि सिंह ने ब्रिगेडियर राजिंदर सिंह को आदेश दिया तो करण सिंह कमरे में मौजूद थे और उस घटना को याद करते हुए कहते हैं, 'ब्रिगेडियर राजेंद्र सिंह को मेरे पिता ने आदेश दिया था और वह सिर्फ सलाम करके चले गए।'

बादामी बाग छावनी और आस-पास के प्रतिष्ठानों के 150-260 पुरुषों और अधिकारियों के साथ, पुराने हथियारों से लैस (हालांकि कुछ खतों में कहा गया है कि ब्रिगेडियर के पास दो-इंच मोर्टार और एमएमजी थे) और निजी

वाहनों का उपयोग करते हुए, ब्रिगेडियर राजिंदर शाम 6:30 बजे श्रीनगर से निकले और 23 अक्टूबर 1947 को सुबह 2 बजे उड़ी पहुंचे। ब्रिगेडियर राजेंद्र सिंह एक छोटी पलटन के साथ आगे बढ़े, और उड़ी में हमलावरों से लड़ने के बाद, उन्हें जल्द ही एहसास हुआ कि उनकी सेना उनके मुकाबले काफी कम थी। हमलावरों के पास बेहतर हथियार भी थे।

23 अक्टूबर को, हरि सिंह ने कैप्टन ज्वाला सिंह के माध्यम से ब्रिगेडियर राजेंद्र सिंह को एक आदेश भेजा, 'ब्रिगेडियर राजेंद्र सिंह को उड़ी में दुश्मन को हर कीमत पर और आखिरी आदमी तक पकड़ने का आदेश दिया गया है। 23 अक्टूबर की रात को कैप्टन ज्वाला सिंह थोड़ी संख्या में अतिरिक्त सेनाओं के साथ पहुँचे, जिसमें एक प्लाटून, एमएमजी का एक सेक्शन शामिल था; दो बंदूकें और 3 इंच मोर्टार (दो ट्यूब) का एक खंड और ब्रिगेडियर राजेंद्र सिंह ने 23 अक्टूबर को बारामूला से टेलीफोन द्वारा महाराजा हरि सिंह को मोर्चे की प्रत्यक्ष जानकारी देकर जवाब दिया। ब्रिगेडियर राजेंद्र सिंह ने हमलावरों को धीमा करने के लिए सूबेदार मेजर (माननीय कैप्टन) बरिता राम शर्मा को 25 पाउंड के चार्ज के साथ 24 अक्टूबर को उड़ी पुल को नष्ट करने का आदेश दिया। हालाँकि राजेंद्र सिंह के लोगों को एक और रक्षात्मक स्थिति के लिए महुरा की ओर वापस जाना पड़ा, वे रात 10 बजे महुरा पहुँचे। महुरा में बचाव तब हुआ जब दुश्मन ने 25 अक्टूबर की सुबह हमले को फिर से शुरू करने का फैसला किया। राजेंद्र सिंह ने भी लोगों को ऊपर की ओर पुलों को उड़ाने का आदेश दिया, लेकिन इससे पहले कि पुलों को नष्ट किया जाता, कुछ हमलावर पहले ही पार कर चुके थे। राजेंद्र सिंह ने एक बार फिर अपने आदमियों को पीछे हटने का आदेश दिया और उन्हें बोनियार के पास रामपुर ले गए, जहां रात भर रक्षात्मक स्थिति बनाई गई। 26 तारीख की सुबह दुश्मन ने एक और हमला किया। बचाव फिर से प्रभावी रहा और हमलावरों की आवाजाही फिर से रोक दी गई। शाम ढलने पर ब्रिगेडियर सिंह ने बारामूला

के करीब सेरी की ओर वापसी का आदेश दिया। 27 अक्टूबर को सुबह 1 बजे दीवान मंदिर, बोनियार में पीछे हट रहे वाहनों पर हमला किया गया और काफिला रुक गया। ब्रिगेडियर का ड्राइवर जल्द ही मारा गया इसलिए ब्रिगेडियर ने खुद गाड़ी चलाई, हालाँकि इसके तुरंत बाद वह भी घातक रूप से घायल हो गए। ब्रिगेडियर ने अपने लोगों को योजनाबद्ध रक्षात्मक रणनीति के साथ आगे बढ़ने का आदेश दिया और उसे वहीं छोड़ दिया जहां वह था। उनके लोगों ने अगले दिन तक लड़ाई जारी रखी, लेकिन जल्द ही लगभग सभी मारे गए। हालाँकि ब्रिगेडियर और उनके लोगों के कारण हमलावरों को लगभग 4 दिनों की देरी हुई, जो राजनयिक निर्णय लेने और भारतीय सेना के आने के लिए पर्याप्त थी।

30 दिसंबर 1949 को, जम्मू-कश्मीर में वीरता के कार्य के लिए, राजेंद्र सिंह को मरणोपरांत भारत के पहले महावीर चक्र से सम्मानित किया गया था।

इनके पैतृक गृहनगर बागूना का नाम बदलकर राजिंदरपुरा किया गया। बागूना, सांबा और कैनाल हैड में इनके नाम पर पार्क बने हैं। जम्मू विश्वविद्यालय में इनके नाम पर सभागार है।

26 अक्टूबर 1947 को उड़ी-रामपुर सैक्टर में शहीद इस महान व्यक्तित्व को कश्मीर के उद्धारकर्ता के रूप में याद किया जाता है।

अभ्यास

प्रश्न 1. शब्दार्थ :-

उद्धारकर्ता – मुक्ति दिलाने वाला

युद्ध – लड़ाई

हमलावर – आक्रमणकारी

विलय – शामिल होना

मरणोपरांत – मरने के बाद

सम्मान – आदर, इज़्ज़त

कब्ज़ा – अधिकार

हमला – आक्रमण

राहत – मुक्ति

दुश्मन – शत्रु

फैसला – निर्णय

प्रश्न 2. मौखिक

क) ब्रिगेडियर राजेन्द्र सिंह जम्वाल का जन्म कब हुआ था?

ख) ब्रिगेडियर राजेन्द्र सिंह किस राज्य के निवासी थे?

ग) इनका जन्म कहाँ पर और किस परिवार में हुआ था?

घ) इन्होंने किस कॉलेज से पढ़ाई की थी ?

प्रश्न 3 निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर पाठ के आधार पर लिखें :-

(क) ब्रिगेडियर राजेन्द्र सिंह का 'उपनाम' क्या है?

....

(ख) राजेन्द्र सिंह को क्यों सम्मानित किया गया ?

....

(ग) बिग्रेडियर राजेन्द्र सिंह के जीवन परिचय पर पाँच पंक्तियाँ लिखें।

....

(घ) कश्मीर पर किस देश / आक्रमणकारी ने कब्ज़ा करने के उद्देश्य से हमला किया था ?

....

(ङ.) किन महाराजा के आदेशों का पालन ब्रिगेडियर साहब कर रहे थे ?

....

(च) ब्रिगेडियर के पैतृक गृहनगर का नाम पहले क्या था और अब (वर्तमान) में क्या है?

....

प्रश्न 4 रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए :-

ब्रिगेडियर......................................जिन्हें कश्मीर के................................ ....के रूप में भी...................।..में एक अधिकारी थे। उन्होंने....................................के लिए राज्य बलों के.......... .... के रूप में भी कार्य किया।

प्रश्न 5 उत्तर के सही विकल्प पर (✓) चिह्न लगाइए।

(क) ब्रिगेडियर राजेन्द्र सिंह का जन्म हुआ था :

(1) 26 जून 1880 (2) 27 अगस्त 1890

(3) 14 जून 1899 (4) 15 जून 1900

(ख) राजेन्द्र सिंह की सैन्य टुकड़ी में सैनिक थे :

(1) 100 (2) 200

(3) 300 (4) 400

(ग) पाकिस्तान ने श्रीनगर पर कब हमला किया ?

(1) 1974 (2) 1948

(3) 1950 (4) इनमें से कोई नहीं।

(घ) उन्हें किस रूप में याद किया जाता है?

(1) ब्रिगेडियर के रूप में

(2) वीर नायक के रूप में

(3) कश्मीर के उद्धारकर्ता के रूप में

(4) महाराजा के सैनिक के रूप में

(ड) उन्हें किस सम्मान से सम्मानित किया गया?

(1) शौर्य चक्र (2) परमवीर चक्र

(3) वीर चक्र (4) महावीर चक्र

(च) उनके पैतृक गृहनगर का वर्तमान नाम है:

(1) लंगेट (2) तरोर

(3) बगूना (4) राजेन्द्र पुरा

प्रश्न 6. ब्रिगेडियर राजेन्द्र सिंह की शौर्य गाथा पर दस वाक्य लिखें।

....

....

....

....

इति

M1I7U7

10 कबीर जी के दोहे

1) गुरु गोविन्द दोऊ खड़े, काके लागू पाए।
बलिहारी गुरु आपनों, जिन गोविन्द दियो बताए ।।

2) ऐसी वाणी बोलिए, मन का आपा खोय।
औरन को सीतल करे, आपहु सीतल होए।।

3) काल करे सो आज कर, आज करे सो अब।
पल में परलै होएगी, बहुरि करेगा कब ।।

4) जहाँ दया तहाँ धर्म है, जहाँ लोभ तहाँ पाप।
जहाँ क्रोध तहाँ पाप है, जहाँ क्षमा वहाँ आप।।

5) साईं इतना दीजिए, जा में कुटुम समाए।
मैं भी भूखा न रहुँ, साधु न भूखा जाए।।

6) बुरा जो देखन मैं चला, बुरा न मिलियो कोय।
जो दिल खोजा आपना मो से बुरा न कोय।।

7) पाँच पहर धन्धे गया, तीन पहर गया सोय।
एक पहर हरि नाम बिन, मुक्ति कैसे होय।।

8) दु:ख में सुमिरन सब करे, सुख में करे न कोय।
जो सुख में सुमिरन करे, तो दु:ख काहे को होय ।।

9) माला फेरत जुग भया, फिरा न मन का फेर ।
कर का मन का डारि दे, मन का मनका फेर ।।

10) लूट सके तो लूट ले, राम नाम की लूट ।
पाछे फिरे पछताओगे, प्रान जाहि जब छूट ।।

(1) श्रुतलेख -

गोविन्द बलिहारी वाणी शीतल काल धर्म जहाँ

सुमिरन क्षमा कुटुम्ब मुक्ति

(2) दीर्घ प्रश्नोत्तर -

1) कबीर जी ने पहले किसके पाँव पकड़ने की शिक्षा दी और क्यों?

2) कबीर जी ने कैसी वाणी बोलने को कहा ?

3) कबीर जी ने अपना कार्य कब करने की शिक्षा दी है?

(3) खाली स्थान भरें -

(1) जहाँ दया वहाँ..है ।

(2) जहाँ लोभ तहाँ..है।

3) जहाँ क्रोध तहाँ..है।

4) जहाँ क्षमा तहाँ..है।

5) पाँच पहर..गया।

6) तीन पहर गया..

7) एक पहर................................नाम बिन, मुक्ति कैसे होय ।

8) लूट सके तो लूट ले,.................................नाम की लूट।

(4) भाव स्पष्ट करें -

गुरु गोविन्द दोऊ खड़े, काके लागू पाए।
बलिहारी गुरु आपनों जिन गोविन्द दियो बताए ।।

दुःख में सुमिरन सब करे, सुख में करे न कोय।
जो सुख में सुमिरन करे, तो दुःख काहे को होय ।।

(5) रचनात्मक कार्य -

बच्चे कबीर जी का चित्र यहाँ चिपकाए या बनाने का प्रयास करे।

(आ)

सुमिरन	-	स्मरण
कुटुम	-	कुटुम्ब
प्रान	-	प्राण
दोउ	-	दोनों
काके	-	किसके

पाए	–	पाँव
परलै	–	प्रलय
कोहे	–	क्यों
डारि	–	डाल (फेंकना, छोड़ना)
पाछे	–	पीछे (बाद में)
आपना	–	अपना
सीतल	–	शीतल

(ख) कबीर जी का एक दोहा जो बच्चे को सबसे अच्छा लगे उसे यहाँ लिखें और कागज पर लिखकर कक्षा में भी लगाएँ।

ग) बच्चे को जो भी दोहा पसंद है उसे गाने का प्रयास करें। इन दोहों को अपनी प्रार्थना सभा में सुनाने का प्रयास करे।

6. पढें और समझे

क्	क	त्	त
ख्	ख	थ्	थ
ग्	ग	ध्	ध
घ्	घ	न्	न
च्	च	प्	प
ज्	ज	फ्	फ
ण्	ण	ब्	ब

भ्	᛫	व्	॰
म्	म	श्	श
य्	य	स्	स
र्	्/ ि	क्ष्	क्ष
ल्	ल	ष	ष

7. शब्दों को सही स्थान पर लिखिए (बिंदी (ं) और चन्द्र बिन्दु (ँ)

टाँग सुगंध चंचल गंगा कहाँ उँगली पहुँच यहाँ

कंस रंग चिड़ियाँ तिरंगा आँचल बंदर वहाँ कहाँ

बिंदी (ं) के शब्द	चन्द्र बिन्दु (ँ) के शब्द

8. अध्यापक/अध्यापिका जी की सहायता से कबीर जी के जीवन के बारे में संक्षेप निबन्ध लिखें।

9. विलोम शब्द

शब्द	विपरीत शब्द / विलोम शब्द
अमीर	----------------------
एक	----------------------
कटु	----------------------
गन्दा	----------------------
अपना	----------------------
अच्छा	----------------------

10 'संज्ञा' की परिभाषा और संज्ञा के भेद बताएँ।

11. 'सर्वनाम' की परिभाषा और सर्वनाम के भेद बताएँ।

11 पानी रे पानी

कहाँ से आता है हमारा पानी और फिर कहाँ चला जाता है हमारा पानी? हमने कभी इस बारे में कुछ सोचा है? सोचा तो नहीं होगा शायद, पर इस बारे में पढ़ा ज़रूर है। भूगोल की किताब पढ़ते समय जल–चक्र जैसी बातें हमें बताई जाती हैं। एक सुंदर–सा चित्र भी होता है, इस पाठ के साथ। सूरज, समुद्र, बादल, हवा, धरती फिर बरसात की बूँदें और लो फिर बहती हुई एक नदी और उसके किनारे बसा तुम्हारा, हमारा घर, गाँव या शहर। चित्र के दूसरे भाग में यही नदी अपने चारों तरफ़ का पानी लेकर उसी समुद्र में मिलती दिखती है। चित्र में कुछ तीर भी बने रहते हैं। समुद्र से उठी भाप बादल बनकर पानी में बदलती है और फिर इन तीरों के सहारे जल की यात्रा एक तरफ से शुरू होकर समुद्र में वापिस मिल जाती है। जल–चक्र पूरा हो जाता है।

यह तो हुई जल–चक्र की किताबी बात। पर अब तो हम सबके घरों में स्कूल में, माता–पिता के दफ़्तरों में, कारखानों और खेतों में पानी का कुछ अजीब–सा चक्कर सामने आने लगा है।

नलों में अब पूरे समय पानी नहीं आता। नल खोलो तो उससे पानी के बदले सूँ–सूँ की आवाज़ आने लगती है। पानी आता भी है तो बेवक्त। कभी देर रात को तो

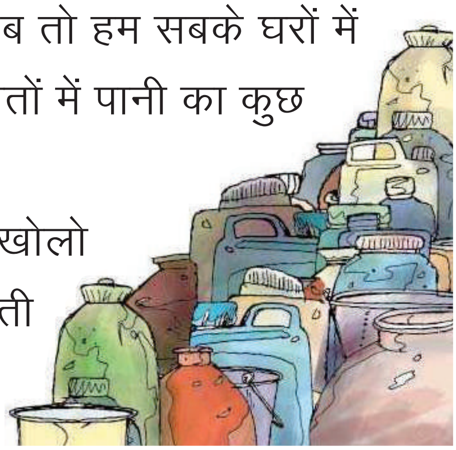

कभी भोर सवेरे। मीठी नींद छोड़कर घर भर की बाल्टियाँ, बर्तन और घड़े भरते फिरो। पानी को लेकर कभी—कभी, कहीं—कहीं आपस में तू—तू मैं—मैं, भी होने लगती है।

रोज़ —रोज़ के इन झगड़े—टंटों से बचने के लिए कई घरों में लोग नलों के पाईप में मोटर लगवा लेते हैं। इससे कई घरों का पानी खिंचकर एक ही घर में आ जाता है। यह तो अपने आस—पास का हक छीनने जैसा काम है। लेकिन मजबूरी मानकर इस काम को मोहल्ले में कोई एक घर कर बैठे तो फिर और कई घर यही करने लगते हैं। पानी की कमी और बढ़ जाती है। शहरों में तो अब कई चीज़ों की तरह पानी भी बिकने लगा है। यह कमी गाँव शहरों में ही नहीं बल्कि हमारे प्रदेशों की राजधानियों में और दिल्ली, मुंबई, कोलकाता, चेन्नई और बैंगलोर जैसे बड़े शहरों में भी लोगों को भयानक कष्ट में डाल देती है। देश के कई हिस्सों में तो अकाल जैसी हालत बन जाती है। यह तो हुई गर्मी के मौसम की बात।

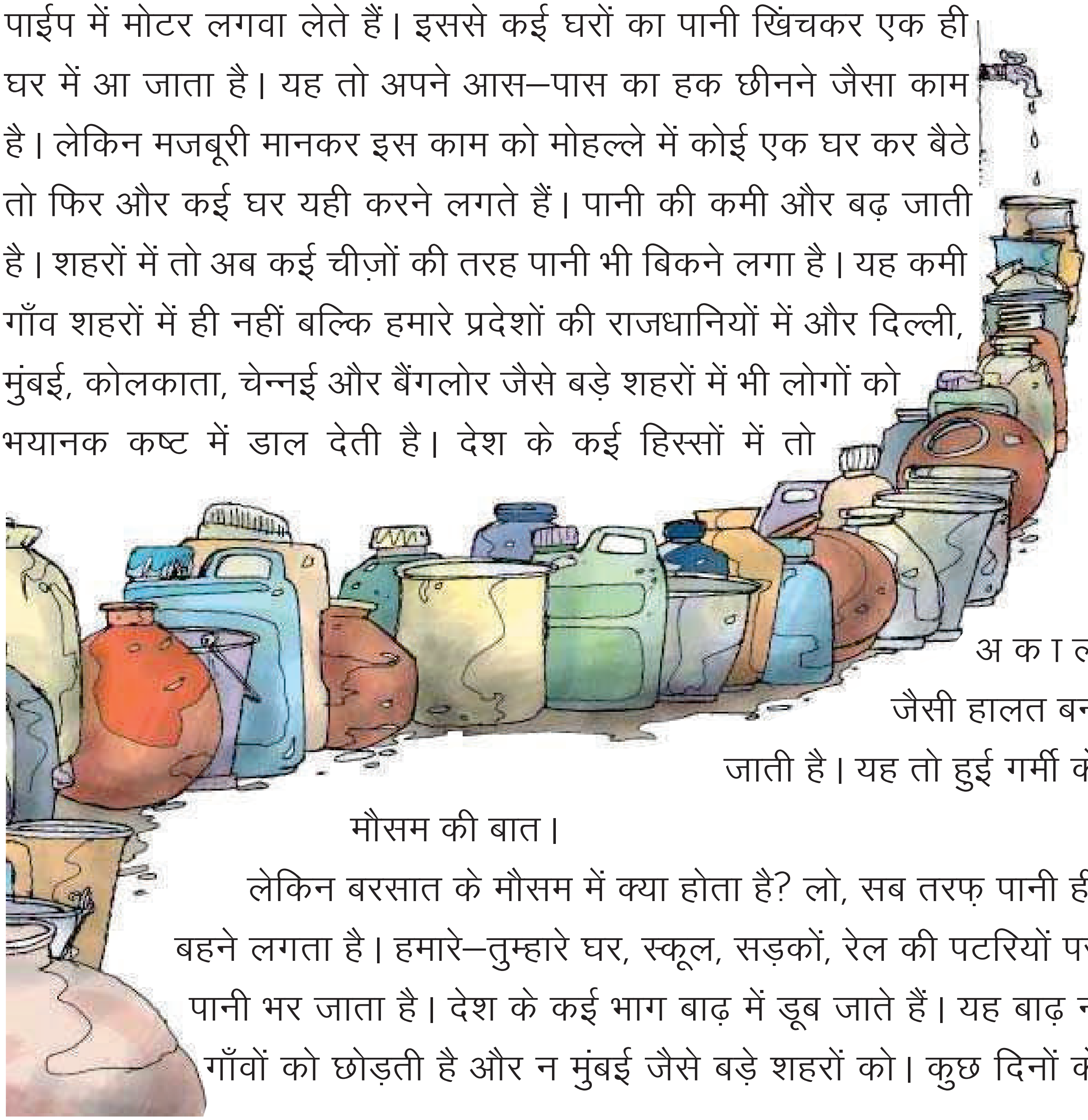

लेकिन बरसात के मौसम में क्या होता है? लो, सब तरफ़ पानी ही बहने लगता है। हमारे—तुम्हारे घर, स्कूल, सड़कों, रेल की पटरियों पर पानी भर जाता है। देश के कई भाग बाढ़ में डूब जाते हैं। यह बाढ़ न गाँवों को छोड़ती है और न मुंबई जैसे बड़े शहरों को। कुछ दिनों के

लिए सब कुछ थम जाता है, सब कुछ बह जाता है।

ये हालात हमें बताते हैं कि पानी का बेहद कम हो जाना और पानी का बेहद ज़्यादा हो जाना, यानी अकाल और बाढ़ एक ही सिक्के के दो पहलू हैं। यदि हम इन दोनों को ठीक से समझ सकें और सँभाल लें तो इन कई समस्याओं से छुटकारा मिल सकता है।

चलो, थोड़ी देर के लिए हम पानी के इस चक्कर को भूल जाएँ और याद करें अपनी गुल्लक को। जब भी हमें कोई पैसा देता है, हम खुश होकर, दौड़कर उसे झट से अपनी गुल्लक में डाल देते हैं।

हक की बात

आज़ादी के बाद (पिछले साठ वर्षों में) दिल्ली में पानी की औसत माँग या खपत लगभग तीन गुना बढ़ गई है। पर झुग्गी बस्तियों को अभी भी औसत खपत का 30 प्रतिशत पानी ही मिल पाता है। जब ज़रूरत के हिसाब से लोगों को पानी नहीं मिलता तो उनके हक छिनते हैं। हमारे समाज में ज़रूरतों से जुड़े और कौन–से मुद्दे हैं जहाँ हमें बराबरी का बँटवारा नहीं दिखाई देता और कई लोगों का हिस्सा छीनकर कुछ लोगों को दे दिया जाता है? कक्षा में और घर पर बड़ों के साथ चर्चा करो।

एक रुपया, दो रुपया पाँच रुपया, कभी सिक्के, तो कभी छोटे–बड़े नोट– सब इसमें धीरे–धीरे जमा होते जाते हैं। फिर जब कभी हमें कुछ पैसों की ज़रूरत पड़ती है तो इस गुल्लक की बचत का उपयोग कर लेते हैं।

हमारी यह धरती भी इसी तरह की खूब बड़ी गुल्लक है। मिट्टी की बनी इस विशाल गुल्लक में प्रकृति वर्षा के मौसम में खूब पानी बरसाती है। तब रुपयों से भी कई गुना कीमती इस वर्षा को हमें इस बड़ी गुल्लक में जमा कर लेना चाहिए। हमारे गाँव में, शहर में जो छोटे–बड़े तालाब, झील आदि हैं वे धरती की गुल्लक में पानी भरने का काम करते हैं। इनमें जमा पानी ज़मीन के नीचे छिपे जल के भंडार में

धीरे–धीरे रिसकर, छनकर जा मिलता है। इससे हमारा भूजल भंडार समृद्ध होता जाता है। पानी का यह खज़ाना हमें दिखता नहीं, लेकिन इसी खजाने से हम बरसात का मौसम बीत जाने के बाद पूरे साल भर तक अपने उपयोग के लिए घर में, खेतों में, पाठशाला में पानी निकाल सकते हैं।

लेकिन एक दौर ऐसा भी आया जब हम लोग इस छिपे खज़ाने का महत्व भूल गए और ज़मीन के लालच में हमने अपने तालाबों को कचरे से पाट कर, भर कर समतल बना दिया। देखते–ही–देखते इन पर तो कहीं मकान, कहीं बाज़ार, स्टेडियम और सिनेमा आदि खड़े हो गए। इस बड़ी गलती की सज़ा अब हम सबको मिल रही है। गर्मी के दिनों में हमारे नल सूख जाते हैं और बरसात के दिनों में हमारी बस्तियाँ डूबने लगती हैं। इसीलिए यदि हमें अकाल और बाढ़ से बचना है तो अपने आस–पास के जलस्रोतों की, तालाबों की और नदियों आदि की रखवाली अच्छे ढंग से करनी पड़ेगी। जल–चक्र हम ठीक से समझें, जब बरसात हो तो उसे थाम लें, अपना भूजल भंडार सुरक्षित रखें, अपनी गुल्लक भरते रहें तभी हमें ज़रूरत के समय पानी की कोई कमी नहीं आएगी। यदि हमने जल–चक्र का ठीक उपयोग नहीं किया तो हम पानी के चक्कर में फँसते चले जाएँगे।

अनुपम मिश्र

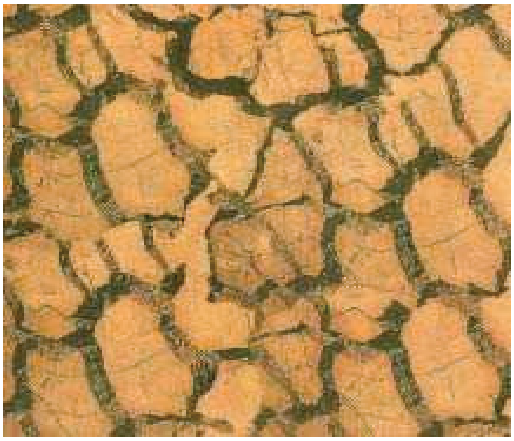

अभ्यास

शब्दार्थ-

तू-तू मैं-मैं	-	झगड़ा होना
मजबूरी	-	विवशता
मौसम	-	ऋतु
ज़रूरत	-	आवश्यकता
दौर	-	समय
विशाल	-	बड़ा
जलस्रोत	-	पानी के साधन
समृद्ध	-	उन्नत
समतल	-	बराबर

श्रुतलेख -

किताबी, दफ़्तरों, कारखानों, बाल्टियाँ, पटरियों गुल्लक,

समस्याओं, स्टेडियम, हिस्सा, प्रकृति

पाठ को समझें

1. सही उत्तर चुनकर (✓) लगाओ।

(क) समुद्र से उठी भाप पहले क्या बनती है?

(1) बादल ☐ (2) बूँद ☐

(3) हवा ☐ (4) जल चक्र ☐

(ख) झुग्गी बस्तियों को कितने प्रतिशत पानी मिल पाता है?

(1) 20 प्रतिशत ☐ (3) 30 प्रतिशत ☐

(2) 40 प्रतिशत ☐ (4) 50 प्रतिशत ☐

(ग) पानी के संकट का मुख्य कारण क्या है ?

(1) बाढ़ के कारण ☐ (3) अकाल के कारण ☐

(2) नदियों का बहना ☐ (4) पानी की फ़िजूलखर्ची ☐

(घ) झगड़ों से बचने के लिए लोग क्या करते हैं?

(1) नलों की पाईप में मोटर लगवाते हैं। ☐

(2) मार–पिटाई करते हैं। ☐

(3) दूसरों के नल से पानी भरते हैं। ☐

(4) पुलिस के पास शिकायत दर्ज़ करते हैं। ☐

2. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए :-

(मौखिक)

(क) तुम्हारे घर में पानी कहाँ से आता है?

(ख) क्या तुम्हारे इलाके में कभी बाढ़ आई है? यदि हाँ तो उसके बारे में बताएँ।

(ग) तुम्हारे घर का मैला पानी बहकर कहाँ जाता है?

(घ) क्या तुम्हारे मोहल्ले में रोज़मर्रा की जरूरतें पूरी करने के लिए

लोगों को पानी खरीदना पड़ता है?, यदि हाँ, तो बताओ कि तुम्हारे घर में रोज़ औसतन कितने लीटर पानी खरीदा जाता है? इस पर कितना खर्चा होता है ?

लिखित :-

(क) अपने घर के नल के पाइप में मोटर लगवाना दूसरों का हक छीनने के बराबर है। लेखक ऐसा क्यों मानते हैं

(ख) धरती की गुल्लक किन-किन साधनों से भरती है ?

(ग) बड़ी संख्या में इमारतें बनने से बाढ़ और अकाल का खतरा कैसे पैदा होता है ?

(घ) पाठ में पानी के संकट के किस प्रमुख कारण की बात की गई है?

(ङ) जितना उपलब्ध है, उससे कहीं ज़्यादा खर्च करने से पानी का संकट उत्पन्न होता है। क्या यही बात हम बिजली के संकट के बारे में भी कह सकते हैं? विस्तार से लिखिए।

(घ) जलचक्र किसे कहते हैं? इसके बारे में विस्तार से लिखिए।

भाषा को समझें :-

1 दिए गए शब्दों से नए शब्द बनाइए-

(क) जय – विजय, पराजय, जयमाल, जयहार

(ख) मत – ....

(ग) मान – ....

(घ) जन – ....

2. दिए गए शब्दों के दो-दो पर्यायवाची लिखिए-

(क) पानी .... (ग) तालाब ....

(ख) हवा .... (घ) खुशबू ....

3. कुछ शब्दों के एक से अधिक अर्थ होते हैं, उन्हें 'अनेकार्थी' कहते हैं

दिए गए शब्दों के दो-दो अर्थ लिखिए

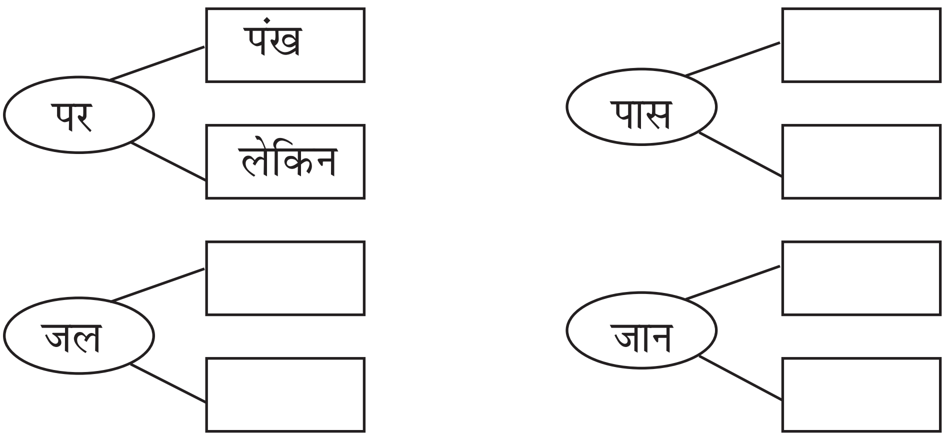

4. नीचे दिए गए वाक्य पढ़िए-

* अधिक वर्षा के लिए कौन ज़िम्मेदार है?

* पानी के बारे में कोई परेशानी ?

* नहीं, मैं जल की फ़िज़ूलखर्ची नहीं करता।

इन वाक्यों में कौन, कोई, मैं इत्यादि सर्वनाम शब्द हैं । इन सर्वनाम शब्दों को

निम्न तीन भेदों से समझा जा सकता हैं।

जिस सर्वनाम से किसी के बारे में निश्चित जानकारी न हो वे 'अनिश्चयवाचक सर्वनाम' कहलाते हैं। जैसे कुछ, कोई आदि।

कुछ जानने या प्रश्न पूछने के लिए जिन शब्दों का प्रयोग किया जाए, वे 'प्रश्नवाचक सर्वनाम' कहलाते हैं। जैसे कौन, क्या आदि।

जिन सर्वनाम शब्दों का प्रयोग अपने लिए किया जाए, वे 'निजवाचक सर्वनाम' कहलाते हैं। जैसे- स्वयं, खुद आदि।

इन वाक्यों में से सर्वनाम चुनकर उनके भेद का नाम लिखिए-

वाक्य	सर्वनाम	भेद
क) मैं तो स्वयं काम करता हूँ।		
ख) बाढ़ सब कुछ तबाह कर देती है।		
ग) बरसात के मौसम में क्या होता है।		

(5) सही मुहावरे चुनकर वाक्य पूरे कीजिए।

(क) मेरी मेहनत पर तुमने..दिया।

(ख) राम की विपदा सुनकर मेरी आँखों में...............................आया।

(ग) मिठाई देखकर भोलू के मुँह में....................................आया।

(घ) अपनी गलती के कारण शीला भरी सभा में.............................. ....हो गई।

- मुँह में पानी आना
- पानी–पानी होना
- पानी भर आना
- पानी फेरना

रचनात्मक

1 पानी की समस्या या बचत से संबंधित पोस्टर या नारे तैयार करो

U9E7B4

12 योग और व्यायाम का महत्व

प्रिय बच्चों आज हम इस अध्याय में आपको योग और व्यायाम के महत्व के बारे में जानकारी देंगे। हमारा स्वास्थ्य ही हमारे लिए कीमती चीज़ है। अनजाने में हम इसकी उचित देखभाल की जानकारी न होने पर इसे रोगी बना देते हैं। आजकल हम वैसे भी वायुमंडलीय दबावों, प्रदूषण की दिन-ब-दिन बढ़ती चली जा रही समस्याओं, ज़हरीले रसायनों के अधिक प्रयोग से ज़हरीले खानपान की समस्याओं व साफ पानी प्राप्त होने में आने वाली समस्याओं से जूझ रहे हैं। इसके साथ ही पूरा विश्व समय-समय पर आने वाली प्राकृतिक आपदाओं से भी जूझता रहता है। अभी-अभी सारा विश्व कोरोना जैसी महामारी से जूझ है और अभी भी जूझ रहा है।

तो फिर हमें कैसे इन विपदाओं से अपनी रक्षा करनी है। कि हमारा शरीर स्वस्थ रहे और हम प्राकृतिक आपदाओं से भी मुकाबला कर सकें। तो बच्चों हमें इसके लिए बचपन से ही अपने शरीर की सुरक्षा प्रणाली को ठीक रखने के लिए प्रयास करने शूरू कर देने चाहिए।

शरीर को स्वस्थ रखने के लिए हमें अपने खान-पान का विशेष ध्यान रखना चाहिए। समय पर खाना चाहिए यह ध्यान भी रखना चाहिए कि हमारे खाने में पौष्टिक चीज़ें हों। जैसे-दूध, दही, दालें, फल, सब्ज़ियाँ इत्यादि। बाज़ार की तली भुनी चीज़ों से और फास्ट फूड से हमें हमेशा दूर रहना चाहिए। ताकि

हमारा स्वास्थ्य खराब न हो।

तो बच्चों अभी जिस उम्र से आप गुज़र रहे हो यह उम्र सबसे अच्छी होती है कि हम इसी उम्र से अपने शरीर को योग और व्यायाम की तरफ़ ले जा सकते हैं। रोज़ाना थोड़ा-थोड़ा योग और व्यायाम करने की आदत बना सकते हैं इस उम्र में आप लोग ज़्यादा योग और व्यायाम तो नहीं कर सकते पर इसका थोड़ा अभ्यास आपके लिए अच्छा होगा जिससे आप अपने आपको स्वस्थ रख सकेंगे।

सबसे पहले तो आपको सुबह जल्दी उठना चाहिए। खाली पेट पानी पीना चाहिए ताकि शरीर के विषैले पदार्थ शरीर से बाहर निकल जाएँ। उसके बाद थोड़ा टहलना चाहिए। फिर गहरे यानि लम्बे-लम्बे श्वास लेने चाहिए। उसके बाद एक यौगिक क्रिया अनुलोम-विलोम का अभ्यास करना चाहिए। यह क्रिया हमें स्वस्थ रखने के लिए बहुत कारगर होती है। फिर कुछ आसान से योगासन आपको सीखकर करने चाहिए—सुखासन, पद्मासन, बालासन, ताड़ासन, वृक्षासन, बटरफ्लाई, वज्रासन इत्यादि आसान योगासन हैं जो आपकी आयु के अनुसार उचित हैं और यह आपकी लम्बाई बढ़ाने में भी योगदान देते हैं। वज्रासन तो एक ऐसा आसन है जिसे आप कहीं पर भी और किसी भी वक्त कर सकते हैं। यह एक ऐसा आसन भी है जिसे खाना खाकर भी किया जा सकता है और खाने के बाद इसे करने से विशेष लाभ मिलता है।

इसके बाद कुछ ऐसे आसान व्यायाम भी हैं, जिन्हें करके आप अपने आपको चुस्त दुरुस्त और स्वस्थ रख सकते हो। जैसे बाज़ुओं की क्रिया से किए जाने वाले व्यायाम, शरीर को आगे-पीछे, दाएँ, बाएँ घुमा कर और आगे-पीछे करके किए जाने वाले व्यायाम इत्यादि।

इस प्रकार रोज़ाना थोड़ा सा समय निकाल कर अगर आप इन शारिरिक गतिविधियों में व्यस्त रहोगे तो इनसे न केवल आपका शारीरिक विकास अच्छा होगा बल्कि यह योगासन, व्यायाम आपके मानसिक विकास के लिए भी उपयोगी/ लाभप्रद साबित होंगे। साथ ही इनसे आपका जीवन भी अनुशासित होगा ।

शब्दार्थ -

आपदा/ विपदा - कठिनाई

फास्ट फूड - तली-भुनी चीज़ें

विषैला - ज़हरीला

व्यायाम - कसरत

श्वास - साँस

श्रुतलेख -

समस्याओं, प्राकृतिक, वायुमंडलीय, पौष्टिक, स्वास्थ्य, विषैला, वज्रासन, गतिविधियाँ, योगासन, व्यायाम

बहुविकल्पीय प्रश्न -

1. हमें अपने शरीर की देखभाल करनी चाहिए-

(क) उचित खान-पान से (ख) योगासन करके

(ग) व्यायाम करके (घ) तीनों चीज़ों से

2. सुबह उठ कर सबसे पहले क्या करना चाहिए-

(क) चाय पीनी चाहिए　　(ख) दूध पीना चाहिए

(ग) पानी पीना चाहिए।　　(घ) कुछ भी नहीं पीना चाहिए।

3. योगासन/व्यायाम करने से क्या फायदा होता है?

(क) हमारा समुचित शारीरिक-मानसिक

(ख) हम बलवान हो जाते हैं।

(ग) हमारी आँखों की रोशनी तेज़ हो जाती है।

(घ) कुछ भी फ़ायदा नहीं होता।

मौखिक प्रश्न

1. हम प्रदूषण की किन-किन समस्याओं से जूझ रहे हैं?
2. शरीर की सुरक्षा प्रणाली को कैसे ठीक रखा जा सकता है?
3. हमें खाने में कौन-कौन सी चीज़ें लेनी चाहिए?
4. बच्चों के लिए कौन-कौन से योगासन अच्छे होते हैं?

लिखित प्रश्न

1. हमरे लिए सबसे कीमती चीज़ क्या है और हमें कैसे इसकी देखभाल करनी चाहिए ?
2. छोटे बच्चों को कौन-कौन से योगासन करने चाहिए?
3. हमें खाने में किन चीज़ों से परहेज़ करना चाहिए?
4. सुबह उठकर हमें कौन-कौन सी अच्छी आदतों का पालन करना चाहिए?

रिक्त स्थान भरिए

क) हमें अपने .... का विशेष ध्यान रखना चाहिए।

खानपान, वातावरण, आस–पास

ख) हमें... श्वास लेने चाहिए।

गहरे, धीमे, जल्दी–जल्दी

ग) जीवन को कैसे ....किया जा सकता है।

परिभाषित, अनुशासित, व्यवस्थित

घ) हमारा खानपान...होना चाहिए।

तला–भूना, रूखा–सूखा, पौष्टिक

13 चुनौती हिमालय की

S8P6U7

जोज़ीला पास से आगे चलकर जवाहरलाल मातायन पहुँचे तो वहाँ के नवयुवक कुली ने बताया, "शाब, सामने उस बर्फ़ से ढके पहाड़ के पीछे अमरनाथ की गुफा है।"

"लेकिन, शाब, रास्ता बहुत टेढ़ा है।" किशन ने कुली की बात काटी। "बहुत चढ़ाई है। और शाब, दूर भी है।"

"कितनी दूर?" जवाहरलाल ने पूछा।

"आठ मील, शाब," कुली ने जल्दी से उत्तर दिया।

"बस! तब तो ज़रूर चलेंगे।" जवाहरलाल ने अपने चचरे भाई की ओर प्रश्नसूचक दृष्टि डाली। दोनों कश्मीर घूमने निकले थे और जोज़ीला पास से होकर लद्दाखी इलाके की ओर चले आए थे। अब अमरनाथ जाने में क्या आपत्ति हो सकती थी? फिर जवाहरलाल रास्ते की मुश्किलों के बारे में सुनकर सफ़र के लिए और भी उत्सुक हो गए।

"कौन–कौन चलेगा हमारे साथ?" जवाहरलाल ने जानना चाहा।

तुरंत किशन बोला, "शाब मैं चलूँगा। भेड़ें चराने मेरी बेटी चली जाएगी।"

अगले दिन सुबह तड़के तैयार होकर जवाहरलाल बाहर आ गए। आकाश में

रात्रि की कालिमा पर प्रातः की लालिमा फैलती जा रही थी। तिब्बती पठार का दृश्य निराला था। दूर–दूर तक वनस्पति–रहित उजाड़ चट्टानी इलाका दिखाई दे रहा था। उदास, फीके, बर्फ़ से ढके चट्टानी पहाड़ सुबह की पहली किरणों का स्पर्श पाकर ताज की भाँति चमक उठे। दूर से छोटे–छोटे ग्लेशियर ऐसे लगते, मानो स्वागत करने के लिए पास सरकते आ रहे हों। सर्द हवा के झोंके हड्डियों तक ठंडक पहुँचा रहे थे।

जवाहर ने हथेलियाँ आपस में रगड़कर गरम कीं और कमर में रस्सी लपेट कर चलने को तैयार हो गए। हिमालय की दुर्गम पर्वतमाला मुँह उठाए चुनौती दे रही थी। जवाहर इस चुनौती को कैसे न स्वीकार करते। भाई, किशन और कुली सभी रस्सी के साथ जुड़े थे। किशन गडेरिया अब गाइड बन गया।

बस आठ मील ही तो पार करने हैं। जोश में आकर जवाहरलाल चढ़ाई चढ़ने लगे। यूँ आठ मील की दूरी कोई बहुत नहीं होती। लेकिन इन पहाड़ी रास्तों पर आठ कदम चलना दूभर हो गया। एक–एक डग भरने में कठिनाई हो रही थी।

रास्ता बहुत ही वीरान था। पेड़–पौधों की हरियाली के अभाव में एक अजीब खालीपन–सा महसूस हो रहा था। कहीं एक फूल दिख जाता तो आँखों को ठंडक मिल जाती। दिख रही थीं सिर्फ़ पथरीली चट्टानें और सफ़ेद बर्फ़। फिर भी इस गहरे

सन्नाटे में बहुत सुकून था। एक ओर सूँ–सूँ करती बर्फ़ीली हवा बदन को काटती तो दूसरी ओर ताज़गी और स्फूर्ति भी देती।

जवाहरलाल बढ़ते जा रहे थे। ज्यों–ज्यों ऊपर चढ़ते गए, त्यों–त्यों साँस लेने में दिक्कत होने लगी। एक कुली की नाक से खून बहने लगा। जल्दी से जवाहरलाल ने उसका उपचार किया। खुद उन्हें भी कनपटी की नसों में तनाव महसूस हो रहा था, लगता था जैसे दिमाग में खून चढ़ आया हो। फिर भी जवाहरलाल ने आगे बढ़ने का इरादा नहीं बदला।

थोड़ी देर में बर्फ़ पड़ने लगी। फिसलन बढ़ गई, चलना भी कठिन हो गया। एक तरफ़ थकान, ऊपर से सीधी चढ़ाई। तभी सामने एक बर्फ़ीला मैदान नजर आया। चारों ओर हिम शिखरों से घिरा वह मैदान देवताओं के मुकुट के समान लग रहा था। प्रकृति की कैसी मनोहर छटा थीं आँखों और मन को तरोताज़ा कर गई। बस एक झलक दिखाकर बर्फ़ के धुँधलके में ओझल हो गई।

दिन के बारह बजने वाले थे। सुबह चार बजे से वे लोग लगातार चढ़ाई कर रहे थे। शायद सोलह हज़ार फीट की ऊँचाई पर होंगे इस वक्त ... अमरनाथ से भी ऊपर। पर अमरनाथ की गुफा का दूर–दूर तक पता नहीं था। इस पर भी जवाहरलाल की चाल में न ढीलापन था, न बदन में सुस्ती। हिमालय ने चुनौती जो दी थी। निर्गम पथ पार करने का उत्साह उन्हें आगे खींच रहा था।

"शाब, लौट चलिए। वापस कैंप में पहुँचते–पहुँचते दिन ढल जाएगा," एक कुली ने कहा।

"लेकिन अभी तो अमरनाथ पहुँचे नहीं।" जवाहरलाल को लौटने का विचार पसंद नहीं आया।

"वह तो दूर बर्फ़ के उस मैदान के पार है," किशन बीच में बोल पड़ा।

"चलो, चलो। चढ़ाई तो पार कर ली, अब आधे मील का मैदान ही तो बाकी है,"

कहकर जवाहरलाल ने थके हुए कुलियों को उत्साहित किया।

सामने सपाट बर्फ़ का मैदान दिखाई दे रहा था। उसके पार दूसरी ओर से नीचे उतरकर गुफ़ा तक पहुँचा जा सकता था। जवाहरलाल फुर्ती से बढ़ते जा रहे थे। दूर से मैदान जितना सपाट दिख रहा था असलियत में उतना ही ऊबड़–खाबड़ था। ताज़ी बर्फ़ ने ऊँची–नीची चट्टानों को एक पतली चादर से ढक कर एक समान कर दिया था। गहरी खाइयाँ थीं, गड्ढे बर्फ़ से ढके हुए थे और गज़ब की फिसलन थी। कभी पैर फिसलता और कभी बर्फ़ में पैर अंदर धँसता जाता, बहुत नाप–नाप कर कदम रखने पड़ रहे थे। ये तो चढ़ाई से भी मुश्किल था, पर जवाहरलाल को मज़ा आ रहा था। तभी जवाहरलाल ने देखा सामने एक गहरी खाई मुँह फाड़े निगलने के लिए तैयार थी। अचानक उनका पैर फिसला।
वे लड़खड़ाए और इससे पहले कि सँभल पाएँ वे खाई में गिर पड़े।

"शाब ... गिर गए!" किशन चीखा।

"जवाहर ...!" भाई की पुकार वादियों की शांति भंग कर गई। वे खाई की ओर तेज़ी से बढ़े।

रस्सी से बँधे जवाहरलाल हवा में लटक रहे थे। उफ, कैसा झटका लगा। दोनों तरफ़ चट्टानें–ही–चट्टानें, नीचे गहरी खाई। जवाहरलाल कसकर रस्सी पकड़े थे, वही उनका एकमात्र सहारा था।

"जवाहर...!" ऊपर से भाई की पुकार सुनाई दी।

मुँह ऊपर उठाया तो भाई और किशन के धुँधले चेहरे खाई में झाँकते हुए दिखाई दिए। "हम खींच रहे हैं, रस्सी कस के पकड़े रहना," भाई ने हिदायत दी।

जवाहरलाल जानते थे कि फिसलन के कारण यूँ ऊपर खींच लेना आसान नहीं होगा। "भाई, मैं चट्टान पर पैर जमा लूँ," वह चिल्लाए। खाई की दीवारों से उनकी आवाज़ टकराकर दूर–दूर तक गूँज गई। हल्की–सी पेंग बढ़ा जवाहरलाल

ने खाई की दीवार से उभरी चट्टान को मज़बूती से पकड़ लिया और पथरीले धरातल पर पैर जमा लिए। पैरों तले धरती के एहसास से जवाहरलाल की हिम्मत बढ़ गई।

"घबराना मत, जवाहर," भाई की आवाज़ सुनाई दी।

"मैं बिल्कुल ठीक हूँ," कहकर जवाहरलाल मज़बूती से रस्सी पकड़ एक–एक कदम ऊपर की ओर बढ़ने लगे। कभी पैर फिसलता कभी कोई हल्का–फुल्का पत्थर पैरों के नीचे से सरक जाता, तो वह मन–ही–मन काँप जाते और मज़बूती से रस्सी पकड़ लेते। रस्सी से हथेलियाँ भी जैसे कटने लगीं थीं पर जवाहरलाल ने उस तरफ़ ध्यान नहीं दिया। कुली और किशन उन्हें खींचकर बार–बार ऊपर चढ़ने में मदद कर रहे थे। धीरे–धीरे सरक कर किसी तरह जवाहरलाल ऊपर पहुँचे। मुड़कर ऊपर से नीचे देखा कि खाई इतनी गहरी थी कि कोई गिर जाए तो उसका पता भी न चले।

"शुक्र है, भगवान का!" भाई ने गहरी साँस ली।

"शाब, चोट तो नहीं आई?" एक कुली ने पूछा।

गर्दन हिला, कपड़े झाड़ जवाहरलाल फिर चलने को तैयार हो गए। इस हादसे से हल्का–सा झटका ज़रूर लगा फिर भी जोश ठंडा नहीं हुआ। वह अब भी आगे जाना चाहते थे।

आगे चलकर इस तरह की गहरी और चौड़ी खाइयों की तादाद बहुत थी। खाइयाँ पार करने का उचित सामान भी तो नहीं था। निराश होकर जवाहरलाल को अमरनाथ तक का सफ़र अधूरा छोड़कर वापस लौटना पड़ा। अमरनाथ पहुँचने का सपना तो पूरा ना हो सका पर हिमालय की ऊँचाइयाँ सदा जवाहरलाल को आकर्षित करती रहीं।

सुरेखा पणंदीकर

भारत सरकार का प्रतिलिप्याधिकार, 2007। (1) आंतरिक विवरणों को सही दर्शाने का दायित्व प्रकाशक का है।
(2) समुद्र में भारत का जलप्रदेश, उपयुक्त आधार–रेखा से मापे गये बारह समुद्री मील की दूरी तक है। (3) चंडीगढ़, पंजाब और हरियाणा के प्रशासी मुख्यालय चंडीगढ़ में है।
(4) इस मानचित्र में अरुणाचल प्रदेश, असम और मेघालय के मध्य में दर्शायी गयी अंतर्राज्यीय सीमायें, उत्तरी पूर्वी क्षेत्र ;पुनर्गठनद्ध अधिनियम 1971 के निर्वाचनानुसार दर्शित है, परंतु अभी सत्यापित होनी है।
(5) भारत की बाह्य सीमायें तथा समुद्र तटीय रेखायें भारतीय सर्वेक्षण विभाग द्वारा सत्यापित अभिलेख / प्रधान प्रति से मेल खाती है।
(6) इस मानचित्र में उत्तराखण्ड एवं उत्तरप्रदेश, झारखंड एवं बिहार और छत्तीसगढ़ एवं मध्यप्रदेश के बीच की राज्य सीमायें संबंधित सरकारों द्वारा नहीं की गयी है।
(7) इस मानचित्र में दर्शित नामों का अक्षरविन्यास विभिन्न सूत्रों द्वारा प्राप्त किया है।

कहाँ क्या है

1. (क) लद्दाख केन्द्र शासित प्रदेश है। ऊपर दिए भारत के मानचित्र में ढूँढ़ों कि लद्दाख कहाँ है और तुम्हारा घर कहाँ है?

(ख) अनुमान लगाओ कि तुम जहाँ रहते हो वहाँ से लद्दाख पहुँचने में कितने दिन लग सकते हैं और वहाँ किन–किन ज़रियों से पहुँचा जा सकता है?

वाद–विवाद

1. (क) बर्फ़ से ढके चट्टानी पहाड़ों के उदास और फीके लगने की क्या वजह हो सकती थी?

   (ख) बताओ, ये जगहें कब उदास और फीकी लगती हैं और यहाँ कब रौनक होती है?

   घर बाज़ार स्कूल खेत

2. 'जवाहरलाल को इस कठिन यात्रा के लिए तैयार नहीं होना चाहिए।' तुम इससे सहमत हो तो भी तर्क दो, नहीं हो तो भी तर्क दो। अपने तर्कों को तुम कक्षा के सामने प्रस्तुत भी कर सकते हो।

कोलाज

'कोलाज' उस तस्वीर को कहते हैं जो कई तस्वीरों को छोटे–छोटे टुकड़ों में काटकर एक कागज़ पर चिपका कर बनाई जाती है।

1. तुम मिलकर पहाड़ों का एक कोलाज बनाओ। इसके लिए पहाड़ों से जुड़ी विभिन्न तस्वीरें इकट्ठे करो – पर्वतारोहण, चट्टान, पहाड़ों के अलग–अलग नज़ारे, चोटी, अलग–अलग किस्म के पहाड़। अब इन्हें एक बड़े से कागज़ पर पहाड़ के आकार में ही चिपकाओ। यदि चाहो तो ये कोलाज तुम अपनी कक्षा की एक दीवार पर भी बना सकते हो।

2. अब इन चित्रों पर आधारित शब्दों का एक कोलाज बनाओ। कोलाज में ऐसे शब्द हों जो इन चित्रों का वर्णन कर पा रहे हों या मन में उठने वाली भावनाओं को बता रहे हों। अब इन दोनों कोलाजों को कक्षा में प्रदर्शित करो।

तुम्हारी समझ से

1. इस वृत्तांत को पढ़ते–पढ़ते तुम्हें भी अपनी कोई छोटी या लंबी यात्रा याद आ रही हो तो उसके बारे में लिखो।
2. जवाहरलाल को अमरनाथ तक का सफ़र अधूरा क्यों छोड़ना पड़ा?
3. जवाहरलाल, किशन और कुली सभी रस्सी से क्यों बँधे थे?
4. (क) पाठ में नेहरू जी ने हिमालय से चुनौती महसूस की। कुछ लोग पर्वतारोहण क्यों करना चाहते हैं?

   (ख) ऐसे कौन–से चुनौती भरे काम हैं जो तुम करना पसंद करोगे?

बोलते पहाड़

1. – उदास फीके बर्फ़ से ढके चट्टानी पहाड़

   – हिमालय की दुर्गम पर्वतमाला मुँह उठाए चुनौती दे रही थी।

   "उदास होना" और "चुनौती देना" मनुष्य के स्वभाव हैं। यहाँ निर्जीव पहाड़ ऐसा कर रहे हैं।

ऐसे और भी वाक्य हैं। जैसे–

– बिजली चली गई।

– चाँद ने शरमाकर अपना मुँह बादलों के पीछे कर लिया।

इस किताब के दूसरे पाठों में भी ऐसे वाक्य ढूँढ़ो।

एक वर्णन ऐसा भी

पाठ में तुमने जवाहरलाल नेहरू की पहाड़ी यात्रा के बारे में पढ़ा। नीचे एक और पहाड़ी इलाके का वर्णन दिया गया है जो प्रसिद्ध कहानीकार निर्मल वर्मा की किताब 'चीड़ों पर चाँदनी' से लिया गया है। इसे पढ़ो और नीचे लिखे प्रश्नों के उत्तर दो।

"क्या यह शिमला है –हमारा अपना शहर– या हम भूल से कहीं और चले आए हैं? हम नहीं जानते कि पिछली रात जब हम बेखबर सो रहे थे, बर्फ़ चुपचाप गिर रही थी।

खिड़की के सामने पुराना, चिर–परिचित देवदार का वृक्ष था, जिसकी नंगी शाखों पर रूई के मोटे–मोटे गालों–सी बर्फ़ चिपक गई थी। लगता था जैसे वह सांता–क्लॉज़ हो, एक रात में ही जिसके बाल सन–से सफ़ेद हो गए हैं ...। कुछ देर बाद धूप निकल आती है– नीले चमचमाते आकाश के नीचे बर्फ़ से ढकी पहाड़ियाँ धूप सेंकने के लिए अपना चेहरा बादलों के बाहर निकाल लेती हैं।"

(क) ऊपर दिए पहाड़ के वर्णन और पाठ में दिए वर्णन में क्या अंतर है?

(ख) कई बार निर्जीव चीज़ों के लिए मनुष्यों से जुड़ी क्रियाओं, विशेषण आदि का इस्तेमाल होता है, जैसे–पाठ में आए दो उदाहरण "उदास फीके, बर्फ़ से ढके चट्टानी पहाड़" या "सामने एक गहरी खाई मुँह फाड़े निगलने के लिए तैयार थी"। ऊपर लिखे शिमला के वर्णन में ऐसे उदाहरण ढूँढ़ो।

शब्दार्थ -

जोज़ीला पास- हिमालय में एक ऊँचा पहाड़ी दर्रा है
दुर्गम -कठिन, जहाँ हम पहुँच न सकें,
प्रश्नसूचक - कोई बात सवाल के रूप में पूछना,
कालिमा- कालापन स्याही, पठार-धरती से ऊपर उठी हुई समतल जगह,
ग्लेशियर- गतिशील बर्फ की परत,
गडेरिया - भेड़-बकरियाँ चराने वाला,
अमरनाथ -एक प्रमुख तीर्थस्थल,
खाई- जमीन के बीच में कोई गहरी जगह,
चट्टान- खनिज पदार्थों से बनी हुई पथरीली सतहें,
वनस्पति-जमीन से उगने वाले पेड़-पौधे,लताएँ आदि

श्रुतलेख -

जोज़ीला पास, प्रश्नसूचक, आपत्ति, कालिमा, हरियाली, चुनौती, मनोहर, स्फूर्ति, एकमात्र, खाइयाँ, ऊबड़-खाबड, धरातल, मज़बूती, झटका, ऊँचाइयाँ

बहुविकल्पीय प्रश्न -

1. जोज़ीला पास से आगे चलकर जवाहरलाल कहाँ पहुँचे ?

(क) लद्दाख (ख) कश्मीर

(ग) मातायन (घ) अमरनाथ

2. जवाहरलाल के साथ अमरनाथ जाने को कौन तैयार हुआ ?

(क) भाई (ख)किशन

(ग) कुली (घ) सभी

3. 'शाब लौट चलिए' वाक्य जवाहर लाल को किसने कहा ?

(क) कुली ने, (ख) भाई ने

(ग) किशन ने (घ) किसी ने भी नहीं

4. जवाहरलाल कहाँ पर गिर गये थे-

(क) नदी में, (ख) खाई में

(ग) सड़क पर (घ) कहीं पर भी नही

उत्तर प्रश्न

मौखिक प्रश्न -

1. जवाहरलाल कहाँ पर जाना चाहते थे?
2. जवाहरलाल किसके साथ कश्मीर घूमने निकले थे ?
3. तिब्बती पठार का दृश्य कैसा था?
4. जवाहर लाल, उनका भाई, किशन और कुली सभी रस्सी पर क्यों बंधे थे ?

लिखित प्रश्न :-

1. जवाहरलाल कहाँ गये थे और अमरनाथ गुफा की यात्रा के लिए तैयार हुए ?
2. अमरनाथ की यात्रा करने में जवाहरलाल को क्या-क्या कठिनाइयाँ आईं?
3. रस्सी से बंधे जवाहर लाल, कैसे और कहाँ गिर गये ?
4. खाई में गिर जाने पर जवाहर लाल को कैसे बाहर निकाला गया ?

सही-गलत चुनिए -

1. कुली ने जवाहरलाल को बताया कि अमरनाथ की गुफा लद्दाख में है।
2. जवाहरलाल के साथ अमरनाथ यात्रा पर उनका पूरा परिवार गया था।
3. तिब्बती पठार के ऊपर बहुत सारे बाज़ार बने हुए हैं।
4. आखिरकार बहुत सारी चुनौतियों से जूझने के बाद भी जवाहरलाल अमरनाथ गुफा की यात्रा में कामयाब नहीं हो पाए।

रिक्त स्थान भरें -

1. ....से आगे चल कर जवाहर लाल मातायन पहुँचे।

   (जोज़िला पास/ अमरनाथ)

2. ....चराने मेरी बेटी चली जाएगी।

   (गाय/भेड़ें)

3. ....पठार का दृश्य निराला था।

   (तिब्बती / लदाखी)

4. रास्ता बहुत ही .... था।

   (बड़ा, वीरान

5. किशन गडेरिया अब...बन गया था।

   (गाइड/नौकर)

रचनात्मक कार्य -

इसको पढ़ते-पढ़ते आपको भी अपनी कोई छोटी या लम्बी यात्रा याद आ रही हो तो उसके बारे में लिखिए।

C6E1R6

14 जैसे को तैसा

प्राचीन समय में एक नगर में जीर्णधन नाम का एक बनिया रहता था। वह अकेले ही अपना जीवन यापन करता था। क्योंकि उसके आगे–पीछे कोई नहीं था। बनिए ने धन अर्जित करने के लिए विदेश जाने का सोचा। वैसे तो उसके पास कोई विशेष संपत्ति नहीं थी, केवल एक मन (चालीस किलोग्राम) भारी लोहे की तराज़ू थी।

उस तराज़ू को महाजन के यहाँ धरोहर के रूप में रखकर बनिया विदेश चला गया। विदेश से वापस लौटकर जब बनिए ने महाजन से तराज़ू मांगी तो महाजन ने कहा 'उस लोहे की तराज़ू को तो चूहे खा गए।'

बनिया समझ गया कि महाजन उसे तराज़ू नहीं देना चाहता। बनिये ने धैर्य और विनम्रता से कहा, 'उस तराज़ू को चूहों ने खाया है तो चूहों की गलती है, तुम्हारी गलती नहीं है। तुम व्यर्थ चिंता मत करो।'

कुछ समय पश्चात् बनिये ने कहा, 'मैं नदी किनारे स्नान करने के लिए जा रहा हूँ। तुम अपने पुत्र धनदेव को मेरे साथ भेज दो वह भी नहा के आ जाएगा।'

महाजन बनिये की बातों से प्रभावित हो गया था इसलिए उसने अपने पुत्र को बनिये के साथ स्नान करने के लिए भेज दिया।

बनिए ने महाजन के पुत्र को वहाँ से कुछ दूर ले जाकर एक गुफा में बंद कर दिया और गुफा के द्वार पर एक बड़ी-सी शिला रख दी ताकि महाजन का पुत्र वहाँ से भाग न सके। वहाँ से बनिया जब महाजन के घर आया तो महाजन ने पूछा कि मेरा पुत्र कहाँ है? वह आपके साथ स्नान करने गया था न?

बनिया – 'उसे तो चील उठाकर ले गई।'

महाजन – 'यह कैसे हो सकता है? कभी चील इतने बड़े बच्चे को उठाकर ले जा सकती है ?'

बनिया – 'मित्र ! यदि चील इतने बड़े बच्चे को उठाकर नहीं ले जा सकती

तो चूहे भी एक मन भारी तराज़ू को नहीं खा सकते। तुझे अपना पुत्र चाहिए तो मुझे अपना तराज़ू दे दो ।'

इस तरह विवाद बढ़ गया। दोनों इस समस्या को लेकर राजमहल पहुँच गए। वहाँ न्याय अधिकारी के सामने महाजन ने अपनी दुख भरी कथा सुनाई और बनिये पर आरोप लगाया इसने मेरे बच्चे को चुरा लिया

धर्माधिकारी ने बनिये से कहा– 'इसका लड़का इसे दे दो ।'

बनिया– राजन उसे तो चील उड़ा ले गई।

धर्माधिकारी – 'क्या कभी कोई चील इतने बड़े इंसान को उड़ा कर ले जा सकती है?'

बनिया – 'यदि मेरे एक मन भारी तराज़ू को चूहे खा सकते हैं तो इनके बच्चे को चील उड़ाकर ले जा सकती है।' इसके पश्चात् धर्माधिकारी के प्रश्न पर बनिये ने अपनी सारी कथा धर्माधिकारी सुनाई। महाजन बहुत लज्जित हुआ और बनिये को उसका तराज़ू लौटा दिया।

शिक्षा : जैसी करनी वैसी भरनी। हमें कभी भी किसी के साथ धोखा नहीं करना चाहिए। **(पंचतंत्र से)**

अभ्यास

शब्दार्थ -

यापन	–	व्यतीत करना, बिताना
अर्जित	–	कमाया हुआ, प्राप्त करना
संपत्ति	–	धन
एक मन	–	चालीस किलोग्राम
धरोहर	–	अमानत, पूर्वजों से प्राप्त विरासत
धैर्य	–	धीरज
विनम्रता	–	शिष्टता, शालीनता
शिला	–	चट्टान
विवाद	–	झगड़ा
कथा	–	कहानी

श्रुतलेख -

प्राचीन, बनिया, किलोग्राम, प्रभावित, पश्चात् आरोप धर्माधिकारी, न्याय, विनम्रता

पाठ को समझें

1. सही विकल्प का चयन करें।

(क) बनिये ने अपना तराज़ू किसके पास रखा ?

(1) न्याय अध्किारी के पास (2) राजा के पास

(3) महाजन के पास (4) धर्माधिकारी के पास

(ख) बनिया नदी के किनारे क्यों गया?

(1) स्नान करने (3) पानी लाने

(2) धनदेव को डुबोने (4) कपड़े धोने

(ग) दोनों समस्या को लेकर कहाँ पहुँचे ?

(1) मंदिर (3) शहर

(2) विदेश (4) राजमहल

(घ) बनिये ने महाजन के पुत्र को कहाँ बंद कर दिया ?

(1) गुफा में (3) भंडार में

(2) घर में (4) कोठरी में

2. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

मौखिक

क) क्या एक मन तराज़ू को चूहे खा सकते हैं?

(ख) क्या बहाना बनाना तथा किसी बात को जानते हुए भी उसे छिपाना और चुप रहना झूठ है?

लिखिए

(क) बनिये ने तराज़ू को महाजन के पास क्यों रखा?

(ख) महाजन ने तराज़ू न लौटाने का क्या कारण बताया ?

(ग) बनिये ने महाजन को किस प्रकार सबक सिखाया

(घ) धर्माधिकारी ने बनिये को क्या कहा ?

(ड) बनिये के चरित्र की पाँच विशेषताएँ लिखिए।

3. आशय स्पष्ट करें

यह कैसे हो सकता है ? कभी चील इतने बड़े बच्चे को उठाकर ले जा सकती है?

4. किसने, किससे कहा ?

कथन	किसने कहा	किससे कहा
(क) 'उसे तो चील, उठाकर ले गई।'		
(ख) 'इसने मेरे बच्चे को चुरा लिया।'		
(ग) 'इसमें तुम्हारी कोई गलती नहीं।'		
(घ) 'इसका लड़का इसे दे दो।'		

भाषा को समझें

(1) पाठ में से पाँच-पाँच संज्ञा शब्द छाँटकर लिखिए -

1. व्यक्तिवाचक- ....

2. जातिवाचक - ....

3. भाववाचक- ....

(2) जो शब्द क्रिया की विशेषता बताते हैं, उन्हें 'क्रियाविशेषण' कहते हैं। क्रियाविशेषण शब्द क्रिया के काल, स्थान, मात्रा (परिमाण) तथा रीति के बारे में बताते हैं।

जैसे

* महाजन कल आया था।	कल (समय) (कब)
* मैं बाहर खेलने चली गई।	बाहर - (स्थान) (कहाँ)
* बनिया काफ़ी थक गया था।	काफ़ी - (परिमाण) (कितना)
* राम धीरे-धीरे चलने लगा	धीरे-धीरे - (रीति) (कैसे)

निम्नलिखित वाक्यों में प्रयुक्त क्रियाविशेषणा शब्दों के नीचे रेखा खींचो-

(क) बनिया दौड़कर राजमहल गया ।

(ख) चूहों ने धीरे-धीरे तराज़ू को खा लिया।

(ग) धनदेव बहुत रोया ।

(घ) महाजन कल विदेश जाएगा।

3. दिए गए शब्दों को शब्दकोश- क्रम में लिखिए-

विदेश आकाश विनम्रता अकेले धरोहर

4. सही उत्तर पर सही (✓) निशान लगाओ-

(क) ₹ 2.05	=	☐ 205 पैसे	☐ 25 पैसे
(ख) ₹ 2 के 5 सिक्के	=	☐ ₹ 10	☐ ₹ 52
(ग) 7035 पैसे	=	☐ ₹ 7.35	☐ ₹ 70.35

रचनात्मक :-

जीवन में अच्छी आदतें अपनाने की सीख देते हुए छोटे भाई को पत्र लिखिए।

15 मिसाइल मैन

S6L4G1

बच्चो ! आपने ऐसे नाम सुने होंगे जो संघर्ष का जीवन जीकर शिखरों तक पहुँचे। 'नन्हें' नाम का एक बालक जो तैरकर नदी पार करते हुए विद्यालय पहुंचता था बड़े होकर भारत का प्रधानमंत्री बना, जिसे हम 'लाल बहादुर शास्त्री' के नाम से जानते हैं। निर्धनता में पलकर एक दूसरा बालक अमरीका का राष्ट्रपति बना और महान अब्राहम लिंकन कहलाया। आओ ऐसी ही एक महान हस्ती के प्रेरणादायक जीवन का परिचय प्राप्त करते हैं।

[पृष्ठभूमि]

डॉ. ए. पी. जे. अब्दुल कलाम एक विश्व प्रसिद्ध हस्ती का नाम है। वे 21वीं सदी के महानतम वैज्ञानिक और भारत के 11वें राष्ट्रपति बने। इनके जन्मदिन को पूरा विश्व 'विद्यार्थी दिवस' के रूप में मनाता है। आइए जानें कि एक साधारण गरीब परिवार में पलकर किस प्रकार इन्होंने आकाश की बुलंदियों को छुआ।

इनका जन्म 15 अक्टूबर 1931 को तमिलनाडु के रामेश्वरम ज़िले के धनुषकोड़ि गाँव में हुआ था। इनका पूरा नाम 'अबुल पक्कीर जैनुलआबदीन अब्दुल कलाम' था।

इनका बचपन अभावों में बीता। परिवार बड़ा था। अतः इन्होंने छोटी उम्र में परिवार को आर्थिक सहयोग देना शुरू कर दिया। इस बीच इन्होंने अपनी पढ़ाई को भी नियमित रूप से जारी रखा। इनके पिता मछुआरों को किराए पर नाव देते थे। ये पिता के साथ भी उनके काम में हाथ बँटाते और समय बचाकर जमकर पढ़ाई करते। इनके पिता अनपढ़ अवश्य थे लेकिन ऊंची सोच वाले दूरदर्शी व्यक्ति थे। उन्होंने बेटे को सदैव पढ़ाई के प्रति प्रोत्साहित किया। प्रारंभिक शिक्षा रामेश्वरम में हुई। तब बालक कलाम पायलट बनने का सपना देखते थे। सेंट जोसेफ कॉलेज से ग्रेजुएशन कर मद्रास इंस्टीट्यूट ऑफ टैक्नॉलोजी से एयरोनॉटिकल इंजीनियरिंग की डिग्री प्राप्त की। यहाँ से प्राप्त किए ज्ञान को उन्होंने भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन (इसरो) से जुड़कर उसका भरपूर उपयोग किया और भारत को विज्ञान के क्षेत्र में नई ऊँचाइयाँ प्रदान कीं। 'अग्नि' और पृथ्वी मिसाइलों के निर्माण में अहम् भूमिका निभाई; 'मिसाइल मैन' नाम से प्रसिद्ध हुए। परमाणु उर्जा में भागीदारी के पश्चात् उन्हें भारत के सर्वोच्च नागरिक सम्मान 'भारत रत्न' से सम्मानित किया गया। इससे

NEW DELHI: India's Chief Justice B.N. Kirpal swears in newly-elected President A. P. J Abdul Kalam in parliament on Thursday.
—Reuters

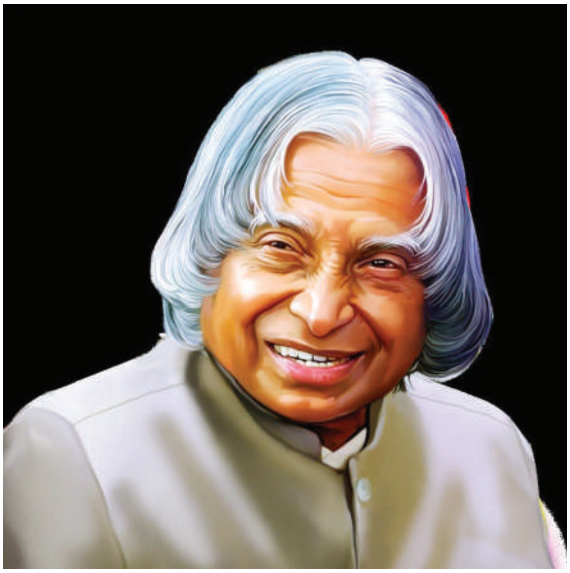

पहले वे पद्म विभूषण और पद्मभूषण भी प्राप्त कर चुके थे।

अनुशासन, सादगी और नम्रता उनके व्यक्तित्व में सदैव झलकते। अपने शिक्षक से उन्होंने दैनिक रूप से पढ़ना सीखा था, जिसे उन्होंने जीवन भर कायम रखा। उनका कहना था कि किसी वस्तु या मंजिल को पाने के लिए तीव्र इच्छा का होना आवश्यक है।

2002 में राष्ट्रपति बनने के बाद आपने सेना और देश की खूब सेवा की। इस पद पर रहते हुए उन्होंने राष्ट्र निर्माण में अहम् योगदान दिया। खुले दिल से देश सेवा करने पर उन्हें 'जनता का राष्ट्रपति' कहा गया। राष्ट्रपति बनकर भी आम जन के लिए उनके दरवाजे हमेशा खुले रहे। उनकी महानता, सादगी, ईमानदारी, नेक दिली, और दूर दृष्टि के कई किस्से मशहूर हैं।

एक बार राष्ट्रपति भवन में उनके परिजन नौ दिन के लिए रुके, जिसका खर्च साढ़े तीन लाख रुपये के आस-पास आया। इसका बिल उन्होंने अपनी जेब से भरा।

एक बार वे जम्मू विश्वविद्यालय में दीक्षांत समारोह में आए जहाँ सैकड़ों बत्तियाँ जगमगा रही थीं। तब उन्होंने अनावश्यक बत्तियाँ यह कह के बंद करवा दीं कि देश के साथ-साथ पूरा विश्व विद्युत ऊर्जा की कमी से जूझ रहा है अत: हमें इसका दुरुपयोग नहीं करना चाहिए।

बच्चों से वे बहुत प्रेम करते थे। उनसे कई बार चर्चाएँ और वाद-विवाद भी किए। विद्यार्थियों और उनके बीच के इस प्रेम और आकर्षण को देखते हुए संयुक्त राष्ट्र ने उनके जन्म दिन को विद्यार्थी दिवस के रूप में मनाने का निर्णय

किया।

राष्ट्रपति पद से सेवानिवृत्त होकर वे दोबारा शिक्षण की ओर मुड़े। अपने वक्तव्यों में उन्होंने हमेशा प्रेम, ज्ञान और विज्ञान पर बल दिया। उन्होंने कुछ पुस्तकें भी लिखीं जो काफी प्रसिद्ध हुई और उनमें दिए विचार एवं उद्धरण बहुत लोकप्रिय हुए। उनकी कुछ प्रमुख पुस्तकें हैं- विंग्स ऑफ़ फायर, इंडिया 2020, इंग्नाइटेड माइंड्स, माय जर्नी आदि।

पद्मभूषण, पद्म विभूषण और भारत रत्न के अलावा डॉ कलाम को 45, विश्वविद्यालयों और संस्थानों द्वारा डॉक्टरेट की उपाधि भी मिली। डॉ कलाम का जीवन और व्यक्तित्व सब के लिए एक प्रेरणादायक प्रसंग है।

अभ्यास व अधिगम गतिविधियाँ

(क)

(अ) कठिन शब्दों के अर्थ-

आर्थिक	पैसों से संबंधित
दूरदर्शी	दूर की सोच रखने वाला/ वाली
प्रोत्साहित	हौसला बढ़ाया
प्रारंभिक	शुरुआती
सर्वोच्च	सबसे ऊँचा, सबसे महान
सेवा निवृत्त	नौकरी पूरी करके रिटायर होने वाला
वक्तव्य	भाषण

(आ) श्रुतलेख-

ऊँचाइयाँ, प्रसिद्ध, पद्मभूषण, दीक्षांत, दुरुपयोग, विद्युत, दूरदृष्टि

(ख) प्रश्नोत्तरी

1. राष्ट्रपति डॉ. ए. पी. जे अब्दुल कलाम को जनता का राष्ट्रपति क्यों कहा गया ?
2. डॉ. कलाम के जन्म दिवस को किस दिवस के रूप में मनाया जाता है?
3. डॉ. कलाम का पूरा नाम क्या था?
4.. बचपन में डॉ. कलाम क्या बनना चाहते थे?
5. डॉ. कलाम के व्यक्तित्व के कोई तीन गुण बताएँ
6. अपनी सोच के मुताबिक पाठ के अन्य शीर्षक सुझाएँ ।

(ग) सही मिलान करें।

(i) भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन	क) यु.एन. ओ,
(ii) संयुक्त राष्ट्र संघ	ख) डब्ल्यु. एच. ओ
(iii) विश्व स्वास्थ्य संगठन	ग) इसरो
(iv) दीक्षांत समारोह	घ) भारत रत्न
(v) भारतीय सर्वोच्च नागरिक सम्मान	ड) कॉन्वोकेशन सैरेमनी

(घ) रचनात्मक शोध गतिविधि–

1. डॉ. कलाम के जीवन के कुछ प्रेरणादायक प्रसंगों को दोस्तों, अभिभावकों (माता–पिता) से पूछकर तथा इंटरनेट पर ढूँढकर कक्षा में सुनाएँ, और बताएं कि आप किस घटना से अध्कि प्रभावित हुए ?
2. भारत तथा विश्व के सर्वोच्च सम्मानों की सूची बनाएँ।
3. भारत के वैज्ञानिकों की सूची बनाएँ।

I7K6M8

16 लोहड़ी

पर्व	उत्सव	त्योहार	राष्ट्रीय	ओणम
प्रसिद्ध	नवरेह	संबंधित	खपची	समृद्धि
पूर्वज	लोक–कथा	उत्साह	कामना	आकार

भारत में तरह–तरह के उत्सव या त्योहार मनाए जाते हैं। कुछ त्योहार ऋतुओं से संबंधित हैं। जैसे वसंत। कुछ त्योहार महापुरुषों की याद में मनाए जाते हैं, जैसे दशहरा, रामनवमी और गांधी जयंती। स्वतंत्रता दिवस, गणतंत्र दिवस आदि हमारे राष्ट्रीय त्योहार हैं। ऋतुओं से संबंधित त्योहारों में 'बिहू' तथा 'ओणम' बहुत प्रसिद्ध हैं। "बिहू" पूर्व भारत में मनाया जाता है, जबकि "ओणम" दक्षिण भारत में बड़ी धूमधाम से मनाया जाता है। उत्तर भारत में बैसाखी, नवरेह, नवरोज़, होली, दीवाली, लोहड़ी आदि प्रमुख रूप से मनाए जाते हैं। जो भी हो हर त्योहार मिल–जुलकर और खुशी–खुशी मनाया जाता है। लोहड़ी विशेषकर दिल्ली, पंजाब और जम्मू क्षेत्र में मनाई जाती है। जम्मू और पंजाब में लोहड़ी से कुछ दिन पहले लड़के–लड़कियाँ घर–घर जाते हैं और लोहड़ी माँगते हैं। लोह्ड़ी के दिन, रात को लोग आग जलाकर उसके गिर्द भाँगड़ा और गिद्दा नाचते हैं। जम्मू क्षेत्र में इस अवसर पर गोलाकार 'छजजे' बनाने की प्रथा है। लड़के एक–दो सप्ताह पहले से ही छजजे बनाने में जुट

जाते हैं। ये 'छज्जे' बड़े सुंदर होते हैं। मोर के फैले हुए पंखों के आकार का 'छज्जा' बाँस की खपचियों और रंगबिरंगें कागज़ों से बनता है, जिस पर कागज़ के फूल, पत्तियाँ आदि बनाकर लगाए जाते हैं। 'छज्जा' पर, नीचे मोर का चित्र बना होता है। जब लड़के इन्हें कँधों पर उठाकर चलते हैं तो लगता है जैसे मोर अपने पंख फैलाए सड़कों और गलियों में जा रहे हों। घरों में ले जाकर कुछ लड़के छजजों को घुमाते और नचाते हैं जबकि अन्य लड़के ढोलिये के ढोल की ताल पर "डंडारस–नृत्य"

करते हैं। छोटे बच्चे तिकोने छजजे लेकर अलग टोलियाँ बनाकर घूमते हैं।

लोहड़ी के दिन लोग नए वस्त्र पहनते हैं। छोटे बच्चों के गलों में सूखे मेवों के हार पहनाए जाते हैं। सायंकाल 'लोहड़ी जलाने' से पहले ज़मीन को जल से धोया जाता है फिर धुली साफ़ ज़मीन पर लकड़ियों को एक दूसरे से टिका कर खड़े आकार में रखते हैं। इस प्रकार लकड़ियों का पिरामिड (खड़ा तिकोन) सा बनता है। फिर इस में आग दी जाती है।

घर के सदस्य आग के इर्द–गिर्द घेरा बनाकर खड़े हो जाते हैं और भक्ति–भाव के साथ सूखे मेवे, चिउड़े, रेवड़ियाँ, फुल्ले (मक्की) आदि की आहुतियाँ अग्नि में डालते हैं। सबकी सुख–समृद्धि की कामना करते हैं। तिल–भुग्गा, रेवड़ियाँ, मूँगफली, चिउड़ा, गजक तथा सूखे मेवे आदि को मित्रों और संबंधियों में बांटकर खाते हैं। तिल की रेवड़ी के प्रयोग के कारण इस त्यौहार को "तिलोड़ी" भी कहते हैं।

लोहड़ी का पर्व सर्दियाँ समाप्त होने का संदेश देता है। यह पौष मास के अंतिम दिन मनाते हैं। विश्वास है कि हमारे पूर्वजों ने सर्दी से बचने के लिए एक मंत्र की रचना की थी। इस दिन वह मंत्र बोलकर सूर्य भगवान से प्रार्थना की जाती है कि वे हमारे लिए गर्मी भेजें।

जिस घर में शिशु जन्मा हो या नई शादी हुई हो उसमें लड़के–लड़कियों की मंडलियाँ 'लोहड़ी मांगते' समय प्रायः यह गीत गाते हैं:–

सुंदर मुंदरिये, हो
तेरा कौन प्यारा, हो

दुल्ला भट्टी वाला, हो

दुल्ले धी ब्याही हो

....

....

लोहड़ी का यह गीत 'दुल्ला भट्टी' की लोक–कथा से जुड़ा है। लोक–कथा में दुल्ला – भट्टी नामक एक आदमी सुंदरी–मुंदरी नामक दो बहनों को किसी अत्याचारी से बचाता है और उन्हें अपनी बेटियाँ बनाकर विवाह कर देता है। लोह्ड़ी के अवसर पर यह गीत गाकर लोग एक दूसरे को बहन–बेटियों की रक्षा करने की याद दिलाते हैं।

हमें लोहड़ी जैसे उत्सवों को सदा उत्साह से मनाना चाहिए। इस से आनंद मिलता है और आपसी भाई–चारा भी बढ़ता है।

शब्दार्थ-

पर्व	-	उत्सव, त्योहार
ऋतु	-	मौसम
राष्ट्रीय	-	राष्ट्र का
प्रथा	-	रीति-रिवाज़
क्षेत्र	-	इलाका
तिकोन	-	तीन कोण वाला
समृद्धि	-	धन-दौलत, संपत्ति
पूर्वज	-	बाप-दादा, पुरखे
भाईचारा	-	भाई जैसा व्यवहार
लोककथा	-	लोगों में प्रचलित कथा, जनश्रुति
आहुति	-	मंत्र के साथ अग्नि में घी, फल-फूल आदि डालना
डंडारस	-	हाथों में छोटे- छोटे डंडे लेकर किया जाने वाला एक नृत्य

श्रुतलेख-

उत्साह, कामना, आकार, लोक-कथा, पूर्वज, पर्व उत्सव, त्योहार, राष्ट्रीय, ओणम, प्रसिद्ध, नवरेह नवरोज, संबंधित खपची, समृद्धि, समाप्ति, अत्याचारी

1. पाठ को समझें :-

1. सही उत्तर चुनकर (✓) लगाओ।

(क) दक्षिण भारत में प्रमुख रूप से मनाया जाने वाला त्योहार है

(1) होली (3) ओणम

(2) बैसाखी (4) नवरोज़

(ख) छज्जे पर नीचे कौन से पक्षी का चित्र बना होता है ?

(1) तोता (3) कबूतर

(2) चिड़िया (4) मोर

(ग) गले में सूखे मेवों का हार किसे पहनाया जाता है?

(1) लड़कियों को (3) छोटे बच्चों को

(3) बुर्जुर्गों को (4) बड़ों को

2. सही शब्द चुनकर वाक्य पूरे करें :

उत्साह, पर्व, सर्दियों, छज्जे, प्रथा, समृद्धि

(क) लोहड़ी का..उत्तर भारत में मनाया जाता है।

(ख) भारत में अनेक त्योहार बड़े.....................................से मनाए जाते हैं।

(ग) अग्नि जलाकर सबकी ....की कामना करते हैं।

(घ) जम्मू क्षेत्र में...बनाने की प्रथा हैं।

(ङ) लोहड़ी का त्योहार......................................की समाप्ति का सूचक है।

3. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए-

मौखिक

(क) आपका प्रिय त्योहार कौन सा है? उसके बारे में बताएँ ।

(ख) हमें हर त्योहार को किस प्रकार मनाना चाहिए ?

4. लिखित-

(क) लोहड़ी का उत्सव कहाँ-कहाँ मनाया जाता है ?

(ख) भारत में मनाए जाने वाले किन्हीं तीन त्योहारों के नाम लिखिए।

(ग) लोहड़ी के अवसर पर युवक कौन-से नृत्य करते हैं?

(घ) लोहड़ी का त्योहार कब मनाया जाता है ?

(ङ) लोहड़ी का त्योहार क्या संदेश देता है?

(च) लोहड़ी को तिलोड़ी क्यों कहा जाता है?

(छ) दुल्ला भट्टी का गीत लोगों को क्या याद दिलाता है?

5. भाषा को समझें :-

1. 'ईय' प्रत्यय से शब्द रचना करें:

(क) राष्ट्र + ईय = राष्ट्रीय

(ख) कोण + ईय = __________

(ग) दिवस + ईय = __________

(घ) स्थान + ईय = __________

(ङ) क्षेत्र + ईय = __________

(च) मानव + ईय = __________

(छ) भारत + ईय = __________

(ज) जाति + ईय = __________

2. विलोम शब्द लिखें

(क) आरंभ = __________

(ख) प्रथम = __________

(ग) लेना = __________

(घ) जलाना = __________

(ड) जन्म __________

(च) सुख __________

3. निम्नलिखित शब्दों में से उपसर्ग व मूल शब्द अलग करें।

(क) उपहार – __________ + __________

(ख) विशेष – __________ + __________

(ग) सफल – __________ + __________

(घ) अनजान – __________ + __________

4. निम्नलिखित शब्दों का उनके समानार्थी से मिलान कीजिए–

(क) कल्याण	गगन, आसमान
(ख) पर्व	दिवा, वार
(ग) आज़ादी	स्वतंत्रता, स्वाधीनता
(घ) दिवस	मंगल, भलाई
(ङ) आकाश	उत्सव, त्योहार

6. रचनात्मक

अपने क्षेत्र के किसी अन्य त्योहार पर दस वाक्य लिखें –

1. ....

2. ....

3. ....

4. ....

5. ....

6. ....

7. ....

8. ....

9. ....

10. ....

प्र. 7 अपने क्षेत्र के धार्मिक-सांस्कृतिक पर्व पर पाँच वाक्य लिखें :-

प्र. 8 श्रुतलेख

दीर्घायु	युद्ध	ऐतिहासिक	सांस्कृतिक	उल्लास
श्रद्धा	पंचांग	अतिरिक्त	किन्नौर	प्राचीन
शुभकामनाएँ	छकस			

प्रश्न 9. विलोम शब्द लिखें।

(क) वीर (ख) जवान

(ग) उल्लास (घ) युद्ध

(ङ.) पूर्व (च) शुभ

17 लोसरः लद्दाख का नववर्ष–उत्सव

उत्सव	ऐतिहासिक	मातृभूमि	संभावना	पंचांग
आयोजन	द्गुथुक	छिङगी जमा	नमगङ	श्रद्धा
छङलू	वगडोन	मेतो	टाशी–खटक	
अनिवार्य	दीर्घायु	सांस्कृतिक	छकस	

जम्मू कश्मीर में हिंदू, मुसलमान, सिख, ईसाई, बौद्ध, जैन आदि धर्मों के मानने वाले लोग रहते हैं। लोग मिलजुल कर अपने उत्सव उल्लास के साथ मनाते हैं। इन में नए वर्ष का उत्सव भी एक है। नव–वर्ष का उत्सव विभिन्न लोग विभिन्न ढंग से मनाते हैं। जम्मू में "बैसाखी" तथा कश्मीर में "नवरेह" और "नवरोज़" नववर्ष के ही उत्सव हैं। इसी प्रकार "लोसर" लद्दाख का नववर्ष–उत्सव है। पहले लद्दाख में "लोसर" का उत्सव तिब्बती "लोसर" की तरह वर्ष के आरंभ में मनाया जाता था। फिर एक ऐसी ऐतिहासिक घटना हुई जिसके बाद यह उत्सव नया वर्ष शुरू होने से एक मास पूर्व ही मनाया जाने लगा।

एक उल्लेख के अनुसार जब लद्दाख में सेंगे नमग्यल नामक महाराजा राज करते थे, तो लद्दाख का तिब्बत के साथ युद्ध छिड़ गया। लोसर केवल एक माह दूर था और युद्ध एक बार छिड़ने पर एक ही मास में समाप्त होने की कोई संभावना नहीं

थी। अतः सैनिक एक मास पूर्व ही "लोसर" मना कर लड़ाई पर चले गए। तब से लद्दाख का "लोसर" तिब्बती लोसर से एक मास पूर्व ही मनाया जाने लगा।

लद्दाख में तिब्बती पंचांग चलता है। इस पंचांग के अनुसर नव–वर्ष फरवरी–मार्च में आरंभ होता है। तिब्बत में लोसर इन्हीं महीनों में मनाया जाता है। परंतु लद्दाख में यह उत्सव प्रायः दिसंबर–जनवरी में मनाया जाता है।

लोसर पर्व कई दिन चलता है। इसका प्रारंभ पूजा–पाठ से होता है। आरंभिक दिनों में तिब्बती विद्वान, कवि और लेखक "सुमति कीर्ति" की स्मृति में "उपलोसर" (अर्थात छोटा लोसर) मनाया जाता है। उस दिन घर–घर में दीप जलाए जाते हैं और पूजा–पाठ का आयोजन किया जाता है। "उपलोसर" लद्दाख के अतिरिक्त लाहुल–स्पिति, किन्नौर, सिक्किम, भूटान आदि स्थानों में भी मनाया जाता है। "उपलोसर" धार्मिक पर्व है और "लोसर" धार्मिक होने के अतिरिक्त ऐतिहासिक व सांस्कृतिक पर्व भी है। इन दोनों पर्वों में लद्दाख की कुछ प्राचीन परंपराएँ आज तक जीवित हैं।

लोसर के पाँचवें दिन शाम को लद्दाखी लोग "द्गुथुक" पीते हैं। द्गुथुक एक पेय होता है। द्गुथुक में आटे की गोलियाँ डालते हैं जिनमें कुछ खास चीजें जैसे कोयला, नमक, मिर्च, रूई, कागज, अंगूठी, सूर्य, चंद्रमा की छोटी मूर्तियाँ आदि। यह माना जाता है कि द्गुथुक बंटते समय जिस व्यक्ति के हिस्से जो वस्तु आती है, उसके अनुसार उस व्यक्ति का स्वभाव होता है।

लोसर का छठा दिन "नमगङ" के नाम से जाना जाता है। "नमगङ" बड़ा शुभ

दिन होता है। इस दिन पुनः घर—घर में दीप जलाए जाते हैं। गोनपाओं में भगवान बुद्ध की प्रतिमा के सामने और पशुओं, चक्की आदि के सामने भी दीप जलाए जाते हैं। भक्ति—गीतों का गायन किया जाता है। एक ऐसे ही गीत की पहली पंक्ति है :—

"लामा ला बुलो, संग्यस ला बुलो, छोस ला बुलो, गेदुन ला बुलो"।

अर्थात "हम अपने गुरु, धर्म तथा संघ को ज्योति और श्रद्धा का उपहार अर्पित करते हैं"। उस दिन प्रायः मेतो (अग्निपुंज) घरों से "बाहर निकाले जाते है"। मेतो "बाहर निकालने" का अर्थ है, साल भर के पापों को घर से बाहर निकालकर जला देना।

सातवें दिन लोग अपने संबंधियों से मिलने जाते हैं और एक दूसरे को शुभकामनाएँ देते हैं। जाते समय हाथ में एक छिङ्गी जमा (मदिरा—पात्र), एक टाशी खटक (मंगल कपड़ा) और पाँच या सात खमीरी रोटियाँ होती हैं। इस रस्म को "छकस" (प्रणाम) करना कहते हैं। नव—विवाहितों के लिए "छकस करना" अनिवार्य होता है। घर के सदस्यों के साथ—साथ चूल्हे को भी "छकस" करते हैं।

अगले दिन "वगडोन" (भोज) होता है। भोज में ऊँच—नीच का भेद—भाव

भुलाकर सब को बुलाया जाता है, विशेषकर नवजात शिशुओं तथा नव–विवाहित जोड़ों को। वगडोन के अवसर पर स्त्रियों और पुरुषों के बीच "छङ्लु" (मदिरापान) की प्रतियोगिता होती है। लोसर के स्वागत में लोग भक्ति–गीत गाते हैं। एक गीत में भक्त प्रार्थना करता है :–

मंगल हो, प्रातःकाल मंगलमय हो। नीलगगन मंगलमय हो।

उस घर का भी मंगल हो जिसमें माता–पिता सकुशल निवास करते हों ....

लोग भक्तिरस के साथ–साथ वीर–रस के गीत भी गाते हैं। इन गीतों के माध्यम से वे वीर सैनिकों को बधाई–संदेश भेजते हैं। एक ऐसे ही गीत में कहा गया है :–

"हमारे वीर जवानो, नए वर्ष के शुभ अवसर पर हम तुम्हें हार्दिक बधाई भेजते हैं। हम प्रार्थना करते हैं कि हमें जब–जब मनुष्य–जन्म मिले, हम तुम जैसे सैनिक बनें ताकि मातृभूमि की रक्षा कर सकें।" इस अवसर पर युवा लोग श्रृंगार के गीत भी गाते हैं।

नृत्य–संगीत और मदिरापान की सभा के समाप्त होने पर लोग एक–दूसरे के लिए दीर्घायु होने की कामना करते हैं। एक दूसरे को बधाई देते हैं और अपने–अपने घर चले जाते हैं।

अभ्यास

1. उत्तर लिखें :–

क) जम्मू–कश्मीर में किस–किस धर्म को मानने वाले लोग रहते हैं ?

....

ख) लदाख में मनाए जाने वाले नववर्ष के उत्सव का नाम क्या है ?

....

ग) लदाख में लोसर नववर्ष से एक मास पूर्व क्यों मनाया जाता है ?

....

घ) "उपलोसर" कब और किस की स्मृति में मनाया जाता है ?

....

च) "द्गुथुक" क्या है? इसमें क्या डाला जाता है ?

....

छ) "छकस" किसे कहते हैं ?

....

ज) "वगडोन" किस तरह मनाया जाता है ?

....

झ) लदाखी लोग सैनिक वीरों को बधाई–संदेश में क्या कहते हैं ?

....

ट) लोसर के छठे दिन को किस नाम से जाना जाता है ? यह दिन कैसे मनाया जाता है ?

....

ठ) उपलोसर का पर्व लदाख के अतिरिक्त किन–किन स्थानों में मनाया जाता है ?

....

उद्देश्य :– पाठ–बोध ।

2. दिए हुए शब्दों से रिक्त स्थानों की पूर्ति करें :—:

दग्‌गुथुक, सेंगे नमग्यल, तिब्बती, नवरेह, छकस, वीर रस, सुमति—कीर्ति, पूजा—पाठ, नवरोज।

1. कश्मीर में .... और .... नववर्ष के उत्सव हैं।
2. लद्दाख में .... नामक महाराजा राज करता था।
3. लद्दाख में .... पंचांग चलता है।
4. उपलोसर .... की स्मृति में मनाया जाता है।
5. लोसर पर्व का प्रारंभ .... से होता है।
6. लोसर के पाँचवे दिन लोग .... पीते हैं।
7. नव—विवाहितों के लिए .... करना अनिवार्य माना जाता है।
8. लद्दाखी लोग भक्तिरस के साथ—साथ .... के गीत भी गाते हैं।

उद्देश्य:— उपयुक्त शब्दों से वाक्य—पूर्ति।

3. लिखें :—

क) लोसर एक धार्मिक — सांस्कृतिक पर्व है।

....

....

....

....

....

उद्देश्य — लेखन कौशल का अभ्यास।

ख) अर्थ लिखें :—

"लामा ला बुलो, सुंग्यस ला बुलो, छोस ला बुलो, गेदुन ला बुलो"।

....

....

उद्देश्यः—पाठ का प्रत्यास्मरण।

5. सत्य कथन के आगे ✓ और गलत कथन के आगे ✗ का चिह्न लगाएँ :—

क) "नवरेह" कश्मीर का नववर्ष—उत्सव है। ( )

ख) लद्दाख का "लोसर" पर्व तिब्बती लोसर के एक मास बाद मनाया जाता है। ( )

ग) 'उपलोसर' के आरंभिक दिनों में "लोसर" का आयोजन किया जाता है। ( )

घ) "उपलोसर" एक धार्मिक—पर्व है। ( )

च) लोसर के पहले दिन शाम को लद्दाखी लोग "द्गुथुक" पीते हैं। ( )

छ) लोसर का छठा दिन "नमगङ" के नाम से जाना जाता है। ( )

ज) "लोसर" के स्वागत में लोग भक्ति—गीत गाते हैं। ( )

उद्देश्यः— सही और गलत कथन का ज्ञान।

6. पाठ में आए लद्दाखी (भौटी) भाषा के कोई पाँच शब्द नीचे लिखकर उनके अर्थ भी लिखिए :—

शब्द	अर्थ
....	....
....	....
....	....
....	....
....	....

उद्देश्य :— कुछ लद्दाखी (भोटी) शब्दों तथा उनके अर्थों से परिचित कराना।